विदेह VIDEHA

विदेह-सदेह १–३७ विस्तृत अध्ययन

Videha Sadeha 1–37 Detailed Study

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ६ / २२ · Volume 6 of 22

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. विदेह-सदेह ३ — विस्तृत अध्ययन	६९० प्रश्न
२. विदेह-सदेह ४ — विस्तृत अध्ययन	५६० प्रश्न
३. विदेह-सदेह ५ — विस्तृत अध्ययन	७२५ प्रश्न
४. विदेह-सदेह ६ — विस्तृत अध्ययन	५२५ प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : विदेह-सदेह ३ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 1482 : विदेह-सदेह ३ — विवेकानन्द झा: कविता, सुजाता आ चान-चारी

१. विवेकानन्द झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कविता आ की सुजाता; चान आ चारी
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. "कविता आ की सुजाता; चान आ चारी"क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) पद्य
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. "कविता आ की सुजाता; चान आ चारी"क उप-विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) कविता
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. विवेकानन्द झाक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर

५. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार विवेकानन्द झाक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

(A) कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर
(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. विवेकानन्द झाक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) कविता
(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. "कविता आ की सुजाता; चान आ चारी"कैं पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता
(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. विवेकानन्द झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।
(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।
(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।
(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।

९. “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 1482क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विवेकानन्द झाक “कविता आ की सुजाता; चान आ चारी” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1483 : विदेह-सदेह ३ — मणिकान्त मिश्र “मनिष”: मिथिला वन्दना आ क्षेत्रीय पहचान

११. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मिथिला वन्दना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. “मिथिला वन्दना”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. “मिथिला वन्दना”क उप-विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वन्दना परम्परा

१५. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

(A) वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. “मिथिला वन्दना”कैं पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लेखक मणिकान्त मिश्र 'मनिष', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।

१९. “मिथिला वन्दना”क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 1483क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क “मिथिला वन्दना” प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकैं जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1484 : विदेह-सदेह ३ — आशीष अनचिन्हार: गजल, गद्य-कविता आ आखर आन्दोलन

२१. आशीष अनचिन्हारक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल; किछु गद्य कविता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. “गजल; किछु गद्य कविता”क मुख्य विधा कोन रूपमे अंकित अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. “गजल; किछु गद्य कविता”क उप-विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल/गद्य कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. आशीष अनचिन्हारक एहि प्रविष्टिमे कोन समालोचनात्मक संकेत प्रमुख अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सहायक सम्पादक, विदेह

२५. विदेह-सदेह ३क एहि प्रविष्टि अनुसार आशीष अनचिन्हारक पाठक भावभूमि कोन दिस खुलैत अछि?

(A) सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाख्तिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. आशीष अनचिन्हारक रचना विदेह-सदेह ३मे कोन साहित्यिक क्षेत्रसँ जोड़ल गेल?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजल/गद्य कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. "गजल; किछु गद्य कविता"कैं पढ़बाक समय पाठक कोन आधार-सूचना पहिने देखैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गद्य कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. आशीष अनचिन्हारक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे साहित्यिक सूचीकरणक कोन गुण देखबैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।

२९. "गजल; किछु गद्य कविता"क संदर्भमे समालोचनात्मक टिप्पणी किएक महत्त्वपूर्ण अछि?

(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 1484क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष अनचिन्हारक "गजल; किछु गद्य कविता" प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकैं जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1485 : विदेह-सदेह ३ — वौएलाल साह: मधेशक आवाज

३१. वौएलाल साहक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मधेशक आवाज

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. "मधेशक आवाज"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. “मधेशक आवाज”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. वौएलाल साहक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मधेश राजनीतिक आवाज

३५. वौएलाल साहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. “मधेशक आवाज”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक वौएलाल साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. वौएलाल साहक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. “मधेशक आवाज”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. वौएलाल साहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 1485क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वौएलाल साहक “मधेशक आवाज” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1486 : विदेह-सदेह ३ — सन्तोष कुमार मिश्र: हमर मीत

४१. सन्तोष कुमार मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर मीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. “हमर मीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. “हमर मीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. सन्तोष कुमार मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मित्र-भाव

४५. सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मित्र-भाव; मधुर रस

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. “हमर मीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. सन्तोष कुमार मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. “हमर मीत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. सन्तोष कुमार मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 1486क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सन्तोष कुमार मिश्रक “हमर मीत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मित्र-भाव; मधुर रस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1487 : विदेह-सदेह ३ — हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ: समीकरण

५१. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) समीकरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. “समीकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. “समीकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान

५५. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ध्रू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. “समीकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. "समीकरण"कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड 1487क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक "समीकरण" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ध्रू" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1488 : विदेह-सदेह ३ — अशोक चौधरी: (शीर्षकहीन)

६१. अशोक चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (शीर्षकहीन)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. "(शीर्षकहीन)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. "(शीर्षकहीन)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. अशोक चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शीर्षक-अभाव

६५. अशोक चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. "(शीर्षकहीन)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अशोक चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. अशोक चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. "(शीर्षकहीन)"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. अशोक चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड 1488क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अशोक चौधरीक "(शीर्षकहीन)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1489 : विदेह-सदेह ३ — उपेन्द्र भगत नागवंशी: बुढ़वा

७१. उपेन्द्र भगत नागवंशीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बुढ़वा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. "बुढ़वा"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. “बुढ़वा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. उपेन्द्र भगत नागवंशीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित स्वर

७५. उपेन्द्र भगत नागवंशीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. “बुढ़वा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उपेन्द्र भगत नागवंशी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. उपेन्द्र भगत नागवंशीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. “बुढ़वा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. उपेन्द्र भगत नागवंशीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड 1489क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उपेन्द्र भगत नागवंशीक “बुढ़वा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1490 : विदेह-सदेह ३ — डॉ. सुरेश लाभ: इतिहास

८१. डॉ. सुरेश लाभक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) इतिहास; इन्कलाब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. "इतिहास; इन्कलाब"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. "इतिहास; इन्कलाब"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. डॉ. सुरेश लाभक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ऐतिहासिक आ राजनीतिक

८५. डॉ. सुरेश लाभक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. "इतिहास; इन्कलाब"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. सुरेश लाभ, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. डॉ. सुरेश लाभक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. "इतिहास; इन्कलाब"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. डॉ. सुरेश लाभक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड 1490क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. सुरेश लाभक “इतिहास; इन्कलाब” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1491 : विदेह-सदेह ३ — सरस्वती चौधरी 'रचना': सम्बन्धक कोनो सू

९१. सरस्वती चौधरी 'रचना'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सम्बन्धक कोनो सू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. “सम्बन्धक कोनो सू”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. “सम्बन्धक कोनो सू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. सरस्वती चौधरी 'रचना'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी दृष्टि

९५. सरस्वती चौधरी 'रचना'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. “सम्बन्धक कोनो सू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरस्वती चौधरी 'रचना', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. सरस्वती चौधरी 'रचना'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. “सम्बन्धक कोनो सू”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९९. सरस्वती चौधरी 'रचना'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड 1491क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सरस्वती चौधरी 'रचना'क “सम्बन्धक कोनो सू” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1492 : विदेह-सदेह ३ — डॉ. अजित मिश्र: मिथिला-धाम

१०१. डॉ. अजित मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मिथिला-धाम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. “मिथिला-धाम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. “मिथिला-धाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. डॉ. अजित मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) तीर्थ-परम्परा

१०५. डॉ. अजित मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. "मिथिला-धाम"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. डॉ. अजित मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. "मिथिला-धाम"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. डॉ. अजित मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड 1492क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. अजित मिश्रक "मिथिला-धाम" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1493 : विदेह-सदेह ३ — सुनीलकुमार मल्लिक: घड़ी

१११. सुनीलकुमार मल्लिकक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) घड़ी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. "घड़ी"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. “घड़ी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. सुनीलकुमार मल्लिकक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) समय-कविता

११५. सुनीलकुमार मल्लिकक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. “घड़ी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुनीलकुमार मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. सुनीलकुमार मल्लिकक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. “घड़ी”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. सुनीलकुमार मल्लिकक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड 1493क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुनीलकुमार मल्लिकक “घड़ी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1494 : विदेह-सदेह ३ — राजकमल चौधरी: बही-खाता

१२१. राजकमल चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. राजकमल चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) (१९२९-१९६७)

१२५. राजकमल चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) (१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजकमल चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. राजकमल चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. राजकमल चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड 1494क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजकमल चौधरीक “बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1495 : विदेह-सदेह ३ — जीवकान्त: वनदेवी

१३१. जीवकान्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) वनदेवी; जन-जन याचक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. “वनदेवी; जन-जन याचक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. “वनदेवी; जन-जन याचक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. जीवकान्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म २५.०७.१९३६

१३५. जीवकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. “वनदेवी; जन-जन याचक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जीवकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. जीवकान्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. "वनदेवी; जन-जन याचक"कैँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. जीवकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड 1495क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जीवकान्तक "वनदेवी; जन-जन याचक" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1496 : विदेह-सदेह ३ — रूपा धीरू: सर्व-पीड़ा

१४१. रूपा धीरूक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सर्व-पीड़ा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. "सर्व-पीड़ा"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. "सर्व-पीड़ा"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. रूपा धीरूक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी सामूहिक पीड़ा

१४५. रूपा धीरूक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी सामूहिक पीड़ा; करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. "सर्व-पीड़ा"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. रूपा धीरूक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. "सर्व-पीड़ा"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. रूपा धीरूक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड 1496क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रूपा धीरूक "सर्व-पीड़ा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी सामूहिक पीड़ा; करुण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1497 : विदेह-सदेह ३ — अग्रावरन देवेन्द्र: पानि अछि, मा आँखिक नोर

१५१. अग्रावरन देवेन्द्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पानि अछि, मा आँखिक नोर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. "पानि अछि, मा आँखिक नोर"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. अग्रावरन देवेन्द्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अश्रु-कविता

१५५. अग्रावरन देवेन्द्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अश्रु-कविता; करुण; minimalism

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. अग्रावरन देवेन्द्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. “पानि अछि, मा आँखिक नोर”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. अग्रावरन देवेन्द्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड 1497क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अग्रावरन देवेन्द्रक “पानि अछि, मा आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1498 : विदेह-सदेह ३ — अमरेश यादव: आह्वान

१६१. अमरेश यादवक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आह्वान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. "आह्वान"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. "आह्वान"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. अमरेश यादवक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ओ.बी.सी. पहचान

१६५. अमरेश यादवक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. "आह्वान"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. अमरेश यादवक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. "आह्वान"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. अमरेश यादवक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड 1498क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमरेश यादवक “आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1499 : विदेह-सदेह ३ — श्यामल सुमन: मैथिली दोहा

१७१. श्यामल सुमनक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मैथिली दोहा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. “मैथिली दोहा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. “मैथिली दोहा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) दोहा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. श्यामल सुमनक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दोहा परम्परा

१७५. श्यामल सुमनक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. “मैथिली दोहा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा दोहा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. श्यामल सुमनक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. "मैथिली दोहा"कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ दोहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. श्यामल सुमनक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड 1499क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) श्यामल सुमनक "मैथिली दोहा" प्रविष्टि पद्य, दोहा आ "दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1500 : विदेह-सदेह ३ — हिमांशु चौधरी: बाल गीत

१८१. हिमांशु चौधरीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. "बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. "बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाल गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. हिमांशु चौधरीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बाल साहित्य

१८५. हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. "बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. हिमांशु चौधरीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. "बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. हिमांशु चौधरीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड 1500क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) हिमांशु चौधरीक "बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ" प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ "बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1501 : विदेह-सदेह ३ — दयाकान्त: पाँच लाख बौआक दाम

१९१. दयाकान्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पाँच लाख बौआक दाम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. "पाँच लाख बौआक दाम"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. “पाँच लाख बौआक दाम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. दयाकान्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दहेज-विरोधी व्यंग्य

१९५. दयाकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. “पाँच लाख बौआक दाम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. दयाकान्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. “पाँच लाख बौआक दाम”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. दयाकान्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड 1501क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दयाकान्तक “पाँच लाख बौआक दाम” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1502 : विदेह-सदेह ३ — अजित कुमार झा: ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ

२०१. अजित कुमार झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. "ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. "ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. अजित कुमार झाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) राजनीतिक व्यंग्य

२०५. अजित कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. "ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अजित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. अजित कुमार झाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. "ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. अजित कुमार झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड 1502क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अजित कुमार झाक “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1503 : विदेह-सदेह ३ — सुमित आनन्द: जे हरे देखू ते हरे लाइन!!

२११. सुमित आनन्दक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जे हरे देखू ते हरे लाइन!!

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. सुमित आनन्दक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) queue-culture व्यंग्य

२१५. सुमित आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुमित आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. सुमित आनन्दक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. सुमित आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड 1503क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुमित आनन्दक “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1504 : विदेह-सदेह ३ — विजया अर्याल: आजुक जीवन

२२१. विजया अर्यालक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आजुक जीवन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. “आजुक जीवन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. “आजुक जीवन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. विजया अर्यालक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल

२२५. विजया अर्यालक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. "आजुक जीवन"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विजया अर्याल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. विजया अर्यालक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. "आजुक जीवन"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. विजया अर्यालक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड 1504क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विजया अर्यालक "आजुक जीवन" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1505 : विदेह-सदेह ३ — सरोज खिलाडी: मनक बात मनमे

२३१. सरोज खिलाडीक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मनक बात मनमे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. "मनक बात मनमे"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. “मनक बात मनमे”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. सरोज खिलाडीक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) आगामी अएना

२३५. सरोज खिलाडीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. “मनक बात मनमे”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सरोज खिलाडी, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. सरोज खिलाडीक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. “मनक बात मनमे”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. सरोज खिलाडीक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड 1505क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सरोज खिलाडीक “मनक बात मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1506 : विदेह-सदेह ३ — उमेश मंडल: गिनियारि पिसबाक गीत

२४१. उमेश मंडलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लोकगीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. उमेश मंडलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सहायक सम्पादक, विदेह

२४५. उमेश मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. उमेश मंडलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. उमेश मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड 1506क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मंडलक “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1507 : विदेह-सदेह ३ — रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ': खेली सम्पत जा भुइयाँ थान

२५१. रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) खेली सम्पत जा भुइयाँ थान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बाल साहित्य

२५५. रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 1507क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रूपेश कुमार झा 'थ्रेथ'क “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1508 : विदेह-सदेह ३ — विनीत उत्पल: मनुख आ माल

२६१. विनीत उत्पलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मनुख आ माल; समाजक ई रूप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. “मनुख आ माल; समाजक ई रूप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. विनीत उत्पलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सामाजिक यथार्थ

२६५. विनीत उत्पलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. "मनुख आ माल; समाजक ई रूप"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. विनीत उत्पलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. "मनुख आ माल; समाजक ई रूप"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. विनीत उत्पलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 1508क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीत उत्पलक "मनुख आ माल; समाजक ई रूप" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1509 : विदेह-सदेह ३ — राजदेव मंडल: आह

२७१. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. "आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. राजदेव मंडलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ८ कविता

२७५. राजदेव मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. राजदेव मंडलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. राजदेव मंडलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 1509क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजदेव मंडलक “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1510 : विदेह-सदेह ३ — शेफालिका वर्मा: बाजी

२८१. शेफालिका वर्माक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. शेफालिका वर्माक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर

२८५. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. शेफालिका वर्माक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. शेफालिका वर्माक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 1510क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शेफालिका वर्माक “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1511 : विदेह-सदेह ३ — महाकान्त ठाकुर: की चाहलौं

२९१. महाकान्त ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) की चाहलौं; उदारीकरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. “की चाहलौं; उदारीकरण”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. “की चाहलौं; उदारीकरण”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. महाकान्त ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) उदारीकरण-विरोधी

२९५. महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. “की चाहलौं; उदारीकरण”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. महाकान्त ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. “की चाहलौं; उदारीकरण”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. महाकान्त ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 1511क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) महाकान्त ठाकुरक “की चाहलौं; उदारीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1512 : विदेह-सदेह ३ — स्व. कालीकांत झा 'बुच': विरक्ति

३०१. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) (१९३४-२००९)

३०५. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) (१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक स्व. कालीकांत झा 'बुच', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. स्व. कालीकांत झा 'बुच'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 1512क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) स्व. कालीकांत झा 'बुच'क “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1513 : विदेह-सदेह ३ — मनीष ठाकुर: विरह गीत

३११. मनीष ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विरह गीत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. “विरह गीत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. “विरह गीत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गीत

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. मनीष ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वियोग परम्परा

३१५. मनीष ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. “विरह गीत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. मनीष ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. “विरह गीत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. मनीष ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 1513क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनीष ठाकुरक “विरह गीत” प्रविष्टि पद्य, गीत आ “वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1514 : विदेह-सदेह ३ — चन्द्रकान्त मिश्र: जागु-जागु मैथिल

३२१. चन्द्रकान्त मिश्रक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जागु-जागु मैथिल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. “जागु-जागु मैथिल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. “जागु-जागु मैथिल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. चन्द्रकान्त मिश्रक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जागरण कविता

३२५. चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जागरण कविता; वीर; विदेह framework

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. “जागु-जागु मैथिल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. चन्द्रकान्त मिश्रक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. “जागु-जागु मैथिल”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. चन्द्रकान्त मिश्रक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 1514क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चन्द्रकान्त मिश्रक “जागु-जागु मैथिल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जागरण कविता; वीर; विदेह framework” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1515 : विदेह-सदेह ३ — कुसुम ठाकुर: चुलबुली क्या बनि गेलहुँ

३३१. कुसुम ठाकुरक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. कुसुम ठाकुरक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी आत्म-खोज

३३५. कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. कुसुम ठाकुरक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. कुसुम ठाकुरक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 1515क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुसुम ठाकुरक “चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1516 : विदेह-सदेह ३ — शिव कुमार झा 'टिल्लू': चन्द्माक बोखार

३४१. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. “चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. “चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बहुरंगी

३४५. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. "चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. "चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 1516क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क "चन्द्राक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1517 : विदेह-सदेह ३ — धर्म विकल: बाबाक अवसान

३५१. धर्म विकलक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. धर्म विकलक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ रौद्र

३५५. धर्म विकलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र; अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक धर्म विकल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. धर्म विकलक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. धर्म विकलक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 1517क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) धर्म विकलक “बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “करुण आ रौद्र; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1518 : विदेह-सदेह ३ — रघुनाथ मुखिया: अनुश्रित

३६१. रघुनाथ मुखियाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. रघुनाथ मुखियाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्य-स्वभाव-विमर्शी

३६५. रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. रघुनाथ मुखियाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. रघुनाथ मुखियाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 1518क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रघुनाथ मुखियाक “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1519 : विदेह-सदेह ३ — लक्ष्मण झा 'सागर': चुन्नीधारी

३७१. लक्ष्मण झा 'सागर'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चुन्नीधारी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. “चुन्नीधारी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. “चुन्नीधारी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. लक्ष्मण झा 'सागर'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सबाल्टर्न street vendor

३७५. लक्ष्मण झा 'सागर'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. “चुन्नीधारी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक लक्ष्मण झा 'सागर', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. लक्ष्मण झा 'सागर'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. “चुन्नीधारी”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. लक्ष्मण झा 'सागर'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 1519क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लक्ष्मण झा 'सागर'क “चुन्नीधारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1520 : विदेह-सदेह ३ — विभूति आनन्द: एक-दू...नओटा कविता

३८१. विभूति आनन्दक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. विभूति आनन्दक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी

३८५. विभूति आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. "एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विभूति आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. विभूति आनन्दक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. "एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)"केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. विभूति आनन्दक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 1520क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विभूति आनन्दक "एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1521 : विदेह-सदेह ३ — रमण कुमार सिंह: गुमशुदगी रिपोर्ट

३९१. रमण कुमार सिंहक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गुमशुदगी रिपोर्ट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. रमण कुमार सिंहक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) missing-person metaphor

३९५. रमण कुमार सिंहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. “गुमशुदगी रिपोर्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. रमण कुमार सिंहक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. “गुमशुदगी रिपोर्ट”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. रमण कुमार सिंहक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 1521क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रमण कुमार सिंहक “गुमशुदगी रिपोर्ट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1522 : विदेह-सदेह ३ — मायानाथ झा: मातृगिरा

४०१. मायानाथ झाक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मातृगिरा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. “मातृगिरा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. “मातृगिरा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०४. मायानाथ झाक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मातृभाषा कविता

४०५. मायानाथ झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०६. “मातृगिरा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मायानाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. मायानाथ झाक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. “मातृगिरा”कैं विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०९. मायानाथ झाक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१०. खण्ड 1522क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मायानाथ झाक “मातृगिरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1523 : विदेह-सदेह ३ — सच्चिदानन्द 'सौरभ': देखू नै...

४११. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१४. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) trilogy

४१५. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१६. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सच्चिदानन्द 'सौरभ', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत”केँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१९. सच्चिदानन्द 'सौरभ'क प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२०. खण्ड 1523क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सच्चिदानन्द 'सौरभ'क “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1524 : विदेह-सदेह ३ — अशोक दत्त: बाल गीत (३)

४२१. अशोक दत्तक विदेह-सदेह ३मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाल गीत (३); ओदि उपाड़

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. “बाल गीत (३); ओदि उपाड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाल गीत/व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२४. अशोक दत्तक एहि पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बाल साहित्य आ व्यंग्य

४२५. अशोक दत्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२६. "बाल गीत (३); ओदि उपाड़"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत/व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. अशोक दत्तक रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. "बाल गीत (३); ओदि उपाड़"कैँ विदेह-सदेह ३क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाल गीत/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२९. अशोक दत्तक प्रविष्टि विदेह-सदेह ३क पद्य-सूचीमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३०. खण्ड 1524क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अशोक दत्तक "बाल गीत (३); ओदि उपाड़" प्रविष्टि पद्य, बाल गीत/व्यंग्य आ "बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1525 : विदेह-सदेह 3 — शीतल झा: टी..ऽऽ..स

४३१. शीतल झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) टी..ऽऽ..स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. “टी..ऽऽ..स”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. “टी..ऽऽ..स”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल-प्रेरित

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३४. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल

४३५. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३६. “टी..ऽऽ..स”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल-प्रेरित

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. “टी..ऽऽ..स”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजल-प्रेरितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३९. शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४०. खण्ड 1525क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि पद्य, गजल-प्रेरित आ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1526 : विदेह-सदेह 3 — शम्भु नाथ झा 'वत्स': मिथिलाक दशा

४४१. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. “मिथिलाक दशा”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. “मिथिलाक दशा”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४४. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्याचार्य, वेदविद्

४४५. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४६. “मिथिलाक दशा”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भु नाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. “मिथिलाक दशा”कैं विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४९. शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५०. खण्ड 1526क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1527 : विदेह-सदेह 3 — डॉ. योगानन्द झा: घर

४५१. डॉ. योगानन्द झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) घर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. “घर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. “घर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५४. डॉ. योगानन्द झाक “घर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा

४५५. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५६. “घर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. डॉ. योगानन्द झाक “घर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. “घर”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५९. डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६०. खण्ड 1527क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1528 : विदेह-सदेह 3 — वीरेन्द्र मल्लिक: गतिशीलता

४६१. वीरेन्द्र मल्लिकक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गतिशीलता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. “गतिशीलता”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. “गतिशीलता”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६४. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सूक्ष्मतावादी

४६५. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६६. “गतिशीलता”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक वीरेन्द्र मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. “गतिशीलता”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६९. वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७०. खण्ड 1528क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1529 : विदेह-सदेह 3 — गंगेश गुंजन: राधा-१६म खेप

४७१. गंगेश गुंजनक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) राधा-१६म खेप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. “राधा-१६म खेप”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. “राधा-१६म खेप”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७४. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वरिष्ठ कवि

४७५. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; श्रृंगार-वियोग

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७६. “राधा-१६म खेप”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. “राधा-१६म खेप”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७९. गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८०. खण्ड 1529क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गंगेश गुंजनक “राधा-१६म खेप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; श्रृंगार-वियोग” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1530 : विदेह-सदेह 3 — कीर्तिनारायण मिश्र: अकाल

४८१. कीर्तिनारायण मिश्रक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अकाल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. “अकाल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. “अकाल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८४. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अकाल व्यंग्य

४८५. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८६. “अकाल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कीर्तिनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. “अकाल”कैँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८९. कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९०. खण्ड 1530क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कीर्तिनारायण मिश्रक “अकाल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1531 : विदेह-सदेह 3 — स्व. शान्त: करू की वृद्ध अथबल छी

४९१. स्व. शान्तक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) करू की वृद्ध अथबल छी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. “करू की वृद्ध अथबल छी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. “करू की वृद्ध अथबल छी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९४. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पूर्णियाँक कवि

४९५. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९६. “करू की वृद्ध अथबल छी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक स्व. शान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. “करू की वृद्ध अथबल छी”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९९. स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५००. खण्ड 1531क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) स्व. शान्तक “करू की वृद्ध अथबल छी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1532 : विदेह-सदेह 3 — कालिनाथ ठाकुर: सून मिथिला चल

५०१. कालिनाथ ठाकुरक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सून मिथिला चल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. “सून मिथिला चल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. “सून मिथिला चल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०४. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी

५०५. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०६. “सून मिथिला चल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कालिनाथ ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. “सून मिथिला चल”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०९. कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१०. खण्ड 1532क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1533 : विदेह-सदेह 3 — अरविन्द ठाकुर 'अरबिन': गजल १-४

५११. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गजल १-४

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. “गजल १-४”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. “गजल १-४”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) गजल

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१४. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ४ गजल

५१५. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१६. “गजल १-४”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अरविन्द ठाकुर 'अरबिन', विधा पद्य, उप-विधा गजल

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. “गजल १-४”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१९. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२०. खण्ड 1533क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1534 : विदेह-सदेह 3 — कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा): निहि बिसरैछ

५२१. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. “निहि बिसरैछ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. “निहि बिसरैछ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२४. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा

५२५. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२६. “निहि बिसरैछ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा), विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. “निहि बिसरैछ”कैं विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२९. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३०. खण्ड 1534क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1535 : विदेह-सदेह 3 — श्री विज्ञानन्द झा: कोशीक ताण्डव

५३१. श्री विज्ञानन्द झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कोशीक ताण्डव; दहेज दानव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. “कोशीक ताण्डव”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. “कोशीक ताण्डव”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३४. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी

५३५. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३६. “कोशीक ताण्डव”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक श्री विज्ञानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. “कोशीक ताण्डव”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३९. श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४०. खण्ड 1535क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) श्री विज्ञानन्द झाक “कोशीक ताण्डव” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1536 : विदेह-सदेह 3 — मो. गुल हसन: सभटा चौपट भऽ गेल

५४१. मो. गुल हसनक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सभटा चौपट भऽ गेल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. “सभटा चौपट भऽ गेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. “सभटा चौपट भऽ गेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४४. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मुसलिम मैथिली आवाज

५४५. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्घू; विदेह की बहुलतावादी नीति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४६. “सभटा चौपट भऽ गेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. “सभटा चौपट भऽ गेल”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४९. मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५०. खण्ड 1536क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मो. गुल हसनक “सभटा चौपट भऽ गेल” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्घू; विदेह की बहुलतावादी नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1537 : विदेह-सदेह 3 — मनोज कुमार मंडल: बहीन

५५१. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बहीन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. “बहीन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. “बहीन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५४. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भाई-बहिन

५५५. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५६. “बहीन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. “बहीन”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५९. मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६०. खण्ड 1537क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मंडलक “बहीन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1538 : विदेह-सदेह 3 — आमोद कुमार झा: मैथल नइँ — छोटका

५६१. आमोद कुमार झाक विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मैथल नइँ — छोटका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. “मैथल नइँ — छोटका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. “मैथल नइँ — छोटका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६४. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पहचान-राजनीति

५६५. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६६. “मैथल नइँ — छोटका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आमोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. “मैथल नइँ — छोटका”कैं विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६९. आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७०. खण्ड 1538क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1539 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक): आकाश मध्य लिखल हमर लेख

५७१. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क विदेह-सदेह 3मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आकाश मध्य लिखल हमर लेख

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कविता

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७४. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सम्पादक-कवि

५७५. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७६. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), विधा पद्य, उप-विधा कविता

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. “आकाश मध्य लिखल हमर लेख”केँ विदेह-सदेह 3क पद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७९. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 3क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८०. खण्ड 1539क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5057 : विदेह-सदेह 3 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)

५८१. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५८२. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५८३. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’केँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५८४. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५८५. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५८६. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५८७. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५८८. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५८९. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) शोध-लेखक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५९०. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास-बोध (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5058 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ३)

५९१. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५९२. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५९३. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) तेसर किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५९४. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५९५. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५९६. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) तेसर किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५९७. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५९८. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५९९. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) उपन्यासक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६००. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5059 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ३)

६०१. ‘महाभारत (अंक ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६०२. ‘महाभारत (अंक ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६०३. ‘महाभारत (अंक ३)’केँ महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) तेसर किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६०४. ‘महाभारत (अंक ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६०५. ‘महाभारत (अंक ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६०६. ‘महाभारत (अंक ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) तेसर किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६०७. ‘महाभारत (अंक ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६०८. ‘महाभारत (अंक ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६०९. ‘महाभारत (अंक ३)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) महाकाव्यक रूप तेसर किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६१०. ‘महाभारत (अंक ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं तेसर किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5060 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — भारत रत्न

६११. ‘भारत रत्न’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) अंक ३ केर कथा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६१२. ‘भारत रत्न’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) अंक ३ केर कथा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६१३. ‘भारत रत्न’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) अंक ३ केर कथा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६१४. ‘भारत रत्न’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक अंक ३ केर कथा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६१५. ‘भारत रत्न’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) अंक ३ केर कथा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६१६. ‘भारत रत्न’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) अंक ३ केर कथा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६१७. ‘भारत रत्न’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) अंक ३ केर कथा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६१८. ‘भारत रत्न’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) अंक ३ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६१९. ‘भारत रत्न’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) कथाक रूप अंक ३ केर कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६२०. ‘भारत रत्न’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ अंक ३ केर कथा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5061 : विदेह-सदेह 3 — -- — (अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)

६२१. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६२२. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६२३. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’कैँ संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६२४. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६२५. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६२६. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६२७. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६२८. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६२९. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६३०. ‘(अंक ३ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5062 : विदेह-सदेह 3 — -- — अरिपन, गौरी पूजा

६३१. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६३२. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६३३. ‘अरिपन, गौरी पूजा’कैं मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६३४. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६३५. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६३६. ‘अरिपन, गौरी पूजा’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६३७. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६३८. ‘अरिपन, गौरी पूजा’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६३९. ‘अरिपन, गौरी पूजा’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६४०. ‘अरिपन, गौरी पूजा’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5063 : विदेह-सदेह 3 — -- — स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)

६४१. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६४२. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६४३. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’केँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६४४. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६४५. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६४६. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६४७. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६४८. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६४९. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६५०. ‘स्वर, शुद्ध-विकृत (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5064 : विदेह-सदेह 3 — -- — महुआ घटवारिन

६५१. ‘महुआ घटवारिन’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) लोककथाक बाल-संस्करण

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६५२. ‘महुआ घटवारिन’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) लोककथाक बाल-संस्करण

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६५३. ‘महुआ घटवारिन’कैँ बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) लोककथाक बाल-संस्करण

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६५४. ‘महुआ घटवारिन’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक लोककथाक बाल-संस्करण दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६५५. ‘महुआ घटवारिन’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) लोककथाक बाल-संस्करण

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६५६. ‘महुआ घटवारिन’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) लोककथाक बाल-संस्करण

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६५७. ‘महुआ घटवारिन’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) लोककथाक बाल-संस्करण

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६५८. ‘महुआ घटवारिन’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) लोककथाक बाल-संस्करणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६५९. ‘महुआ घटवारिन’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) बालानां कृतेक रूप लोककथाक बाल-संस्करण कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६६०. ‘महुआ घटवारिन’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5065 : विदेह-सदेह 3 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग २)

६६१. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६६२. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६६३. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’कैँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६६४. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६६५. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६६६. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६६७. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६६८. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६६९. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६७०. ‘पंजी-प्रबंध (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5066 : विदेह-सदेह 3 — -- — (भाग २)

६७१. ‘(भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६७२. '(भाग २)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६७३. '(भाग २)'कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६७४. '(भाग २)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६७५. '(भाग २)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६७६. '(भाग २)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६७७. '(भाग २)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६७८. '(भाग २)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६७९. '(भाग २)'मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६८०. '(भाग २)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5067 : विदेह-सदेह 3 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ३ केर पद्य भाग)

६८१. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६८२. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६८३. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'केँ पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६८४. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक हास्य-व्यंग्य प्रधान दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६८५. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६८६. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६८७. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६८८. '(अंक ३ केर पद्य भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) हास्य-व्यंग्य प्रधानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६८९. '(अंक ३ केर पद्य भाग)'मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पद्यक रूप हास्य-व्यंग्य प्रधान कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६९०. '(अंक ३ केर पद्य भाग)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय १ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. **(A) कविता आ की सुजाता; चान आ चारी** — सूचकांकमे विवेकानन्द झाक रचना "कविता आ की सुजाता; चान आ चारी" रूपमे देल अछि।

२. **(B) पद्य** — सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकैं पद्य कहल गेल अछि।

३. **(C) कविता** — सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकैं कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

४. **(D) कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर** — समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत "कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर" अछि।

५. **(A) कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन "कविता-स्वभाव आ प्रणयात्मक स्वर" रूपमे भेटैत अछि।

६. **(B) कविता** — उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

७. **(C) लेखक विवेकानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

८. **(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।** — ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

९. **(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।** — समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

१०. **(B) विवेकानन्द झाक "कविता आ की सुजाता; चान आ चारी" प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकैं जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकैं प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

११. **(A) मिथिला वन्दना** — सूचकांकमे मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क रचना "मिथिला वन्दना" रूपमे देल अछि।

१२. **(B) पद्य** — सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकैं पद्य कहल गेल अछि।

१३. **(C) कविता** — सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकैं कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

१४. **(D) वन्दना परम्परा** — समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत "वन्दना परम्परा" अछि।

१५. **(A) वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन "वन्दना परम्परा; भक्ति+शान्त; क्षेत्रीय पहचान" रूपमे भेटैत अछि।

१६. **(B) कविता** — उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

१७. **(C) लेखक मणिकान्त मिश्र 'मनिष', विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

१८. **(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकैं संग राखब।** — ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

१९. **(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।** — समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

२०. **(B) मणिकान्त मिश्र 'मनिष'क "मिथिला वन्दना" प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

२१. **(A) गजल; किछु गद्य कविता** — सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना "गजल; किछु गद्य कविता" रूपमे देल अछि।

२२. **(B) पद्य** — सूचकांकक विधा-स्तम्भमे एहि रचनाकेँ पद्य कहल गेल अछि।

२३. **(C) गजल/गद्य कविता** — सूचकांकक उप-विधा-स्तम्भ एहि पाठकेँ गजल/गद्य कविता रूपमे चिन्हित करैत अछि।

२४. **(D) सहायक सम्पादक, विदेह** — समालोचनात्मक टिप्पणीक आरम्भिक संकेत "सहायक सम्पादक, विदेह" अछि।

२५. **(A) सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाख्तिन** — समालोचनात्मक टिप्पणीमे एहि पाठक मूल्यांकन "सहायक सम्पादक, विदेह; अनचिन्हार आखर आन्दोलन; बाख्तिन" रूपमे भेटैत अछि।

२६. **(B) गजल/गद्य कविता** — उप-विधा-सूचनासँ स्पष्ट अछि जे पाठ गजल/गद्य कविता क्षेत्रसँ जुड़ल अछि।

२७. **(C) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा पद्य, उप-विधा गजल/गद्य कविता** — सूचकांक रचना-नामसँ संग लेखक, विधा आ उप-विधाक आधार-सूचना दैत अछि।

२८. **(D) रचना, विधा, उप-विधा आ समालोचनात्मक टिप्पणीकेँ संग राखब।** — ई प्रविष्टि मात्र नाम-सूची नहि, बल्कि विश्लेषणात्मक सूचकांकक रूपमे अछि।

२९. **(A) ओ पाठक रस, विचार-दिशा वा सांस्कृतिक संकेत खोलैत अछि।** — समालोचनात्मक टिप्पणी पाठक अर्थ-क्षेत्र आ आलोचनात्मक प्रवेश-द्वार दैत अछि।

३०. **(B) आशीष अनचिन्हारक "गजल; किछु गद्य कविता" प्रविष्टि लेखक, विधा, उप-विधा आ टिप्पणीकेँ जोड़ि विदेह-सदेह ३क पद्य/साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक लेखकक सूचकांकीय प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे विस्तारित करैत अछि।

३१. **(A) मधेशक आवाज** — सूचकांकमे वौएलाल साहक रचना "मधेशक आवाज" रूपमे देल अछि।

३२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३४. **(D) मधेश राजनीतिक आवाज** — टिप्पणीक पहिल संकेत "मधेश राजनीतिक आवाज" अछि।

३५. **(A) मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३६. **(B) लेखक वौएलाल साह, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०. **(B) वौएलाल साहक "मधेशक आवाज" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "मधेश राजनीतिक आवाज; फानन; वीर आ रौद्र" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१. **(A) हमर मीत** — सूचकांकमे सन्तोष कुमार मिश्रक रचना "हमर मीत" रूपमे देल अछि।

४२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४४. **(D) मित्र-भाव** — टिप्पणीक पहिल संकेत "मित्र-भाव" अछि।

४५. **(A) मित्र-भाव; मधुर रस** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मित्र-भाव; मधुर रस" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४६. **(B) लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०. (B) सन्तोष कुमार मिश्रक "हमर मीत" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "मित्र-भाव; मधुर रस" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१. (A) समीकरण — सूचकांकमे हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक रचना "समीकरण" रूपमे देल अछि।

५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५४. (D) गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान — टिप्पणीक पहिल संकेत "गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान" अछि।

५५. (A) गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ध्यू — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ध्यू" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५६. (B) लेखक हेमांग आत्मनिकुमार देसाइ, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०. (B) हेमांग आत्मनिकुमार देसाइक "समीकरण" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान; अद्भुत रस; बूर्ध्यू" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१. (A) (शीर्षकहीन) — सूचकांकमे अशोक चौधरीक रचना "(शीर्षकहीन)" रूपमे देल अछि।

६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

६४. (D) शीर्षक-अभाव — टिप्पणीक पहिल संकेत "शीर्षक-अभाव" अछि।

६५. (A) शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

६६. (B) लेखक अशोक चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०. (B) अशोक चौधरीक "(शीर्षकहीन)" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "शीर्षक-अभाव; मौनक शक्ति; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१. (A) बुढ़वा — सूचकांकमे उपेन्द्र भगत नागवंशीक रचना "बुढ़वा" रूपमे देल अछि।

७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

७४. (D) दलित स्वर — टिप्पणीक पहिल संकेत "दलित स्वर" अछि।

७५. (A) दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

७६. **(B) लेखक उपेन्द्र भगत नागवंशी, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८०. **(B) उपेन्द्र भगत नागवंशीक "बुढ़वा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "दलित स्वर; करुण; अम्बेडकर; फानन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८१. **(A) इतिहास; इन्कलाब** — सूचकांकमे डॉ. सुरेश लाभक रचना "इतिहास; इन्कलाब" रूपमे देल अछि।

८२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

८४. **(D) ऐतिहासिक आ राजनीतिक** — टिप्पणीक पहिल संकेत "ऐतिहासिक आ राजनीतिक" अछि।

८५. **(A) ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

८६. **(B) लेखक डॉ. सुरेश लाभ, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०. **(B) डॉ. सुरेश लाभक "इतिहास; इन्कलाब" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "ऐतिहासिक आ राजनीतिक; वीर आ रौद्र; ग्राम्शी; बेन्यामिन" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१. **(A) सम्बन्धक कोनो सू** — सूचकांकमे सरस्वती चौधरी 'रचना'क रचना "सम्बन्धक कोनो सू" रूपमे देल अछि।

९२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

९४. **(D) नारी दृष्टि** — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी दृष्टि" अछि।

९५. **(A) नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

९६. **(B) लेखक सरस्वती चौधरी 'रचना', विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. **(B) सरस्वती चौधरी 'रचना'क "सम्बन्धक कोनो सू" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी दृष्टि; वियोग-शृंगार; स्पिवाक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१. **(A) मिथिला-धाम** — सूचकांकमे डॉ. अजित मिश्रक रचना "मिथिला-धाम" रूपमे देल अछि।

१०२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१०४. **(D) तीर्थ-परम्परा** — टिप्पणीक पहिल संकेत "तीर्थ-परम्परा" अछि।

१०५. **(A) तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१०६. (B) लेखक डॉ. अजित मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०. (B) डॉ. अजित मिश्रक "मिथिला-धाम" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "तीर्थ-परम्परा; भक्ति आ शान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) घड़ी — सूचकांकमे सुनीलकुमार मल्लिकक रचना "घड़ी" रूपमे देल अछि।

११२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

११४. (D) समय-कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत "समय-कविता" अछि।

११५. (A) समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

११६. (B) लेखक सुनीलकुमार मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२०. (B) सुनीलकुमार मल्लिकक "घड़ी" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "समय-कविता; सूक्ष्मतावादी; शान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२१. (A) बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता — सूचकांकमे राजकमल चौधरीक रचना "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता" रूपमे देल अछि।

१२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१२४. (D) (१९२९-१९६७) — टिप्पणीक पहिल संकेत "(१९२९-१९६७)" अछि।

१२५. (A) (१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१२६. (B) लेखक राजकमल चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३०. (B) राजकमल चौधरीक "बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "(१९२९-१९६७); अप्रकाशित रचना; सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन; बाख्तिन; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३१. (A) वनदेवी; जन-जन याचक — सूचकांकमे जीवकान्तक रचना "वनदेवी; जन-जन याचक" रूपमे देल अछि।

१३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१३४. (D) जन्म २५.०७.१९३६ — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म २५.०७.१९३६" अछि।

१३५. (A) जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१३६. (B) लेखक जीवकान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४०. (B) जीवकान्तक “वनदेवी; जन-जन याचक” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २५.०७.१९३६; साहित्य अकादेमी १९९८; आदिवासी विस्थापन; फानन; स्पिवाक; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४१. (A) सर्व-पीड़ा — सूचकांकमे रूपा धीरूक रचना “सर्व-पीड़ा” रूपमे देल अछि।

१४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१४४. (D) नारी सामूहिक पीड़ा — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी सामूहिक पीड़ा” अछि।

१४५. (A) नारी सामूहिक पीड़ा; करुण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी सामूहिक पीड़ा; करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१४६. (B) लेखक रूपा धीरू, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५०. (B) रूपा धीरूक “सर्व-पीड़ा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नारी सामूहिक पीड़ा; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५१. (A) पानि अछि, मा आँखिक नोर — सूचकांकमे अग्रावरन देवेन्द्रक रचना “पानि अछि, मा आँखिक नोर” रूपमे देल अछि।

१५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१५४. (D) अश्रु-कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “अश्रु-कविता” अछि।

१५५. (A) अश्रु-कविता; करुण; minimalism — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१५६. (B) लेखक अग्रावरन देवेन्द्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६०. (B) अग्रावरन देवेन्द्रक “पानि अछि, मा आँखिक नोर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “अश्रु-कविता; करुण; minimalism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६१. (A) आह्वान — सूचकांकमे अमरेश यादवक रचना “आह्वान” रूपमे देल अछि।

१६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

१६४. (D) ओ.बी.सी. पहचान — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओ.बी.सी. पहचान” अछि।

१६५. (A) ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१६६. (B) लेखक अमरेश यादव, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७०. (B) अमरेश यादवक “आह्वान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “ओ.बी.सी. पहचान; वीर; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७१. (A) मैथिली दोहा — सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “मैथिली दोहा” रूपमे देल अछि।

१७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७३. (C) दोहा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप दोहा अछि।

१७४. (D) दोहा परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “दोहा परम्परा” अछि।

१७५. (A) दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१७६. (B) लेखक श्यामल सुमन, विधा पद्य, उप-विधा दोहा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७८. (D) ई पाठ दोहाक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८०. (B) श्यामल सुमनक “मैथिली दोहा” प्रविष्टि पद्य, दोहा आ “दोहा परम्परा; शान्त; विदेह folk-modernism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८१. (A) बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ — सूचकांकमे हिमांशु चौधरीक रचना “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ” रूपमे देल अछि।

१८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८३. (C) बाल गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल गीत अछि।

१८४. (D) बाल साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

१८५. (A) बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१८६. (B) लेखक हिमांशु चौधरी, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८८. (D) ई पाठ बाल गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९०. (B) हिमांशु चौधरीक “बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; liberatory pedagogy” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९१. (A) पाँच लाख बौआक दाम — सूचकांकमे दयाकान्तक रचना “पाँच लाख बौआक दाम” रूपमे देल अछि।

१९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

१९४. (D) दहेज-विरोधी व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “दहेज-विरोधी व्यंग्य” अछि।

१९५. (A) दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१९६. (B) लेखक दयाकान्त, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२००. (B) दयाकान्तक “पाँच लाख बौआक दाम” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “दहेज-विरोधी व्यंग्य; बीभत्स आ हास्य; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०१. (A) ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ — सूचकांकमे अजित कुमार झाक रचना “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” रूपमे देल अछि।

२०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

२०४. (D) राजनीतिक व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “राजनीतिक व्यंग्य” अछि।

२०५. (A) राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२०६. (B) लेखक अजित कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१०. (B) अजित कुमार झाक “ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छिथ” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “राजनीतिक व्यंग्य; हास्य; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२११. (A) जे हरे देखू ते हरे लाइन!! — सूचकांकमे सुमित आनन्दक रचना “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” रूपमे देल अछि।

२१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

२१४. (D) queue-culture व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “queue-culture व्यंग्य” अछि।

२१५. (A) queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२१६. (B) लेखक सुमित आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२०. (B) सुमित आनन्दक “जे हरे देखू ते हरे लाइन!!” प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ “queue-culture व्यंग्य; हास्य आ बीभत्स; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२१. (A) आजुक जीवन — सूचकांकमे विजया अर्यालक रचना “आजुक जीवन” रूपमे देल अछि।

२२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२२४. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

२२५. (A) नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२२६. (B) लेखक विजया अर्याल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३०. (B) विजया अर्यालक “आजुक जीवन” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “नेपाल; आगामी अएना; अस्तित्ववादी; कामू” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३१. (A) मनक बात मनमे — सूचकांकमे सरोज खिलाडीक रचना “मनक बात मनमे” रूपमे देल अछि।

२३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२३४. (D) आगामी अएना — टिप्पणीक पहिल संकेत “आगामी अएना” अछि।

२३५. (A) आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२३६. (B) लेखक सरोज खिलाडी, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४०. (B) सरोज खिलाडीक “मनक बात मनमे” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “आगामी अएना; नारी confessional; अएना motif; लाकाँ” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४१. (A) गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर — सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” रूपमे देल अछि।

२४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४३. (C) लोकगीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लोकगीत अछि।

२४४. (D) सहायक सम्पादक, विदेह — टिप्पणीक पहिल संकेत “सहायक सम्पादक, विदेह” अछि।

२४५. (A) सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२४६. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा पद्य, उप-विधा लोकगीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४८. (D) ई पाठ लोकगीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५०. (B) उमेश मंडलक “गिनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर” प्रविष्टि पद्य, लोकगीत आ “सहायक सम्पादक, विदेह; महिला श्रम गीत आ सोहर; बेन्यामिन; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५१. (A) खेली सम्पत जा भुइयाँ थान — सूचकांकमे रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क रचना “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” रूपमे देल अछि।

२५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२५४. (D) बाल साहित्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य” अछि।

२५५. (A) बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२५६. (B) लेखक रूपेश कुमार झा 'श्रेथ', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६०. (B) रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'क “खेली सम्पत जा भुइयाँ थान” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “बाल साहित्य; वात्सल्य; ग्रामीण बचपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६१. (A) मनुख आ माल; समाजक ई रूप — सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “मनुख आ माल; समाजक ई रूप” रूपमे देल अछि।

२६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२६४. (D) सामाजिक यथार्थ — टिप्पणीक पहिल संकेत “सामाजिक यथार्थ” अछि।

२६५. (A) सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२६६. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७०. (B) विनीत उत्पलक “मनुख आ माल; समाजक ई रूप” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सामाजिक यथार्थ; बीभत्स; मार्क्स; commodity fetishism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७१. (A) आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति — सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” रूपमे देल अछि।

२७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२७४. (D) ८ कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “८ कविता” अछि।

२७५. (A) ८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२७६. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८०. (B) राजदेव मंडलक “आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “८ कविता; सर्वाधिक; caste आ ecology; करुण आ वीर आ बीभत्स; अम्बेडकर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८१. (A) बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास — सूचकांकमे शेफालिका वर्माक रचना “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” रूपमे देल अछि।

२८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२८४. (D) जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर” अछि।

२८५. (A) जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२८६. (B) लेखक शेफालिका वर्मा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९०. (B) शेफालिका वर्माक “बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ९ अगस्त १९४३, भागलपुर; PhD पटना; eco-feminist; बीभत्स; स्पिवाक; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९१. (A) की चाहलौं; उदारीकरण — सूचकांकमे महाकान्त ठाकुरक रचना “की चाहलौं; उदारीकरण” रूपमे देल अछि।

२९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

२९४. (D) उदारीकरण-विरोधी — टिप्पणीक पहिल संकेत “उदारीकरण-विरोधी” अछि।

२९५. (A) उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२९६. (B) लेखक महाकान्त ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३००. (B) महाकान्त ठाकुरक “की चाहलौं; उदारीकरण” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “उदारीकरण-विरोधी; करुण आ बीभत्स; ग्राम्शी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०१. (A) विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना — सूचकांकमे स्व. कालीकांत झा 'बुच'क रचना “विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना” रूपमे देल अछि।

३०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३०४. (D) (१९३४-२००९) — टिप्पणीक पहिल संकेत “(१९३४-२००९)” अछि।

३०५. (A) (१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३०६. (B) लेखक स्व. कालीकांत झा 'बुच', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१०. (B) स्व. कालीकांत झा 'बुच'क "विरक्ति; पोताक अन्हास; दीनक नेना" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "(१९३४-२००९); करियन, समस्तीपुर; मरणोत्तर; शोक-गीतात्मक आ वात्सल्य; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३११. (A) विरह गीत — सूचकांकमे मनीष ठाकुरक रचना "विरह गीत" रूपमे देल अछि।

३१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१३. (C) गीत — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गीत अछि।

३१४. (D) वियोग परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत "वियोग परम्परा" अछि।

३१५. (A) वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३१६. (B) लेखक मनीष ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा गीत — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१८. (D) ई पाठ गीतक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२०. (B) मनीष ठाकुरक "विरह गीत" प्रविष्टि पद्य, गीत आ "वियोग परम्परा; शृंगार-वियोग" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२१. (A) जागु-जागु मैथिल — सूचकांकमे चन्द्रकान्त मिश्रक रचना "जागु-जागु मैथिल" रूपमे देल अछि।

३२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३२४. (D) जागरण कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत "जागरण कविता" अछि।

३२५. (A) जागरण कविता; वीर; विदेह framework — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "जागरण कविता; वीर; विदेह framework" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३२६. (B) लेखक चन्द्रकान्त मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३०. (B) चन्द्रकान्त मिश्रक "जागु-जागु मैथिल" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "जागरण कविता; वीर; विदेह framework" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३१. (A) चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा — सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना "चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा" रूपमे देल अछि।

३३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३३४. (D) नारी आत्म-खोज — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी आत्म-खोज" अछि।

३३५. (A) नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३३६. (B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४०. (B) कुसुम ठाकुरक "चुलबुली क्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "नारी आत्म-खोज; हास्य आ शृंगार; स्पिवाक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४१. (A) चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप — सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना "चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप" रूपमे देल अछि।

३४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३४४. (D) बहुरंगी — टिप्पणीक पहिल संकेत "बहुरंगी" अछि।

३४५. (A) बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३४६. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५०. (B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क "चन्द्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "बहुरंगी; ४ भिन्न रस; शृंगार आ हास्य आ रौद्र आ करुण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५१. (A) बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही — सूचकांकमे धर्म विकलक रचना "बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही" रूपमे देल अछि।

३५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३५४. (D) करुण आ रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ रौद्र" अछि।

३५५. (A) करुण आ रौद्र; अम्बेडकर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "करुण आ रौद्र; अम्बेडकर" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३५६. (B) लेखक धर्म विकल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६०. (B) धर्म विकलक "बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "करुण आ रौद्र; अम्बेडकर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६१. (A) अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ — सूचकांकमे रघुनाथ मुखियाक रचना "अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ" रूपमे देल अछि।

३६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३६४. (D) साहित्य-स्वभाव-विमर्शी — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी” अछि।

३६५. (A) साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३६६. (B) लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७०. (B) रघुनाथ मुखियाक “अनुश्रित; कवितaक शीर्षक जकाँ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; postmodern; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७१. (A) चुन्नीधारी — सूचकांकमे लक्ष्मण झा 'सागर'क रचना “चुन्नीधारी” रूपमे देल अछि।

३७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३७४. (D) सबाल्टर्न street vendor — टिप्पणीक पहिल संकेत “सबाल्टर्न street vendor” अछि।

३७५. (A) सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३७६. (B) लेखक लक्ष्मण झा 'सागर', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८०. (B) लक्ष्मण झा 'सागर'क “चुन्नीधारी” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सबाल्टर्न street vendor; करुण; स्पिवाक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८१. (A) एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य) — सूचकांकमे विभूति आनन्दक रचना “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)” रूपमे देल अछि।

३८२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३८४. (D) जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी” अछि।

३८५. (A) जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३८६. (B) लेखक विभूति आनन्द, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९०. (B) विभूति आनन्दक “एक-दू...नओटा कविता; प्रतिपक्ष:१-९; मदारी युग; नब पीढ़ी (एवं अन्य)” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ०४.१०.१९५५ मधुबनी; साहित्य अकादेमी २००६; दिनकर सम्मान २००८; शान्त आ बीभत्स; नव्य-न्याय; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९१. (A) गुमशुदगी रिपोर्ट — सूचकांकमे रमण कुमार सिंहक रचना “गुमशुदगी रिपोर्ट” रूपमे देल अछि।

३९२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

३९४. (D) missing-person metaphor — टिप्पणीक पहिल संकेत “missing-person metaphor” अछि।

३९५. (A) missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३९६. (B) लेखक रमण कुमार सिंह, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४००. (B) रमण कुमार सिंहक “गुमशुदगी रिपोर्ट” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “missing-person metaphor; करुण आ अद्भुत; काफ्का” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०१. (A) मातृगिरा — सूचकांकमे मायानाथ झाक रचना “मातृगिरा” रूपमे देल अछि।

४०२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४०४. (D) मातृभाषा कविता — टिप्पणीक पहिल संकेत “मातृभाषा कविता” अछि।

४०५. (A) मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४०६. (B) लेखक मायानाथ झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१०. (B) मायानाथ झाक “मातृगिरा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “मातृभाषा कविता; शान्त आ वात्सल्य; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४११. (A) देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत — सूचकांकमे सच्चिदानन्द 'सौरभ'क रचना “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” रूपमे देल अछि।

४१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४१४. (D) trilogy — टिप्पणीक पहिल संकेत “trilogy” अछि।

४१५. (A) trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४१६. (B) लेखक सच्चिदानन्द 'सौरभ', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२०. (B) सच्चिदानन्द 'सौरभ'क “देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “trilogy; बीभत्स आ शृंगार आ करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२१. (A) बाल गीत (३); ओदि उपाड़ — सूचकांकमे अशोक दत्तक रचना “बाल गीत (३); ओदि उपाड़” रूपमे देल अछि।

४२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२३. (C) बाल गीत/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल गीत/व्यंग्य अछि।

४२४. (D) बाल साहित्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “बाल साहित्य आ व्यंग्य” अछि।

४२५. (A) बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४२६. (B) लेखक अशोक दत्त, विधा पद्य, उप-विधा बाल गीत/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२८. (D) ई पाठ बाल गीत/व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक पद्य-स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३०. (B) अशोक दत्तक “बाल गीत (३); ओदि उपाड़” प्रविष्टि पद्य, बाल गीत/व्यंग्य आ “बाल साहित्य आ व्यंग्य; वात्सल्य आ हास्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ३क पद्य-परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३१. (A) टी..ऽऽ..स — सूचकांकमे शीतल झाक रचना “टी..ऽऽ..स” रूपमे देल अछि।

४३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३३. (C) गजल-प्रेरित — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गजल-प्रेरित अछि।

४३४. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

४३५. (A) नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४३६. (B) लेखक शीतल झा, विधा पद्य, उप-विधा गजल-प्रेरित — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३८. (D) ई पाठ गजल-प्रेरितक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४४०. (B) शीतल झाक “टी..ऽऽ..स” प्रविष्टि पद्य, गजल-प्रेरित आ “नेपाल; एन.सी.पी. एमाले; शृंगार आ वीर; द्व्यर्थी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४४१. (A) मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या — सूचकांकमे शम्भु नाथ झा 'वत्स'क रचना “मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या” रूपमे देल अछि।

४४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४४३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४४४. (D) साहित्याचार्य, वेदविद् — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्याचार्य, वेदविद्” अछि।

४४५. (A) साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४४६. (B) लेखक शम्भु नाथ झा 'वत्स', विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५०. (B) शम्भु नाथ झा 'वत्स'क “मिथिलाक दशा” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “साहित्याचार्य, वेदविद्; करुण आ बीभत्स; परम्परा बनाम आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४५१. (A) घर — सूचकांकमे डॉ. योगानन्द झाक रचना “घर” रूपमे देल अछि।

४५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४५४. (D) जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा” अछि।

४५५. (A) जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४५६. (B) लेखक डॉ. योगानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४६०. (B) डॉ. योगानन्द झाक “घर” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म ११.०१.१९५५ दरभंगा; साहित्य अकादेमी अनुवाद २००५; दार्शनिक; करुण; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६१. (A) गतिशीलता — सूचकांकमे वीरेन्द्र मल्लिकक रचना “गतिशीलता” रूपमे देल अछि।

४६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४६४. (D) सूक्ष्मतावादी — टिप्पणीक पहिल संकेत “सूक्ष्मतावादी” अछि।

४६५. (A) सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४६६. (B) लेखक वीरेन्द्र मल्लिक, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४७०. (B) वीरेन्द्र मल्लिकक “गतिशीलता” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सूक्ष्मतावादी; बाख्तिन; शान्त; self-transformation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७१. (A) राधा-१६म खेप — सूचकांकमे गंगेश गुंजनक रचना “राधा-१६म खेप” रूपमे देल अछि।

४७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४७४. (D) वरिष्ठ कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “वरिष्ठ कवि” अछि।

४७५. (A) वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४७६. (B) लेखक गंगेश गुंजन, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४७८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४७९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४८०. **(B) गंगेश गुंजनक "राधा-१६म खेप" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "वरिष्ठ कवि; राधा श्रृंखला; नारीवादी पुनर्पाठ; शृंगार-वियोग" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४८१. **(A) अकाल** — सूचकांकमे कीर्तिनारायण मिश्रक रचना "अकाल" रूपमे देल अछि।

४८२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४८४. **(D) अकाल व्यंग्य** — टिप्पणीक पहिल संकेत "अकाल व्यंग्य" अछि।

४८५. **(A) अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४८६. **(B) लेखक कीर्तिनारायण मिश्र, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४८७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४८९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४९०. **(B) कीर्तिनारायण मिश्रक "अकाल" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "अकाल व्यंग्य; करुण आ रौद्र; मार्क्स आ अम्बेडकर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९१. **(A) करू की वृद्ध अथबल छी** — सूचकांकमे स्व. शान्तक रचना "करू की वृद्ध अथबल छी" रूपमे देल अछि।

४९२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४९३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

४९४. **(D) पूर्णियाँक कवि** — टिप्पणीक पहिल संकेत "पूर्णियाँक कवि" अछि।

४९५. **(A) पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४९६. **(B) लेखक स्व. शान्त, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४९७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९८. **(D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५००. **(B) स्व. शान्तक "करू की वृद्ध अथबल छी" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "पूर्णियाँक कवि; स्मृति-आधारित; मरणोत्तर; करुण आ हास्य; नव्य-न्याय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०१. **(A) सून मिथिला चल** — सूचकांकमे कालिनाथ ठाकुरक रचना "सून मिथिला चल" रूपमे देल अछि।

५०२. **(B) पद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०३. **(C) कविता** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५०४. **(D) जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी** — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी" अछि।

५०५. **(A) जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५०६. **(B) लेखक कालिनाथ ठाकुर, विधा पद्य, उप-विधा कविता** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५१०. (B) कालिनाथ ठाकुरक “सून मिथिला चल” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २४.०६.१९४६ मधुबनी; करुण आ रौद्र; ग्राम्शी; usury व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५११. (A) गजल १-४ — सूचकांकमे अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क रचना “गजल १-४” रूपमे देल अछि।

५१२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५१३. (C) गजल — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप गजल अछि।

५१४. (D) ४ गजल — टिप्पणीक पहिल संकेत “४ गजल” अछि।

५१५. (A) ४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५१६. (B) लेखक अरविन्द ठाकुर 'अरबिन', विधा पद्य, उप-विधा गजल — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१८. (D) ई पाठ गजलक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५२०. (B) अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'क “गजल १-४” प्रविष्टि पद्य, गजल आ “४ गजल; राजनीतिक आ प्रणयात्मक आ flood; विदेह गजल आन्दोलन; बाख्तिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५२१. (A) निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए — सूचकांकमे कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क रचना “निहि बिसरैछ; काँति तँ रवि छैए” रूपमे देल अछि।

५२२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५२३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५२४. (D) जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा” अछि।

५२५. (A) जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५२६. (B) लेखक कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५२८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३०. (B) कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)क “निहि बिसरैछ” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “जन्म २७.१२.१९५८ दरभंगा; KV कटिहार; बाल-गरीबी कविता; बेन्यामिन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५३१. (A) कोशीक ताण्डव; दहेज दानव — सूचकांकमे श्री विज्ञानन्द झाक रचना “कोशीक ताण्डव; दहेज दानव” रूपमे देल अछि।

५३२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५३४. (D) कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी” अछि।

५३५. (A) कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५३६. (B) लेखक श्री विज्ञानन्द झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४०. (B) श्री विज्ञानन्द झाक "कोशीक ताण्डव" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "कोसी बाढ़ि आ दहेज-विरोधी; रौद्र आ करुण आ बीभत्स" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४१. (A) सभटा चौपट भऽ गेल — सूचकांकमे मो. गुल हसनक रचना "सभटा चौपट भऽ गेल" रूपमे देल अछि।

५४२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४३. (C) व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप व्यंग्य अछि।

५४४. (D) मुसलिम मैथिली आवाज — टिप्पणीक पहिल संकेत "मुसलिम मैथिली आवाज" अछि।

५४५. (A) मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्यू; विदेह की बहुलतावादी नीति — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्यू; विदेह की बहुलतावादी नीति" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५४६. (B) लेखक मो. गुल हसन, विधा पद्य, उप-विधा व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४८. (D) ई पाठ व्यंग्यक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५०. (B) मो. गुल हसनक "सभटा चौपट भऽ गेल" प्रविष्टि पद्य, व्यंग्य आ "मुसलिम मैथिली आवाज; बीभत्स आ हास्य; बूर्ध्यू; विदेह की बहुलतावादी नीति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५१. (A) बहीन — सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना "बहीन" रूपमे देल अछि।

५५२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५५४. (D) भाई-बहिन — टिप्पणीक पहिल संकेत "भाई-बहिन" अछि।

५५५. (A) भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५५६. (B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६०. (B) मनोज कुमार मंडलक "बहीन" प्रविष्टि पद्य, कविता आ "भाई-बहिन; वात्सल्य आ करुण; औचित्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६१. (A) मैथल नइँ — छोटका — सूचकांकमे आमोद कुमार झाक रचना "मैथल नइँ — छोटका" रूपमे देल अछि।

५६२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५६४. (D) पहचान-राजनीति — टिप्पणीक पहिल संकेत "पहचान-राजनीति" अछि।

५६५. (A) पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५६६. (B) लेखक आमोद कुमार झा, विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५७०. (B) आमोद कुमार झाक “मैथल नइँ — छोटका” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “पहचान-राजनीति; करुण आ अद्भुत; भाषाई पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५७१. (A) आकाश मध्य लिखल हमर लेख — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क रचना “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” रूपमे देल अछि।

५७२. (B) पद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ पद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५७३. (C) कविता — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कविता अछि।

५७४. (D) सम्पादक-कवि — टिप्पणीक पहिल संकेत “सम्पादक-कवि” अछि।

५७५. (A) सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५७६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), विधा पद्य, उप-विधा कविता — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५७८. (D) ई पाठ कविताक रूपमे पद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५८०. (B) गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)क “आकाश मध्य लिखल हमर लेख” प्रविष्टि पद्य, कविता आ “सम्पादक-कवि; साहित्य-स्वभाव-विमर्शी; शान्त आ अद्भुत; विदेह founder; बाख्तिन; नव्य-न्याय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 3क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५८१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५८२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५८३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५८४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५८५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५८६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५८७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५८८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५८९. (A) शोध-लेखक रूप धारावाहिक केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५९०. (A) उत्तरकेँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५९१. (A) तेसर किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

५९२. (A) तेसर किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५९३. (A) तेसर किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

५९४. (A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५९५. (A) तेसर किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

५९६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५९७. (A) तेसर किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५९८. (A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५९९. (A) उपन्यासक रूप तेसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६००. (A) उत्तरकैँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६०१. (A) तेसर किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

६०२. (A) तेसर किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६०३. (A) तेसर किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

६०४. (A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६०५. (A) तेसर किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

६०६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६०७. (A) तेसर किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६०८. (A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६०९. (A) महाकाव्यक रूप तेसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६१०. (A) उत्तरकैँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६११. (A) अंक ३ केर कथा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक ३ केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

६१२. (A) अंक ३ केर कथा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६१३. (A) अंक ३ केर कथा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक ३ केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

६१४. (A) शीर्षक अंक ३ केर कथा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६१५. (A) अंक ३ केर कथा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक ३ केर कथा सँ बनैत अछि।

६१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६१७. (A) अंक ३ केर कथा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक ३ केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६१८. (A) अंक ३ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६१९. (A) कथाक रूप अंक ३ केर कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६२०. (A) उत्तरकैँ अंक ३ केर कथा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६२१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६२२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६२३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६२४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६२५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६२६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६२७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६२८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६२९. (A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६३०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६३१. **(A) --** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

६३२. **(A) --** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६३३. **(A) --** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

६३४. **(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६३५. **(A) --** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

६३६. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६३७. **(A) --** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

६३८. **(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६३९. **(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६४०. **(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६४१. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६४२. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६४३. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६४४. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६४५. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६४६. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६४७. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६४८. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६४९. **(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६५०. **(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६५१. **(A) लोककथाक बाल-संस्करण** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं लोककथाक बाल-संस्करण सँ जोड़ैत अछि।

६५२. **(A) लोककथाक बाल-संस्करण** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६५३. **(A) लोककथाक बाल-संस्करण** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित रहैत अछि।

६५४. **(A) शीर्षक लोककथाक बाल-संस्करण दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६५५. **(A) लोककथाक बाल-संस्करण** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल लोककथाक बाल-संस्करण सँ बनैत अछि।

६५६. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६५७. **(A) लोककथाक बाल-संस्करण** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ लोककथाक बाल-संस्करणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६५८. **(A) लोककथाक बाल-संस्करणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६५९. **(A) बालानां कृतेक रूप लोककथाक बाल-संस्करण कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६६०. **(A) उत्तरकैं लोककथाक बाल-संस्करण धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६६१. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६६२. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६६३. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६६४. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६६५. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६६६. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६६७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६६८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६६९. (A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६७०. (A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६७१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६७२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६७३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६७४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६७५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६७६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६७७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६७८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६७९. (A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६८०. (A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६८१. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधान — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं हास्य-व्यंग्य प्रधान सँ जोड़ैत अछि।

६८२. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधान — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६८३. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधान — सुरक्षित पठन स्रोत-सार हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित रहैत अछि।

६८४. (A) शीर्षक हास्य-व्यंग्य प्रधान दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६८५. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधान — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल हास्य-व्यंग्य प्रधान सँ बनैत अछि।

६८६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६८७. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधान — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ हास्य-व्यंग्य प्रधानक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६८८. (A) हास्य-व्यंग्य प्रधानक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६८९. (A) पद्यक रूप हास्य-व्यंग्य प्रधान कैं स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६९०. (A) उत्तरकैं हास्य-व्यंग्य प्रधान धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय २ : विदेह-सदेह ४ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड 1540 : विदेह-सदेह 4 — कुमार मनोज कश्यप: चौबिटया पर (पृ. १-३)

१. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चौबिटया पर (पृ. १-३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२. "चौबिटया पर (पृ. १-३)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३. "चौबिटया पर (पृ. १-३)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४. कुमार मनोज कश्यपक "चौबिटया पर (पृ. १-३)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी

५. कुमार मनोज कश्यपक "चौबिटया पर (पृ. १-३)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्द्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६. "चौबिटया पर (पृ. १-३)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७. कुमार मनोज कश्यपक "चौबिटया पर (पृ. १-३)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८. "चौबिटया पर (पृ. १-३)"केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९. कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०. खण्ड 1540क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्द्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1541 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): एकटा आर रबि (पृ. ४-८)

११. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) एकटा आर रबि (पृ. ४-८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनुदित कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा

१५. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)”कैँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०. खण्ड 1541क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकैँ पाठोत्तर जीवन; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1542 : विदेह-सदेह 4 — कुसुम ठाकुर: व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)

२१. कुसुम ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कथाकार

२५. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९. कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०. खण्ड 1542क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुसुम ठाकुरक “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1543 : विदेह-सदेह 4 — सुरेश किशोर झा: साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)

३१. सुरेश किशोर झाक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मध्यमवर्गीय पारिवारिक

३५. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुरेश किशोर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९. सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०. खण्ड 1543क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुरेश किशोर झाक “साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1544 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)

४१. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) मौलिक कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण

४५. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६. "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा मौलिक कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)"केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ मौलिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०. खण्ड 1544क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)” प्रविष्टि गद्य, मौलिक कथा आ “वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1545 : विदेह-सदेह ४ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): सअँगर (पृ. ३६-४४)

५१. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह ४मे “सअँगर (पृ. ३६-४४)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) सअँगर (पृ. ३६-४४)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनुदित कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) कोङ्कणीसँ मैथिली

५५. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअँगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) कोङ्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६. “सअँगर (पृ. ३६-४४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअॅगर (पृ. ३६-४४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. “सअॅगर (पृ. ३६-४४)”कैँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअॅगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६०. खण्ड १५४५क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअॅगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1546 : विदेह-सदेह ४ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद): नागपंचमी (पृ. ४५-४९)

६१. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क विदेह-सदेह ४मे “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) नागपंचमी (पृ. ४५-४९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनुदित कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६४. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) कोङ्कणीसँ मैथिली

६५. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६६. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)”कैँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६९. डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७०. खण्ड १५४६क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1547 : विदेह-सदेह ४ — अनमोल झा: प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)

७१. अनमोल झाक विदेह-सदेह ४मे “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७४. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ बौद्धिक

७५. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७६. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७९. अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८०. खण्ड १५४७क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1548 : विदेह-सदेह ४ — मिथिलेश कुमार झा: एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)

८१. मिथिलेश कुमार झाक विदेह-सदेह ४मे "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८४. मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर

८५. मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८६. "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)"केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८९. मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९०. खण्ड १५४८क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1549 : विदेह-सदेह ४ — पालन झा: गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)

९१. पालन झाक विदेह-सदेह ४मे "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)" नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९४. पालन झाक "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

९५. पालन झाक "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)" प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९६. "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)”कैं विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९९. पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१००. खण्ड १५४९क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पालन झाक “गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1550 : विदेह-सदेह ४ — कामिनी कामायनी: लाल काकी (पृ. ६०-६३)

१०१. कामिनी कामायनीक विदेह-सदेह ४मे “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) लाल काकी (पृ. ६०-६३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०४. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कथाकार

१०५. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०६. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. “लाल काकी (पृ. ६०-६३)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०९. कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११०. खण्ड १५५०क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1551 : विदेह-सदेह ४ — जगदीश प्रसाद मंडल: बहीन (पृ. ६४-७२)

१११. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह ४मे “बहीन (पृ. ६४-७२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) बहीन (पृ. ६४-७२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११४. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित कथाकार

११५. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११६. “बहीन (पृ. ६४-७२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. “बहीन (पृ. ६४-७२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११९. जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२०. खण्ड १५५१क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1552 : विदेह-सदेह ४ — साकेतानन्द: कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)

१२१. साकेतानन्दक विदेह-सदेह ४मे “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२४. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) संस्कृत शीर्षक

१२५. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२६. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२९. साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३०. खण्ड १५५२क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1553 : विदेह-सदेह ४ — सुजीत कुमार झा: प्रियंका (पृ. ७९-८३)

१३१. सुजीत कुमार झाक विदेह-सदेह ४मे “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) प्रियंका (पृ. ७९-८३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३४. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ करुण

१३५. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३६. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. “प्रियंका (पृ. ७९-८३)”कैं विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३९. सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४०. खण्ड १५५३क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुजीत कुमार झाक “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1554 : विदेह-सदेह ४ — आशीष चमन: पछता रोटी (पृ. ८४-८९)

१४१. आशीष चमनक विदेह-सदेह ४मे “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) पछता रोटी (पृ. ८४-८९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४४. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र

१४५. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४६. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४९. आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५०. खण्ड १५५४क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष चमनक “पछता रोटी (पृ. ८४-८९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1555 : विदेह-सदेह ४ — आशीष कुमार चौधरी: जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)

१५१. आशीष कुमार चौधरीक विदेह-सदेह ४मे “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५४. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर

१५५. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५६. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशीष कुमार चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५९. आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६०. खण्ड १५५५क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष कुमार चौधरीक “जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1556 : विदेह-सदेह ४ — दुर्गानन्द मंडल: बकलेल (पृ. ९१-९५)

१६१. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह ४मे “बकलेल (पृ. ९१-९५)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) बकलेल (पृ. ९१-९५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६४. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पिछड़ल-वर्ग/दलित

१६५. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६६. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. “बकलेल (पृ. ९१-९५)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६९. दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७०. खण्ड १५५६क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दुर्गानन्द मंडलक “बकलेल (पृ. ९१-९५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1557 : विदेह-सदेह ४ — कपिलेश्वर राउत: छूआ-छूत (पृ. ९६)

१७१. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह ४मे “छूआ-छूत (पृ. ९६)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) छूआ-छूत (पृ. ९६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७४. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित चेतना

१७५. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७६. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. “छूआ-छूत (पृ. ९६)”कैं विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७९. कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८०. खण्ड १५५७क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कपिलेश्वर राउतक “छूआ-छूत (पृ. ९६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1558 : विदेह-सदेह ४ — राजदेव मंडल: रखबार (पृ. ९७-१०३)

१८१. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह ४मे “रखबार (पृ. ९७-१०३)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) रखबार (पृ. ९७-१०३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८४. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण

१८५. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८६. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. “रखबार (पृ. ९७-१०३)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८९. राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९०. खण्ड १५५८क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजदेव मंडलक “रखबार (पृ. ९७-१०३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1559 : विदेह-सदेह ४ — शरदिन्दु चौधरी: समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)

१९१. शरदिन्दु चौधरीक विदेह-सदेह ४मे “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९४. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त

१९५. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९६. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शरदिन्दु चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९९. शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२००. खण्ड १५५९क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शरदिन्दु चौधरीक “समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1560 : विदेह-सदेह ४ — विजय-हरीश: छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)

२०१. विजय-हरीशक विदेह-सदेह ४मे "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०४. विजय-हरीशक "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र

२०५. विजय-हरीशक "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०६. "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विजय-हरीश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. विजय-हरीशक "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)"केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०९. विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१०. खण्ड १५६०क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विजय-हरीशक “छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1561 : विदेह-सदेह ४ — सुनीता ठाकुर: अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)

२११. सुनीता ठाकुरक विदेह-सदेह ४मे “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१४. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कथाकार

२१५. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१६. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुनीता ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)”कैं विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१९. सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२०. खण्ड १५६१क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुनीता ठाकुरक “अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1562 : विदेह-सदेह ४ — राकेश कुमार रोशन: पंचैति (पृ. ११०-११२)

२२१. राकेश कुमार रोशनक विदेह-सदेह ४मे “पंचैति (पृ. ११०-११२)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) पंचैति (पृ. ११०-११२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२४. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ रौद्र

२२५. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२६. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राकेश कुमार रोशन, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. “पंचैति (पृ. ११०-११२)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२९. राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३०. खण्ड १५६२क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1563 : विदेह-सदेह ४ — हेमचन्द्र झा: बाट (पृ. ११३-११७)

२३१. हेमचन्द्र झाक विदेह-सदेह ४मे “बाट (पृ. ११३-११७)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) बाट (पृ. ११३-११७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. “बाट (पृ. ११३-११७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. “बाट (पृ. ११३-११७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३४. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण

२३५. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३६. “बाट (पृ. ११३-११७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. “बाट (पृ. ११३-११७)”कैं विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३९. हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४०. खण्ड १५६३क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1564 : विदेह-सदेह ४ — सुभाष चन्द्र यादव: पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)

२४१. सुभाष चन्द्र यादवक विदेह-सदेह ४मे “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” नामसँ कोन रचना उल्लिखित अछि?

(A) पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४४. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) पिछड़ल-वर्ग

२४५. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४६. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)”केँ विदेह-सदेह ४क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४९. सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह ४क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५०. खण्ड १५६४क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1565 : विदेह-सदेह 4 — मानेश्वर मनुज: जीत (पृ. १२०-१२८)

२५१. मानेश्वर मनुजक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जीत (पृ. १२०-१२८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५४. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण

२५५. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५६. “जीत (पृ. १२०-१२८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. “जीत (पृ. १२०-१२८)”कैँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५९. मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६०. खण्ड 1565क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1566 : विदेह-सदेह 4 — परमेश्वर कापड़ि: धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)

२६१. परमेश्वर कापड़िक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६४. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल

२६५. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६६. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६९. परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७०. खण्ड 1566क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1567 : विदेह-सदेह 4 — ऋषि वशिष्ठ: जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)

२७१. ऋषि वशिष्ठक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा/व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७४. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ वीर

२७५. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७६. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७९. ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८०. खण्ड 1567क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1568 : विदेह-सदेह 4 — शिवशंकर श्रीनिवास: पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)

२८१. शिवशंकर श्रीनिवासक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८४. शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: लोहना, मधुबनी

२८५. शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्द्यू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८६. "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. "पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)"केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८९. शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९०. खण्ड 1568क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्द्यू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1569 : विदेह-सदेह 4 — श्यामल सुमन: अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ....

२९१. श्यामल सुमनक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा/व्यंग्य

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९४. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ रौद्र

२९५. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९६. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक श्यामल सुमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)”कैं विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९९. श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३००. खण्ड 1569क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1570 : विदेह-सदेह 4 — मनोज झा 'मुक्ति': इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)

३०१. मनोज झा 'मुक्ति'क विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०४. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र आ करुण

३०५. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०६. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)”कैँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०९. मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१०. खण्ड 1570क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज झा 'मुक्ति'क “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1571 : विदेह-सदेह 4 — जगदीश प्रसाद मंडल: बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (...

३११. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) बाल-कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१४. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य आ वीर

३१५. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१६. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१९. जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२०. खण्ड 1571क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश प्रसाद मंडलक “बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)” प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ “वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1572 : विदेह-सदेह 4 — डा. सुरेश लाभ: माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)

३२१. डा. सुरेश लाभक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२४. डा. सुरेश लाभक "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

३२५. डा. सुरेश लाभक "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२६. "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डा. सुरेश लाभ, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. डा. सुरेश लाभक "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)"केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२९. डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३०. खण्ड 1572क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डा. सुरेश लाभक “माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1573 : विदेह-सदेह 4 — श्री ललन प्रसाद ठाकुर: साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ....

३३१. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कव्वाली

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३४. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर

३३५. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३६. “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक श्री ललन प्रसाद ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कव्वाली

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...”कैं विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कव्वालीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३९. श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४०. खण्ड 1573क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) श्री ललन प्रसाद ठाकुरक “साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)” प्रविष्टि गद्य, कव्वाली आ “जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1574 : विदेह-सदेह 4 — उमेश मंडल: परहेज (पृ. १६०)

३४१. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) परहेज (पृ. १६०)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. “परहेज (पृ. १६०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. “परहेज (पृ. १६०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४४. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सहायक सम्पादक

३४५. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४६. “परहेज (पृ. १६०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. “परहेज (पृ. १६०)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४९. उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५०. खण्ड 1574क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मंडलक “परहेज (पृ. १६०)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1575 : विदेह-सदेह 4 — कमला चौधरी: कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)

३५१. कमला चौधरीक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५४. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कथाकार

३५५. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५६. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कमला चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५९. कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६०. खण्ड 1575क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कमला चौधरीक “कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1576 : विदेह-सदेह 4 — बेचन ठाकुर: छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)

३६१. बेचन ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा/नाटक

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६४. बेचन ठाकुरक "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भिखारी ठाकुर परम्परा

३६५. बेचन ठाकुरक "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६६. "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/नाटक

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. बेचन ठाकुरक "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)"केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथा/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६९. बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७०. खण्ड 1576क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/नाटक आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1577 : विदेह-सदेह 4 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)

३७१. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ८ फरवरी १९६७

३७५. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७६. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)”कैँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७९. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८०. खण्ड 1577क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1578 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर: सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३...

३८१. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) उपन्यास अंश

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८४. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सम्पादक

३८५. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८६. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास अंश

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ उपन्यास अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८९. गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९०. खण्ड 1578क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास अंश आ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1579 : विदेह-सदेह 4 — विज्ञानन्द झा: किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०...

३९१. विज्ञानन्द झाक विदेह-सदेह 4मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) किशोर-कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९४. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह भाषा-सम्पादक

३९५. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९६. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा किशोर-कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)”केँ विदेह-सदेह 4क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ किशोर-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९९. विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 4क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४००. खण्ड 1579क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि गद्य, किशोर-कथा आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5068 : विदेह-सदेह 4 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)

४०१. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) दोसर किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४०२. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) दोसर किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४०३. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’कैं शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) दोसर किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४०४. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४०५. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) दोसर किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४०६. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) दोसर किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४०७. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) दोसर किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४०८. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४०९. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) शोध-लेखक रूप दोसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४१०. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5069 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ४)

४११. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४१२. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४१३. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’कैँ उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) चारिम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४१४. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४१५. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४१६. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) चारिम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४१७. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४१८. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४१९. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) उपन्यासक रूप चारिम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४२०. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं चारिम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5070 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ४)

४२१. ‘महाभारत (अंक ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४२२. ‘महाभारत (अंक ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४२३. ‘महाभारत (अंक ४)’कैं महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) चारिम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४२४. ‘महाभारत (अंक ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४२५. ‘महाभारत (अंक ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४२६. ‘महाभारत (अंक ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) चारिम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४२७. ‘महाभारत (अंक ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४२८. ‘महाभारत (अंक ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४२९. ‘महाभारत (अंक ४)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) महाकाव्यक रूप चारिम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४३०. ‘महाभारत (अंक ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ चारिम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5071 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — इमानदारीक ग्लैमर

४३१. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) अंक ४ केर कथा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४३२. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) अंक ४ केर कथा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४३३. ‘इमानदारीक ग्लैमर’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) अंक ४ केर कथा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४३४. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक अंक ४ केर कथा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४३५. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) अंक ४ केर कथा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४३६. ‘इमानदारीक ग्लैमर’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) अंक ४ केर कथा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४३७. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) अंक ४ केर कथा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४३८. ‘इमानदारीक ग्लैमर’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) अंक ४ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४३९. ‘इमानदारीक ग्लैमर’मे कथाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) कथाक रूप अंक ४ केर कथा कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४४०. ‘इमानदारीक ग्लैमर’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं अंक ४ केर कथा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5072 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ४ केर पद्य भाग)

४४१. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) विविध

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४४२. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) विविध

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४४३. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'कें पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) विविध

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४४४. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४४५. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) विविध

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४४६. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) विविध

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४४७. '(अंक ४ केर पद्य भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) विविध

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४४८. '(अंक ४ केर पद्य भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४४९. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पद्यक रूप विविध कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४५०. ‘(अंक ४ केर पद्य भाग)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं विविध धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5073 : विदेह-सदेह 4 — -- — (अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)

४५१. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४५२. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४५३. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’कैं संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४५४. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४५५. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४५६. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४५७. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४५८. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४५९. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४६०. ‘(अंक ४ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5074 : विदेह-सदेह 4 — प्रीति — अरिपन (कोहबर)

४६१. ‘अरिपन (कोहबर)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४६२. ‘अरिपन (कोहबर)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४६३. ‘अरिपन (कोहबर)’कैँ मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४६४. ‘अरिपन (कोहबर)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४६५. ‘अरिपन (कोहबर)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४६६. ‘अरिपन (कोहबर)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४६७. ‘अरिपन (कोहबर)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४६८. ‘अरिपन (कोहबर)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४६९. ‘अरिपन (कोहबर)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४७०. ‘अरिपन (कोहबर)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5075 : विदेह-सदेह 4 — -- — सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)

४७१. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४७२. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४७३. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’कैँ संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४७४. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४७५. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४७६. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४७७. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४७८. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४७९. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४८०. ‘सप्तक, आरोह-अवरोह (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5076 : विदेह-सदेह 4 — -- — बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

४८१. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) मैथिली लोककथा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४८२. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) मैथिली लोककथा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४८३. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) मैथिली लोककथा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४८४. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक मैथिली लोककथा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४८५. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) मैथिली लोककथा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४८६. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) मैथिली लोककथा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४८७. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) मैथिली लोककथा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४८८. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) मैथिली लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४८९. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) बालानां कृतेक रूप मैथिली लोककथा कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४९०. ‘बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ मैथिली लोककथा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5077 : विदेह-सदेह 4 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ३)

४९१. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४९२. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४९३. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’कैँ पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४९४. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४९५. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४९६. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४९७. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४९८. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४९९. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५००. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5078 : विदेह-सदेह 4 — -- — (भाग ३)

५०१. ‘(भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५०२. ‘(भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५०३. ‘(भाग ३)’कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५०४. ‘(भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५०५. ‘(भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५०६. ‘(भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५०७. ‘(भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५०८. ‘(भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५०९. ‘(भाग ३)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५१०. ‘(भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5079 : विदेह-सदेह 4 — -- — यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)

५११. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५१२. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५१३. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’कैँ भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५१४. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५१५. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५१६. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५१७. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५१८. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५१९. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५२०. ‘यूनिकोड, ब्राउजर (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5080 : विदेह-सदेह 4 — -- — स्वर, उदात्त (भाग २)

५२१. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५२२. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५२३. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’कैं रचना लिखबासँ पहिने... रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५२४. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५२५. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५२६. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५२७. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५२८. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५२९. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’मे रचना लिखबासँ पहिने...क रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५३०. ‘स्वर, उदात्त (भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5081 : विदेह-सदेह 4 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ३)

५३१. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५३२. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५३३. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५३४. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५३५. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५३६. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५३७. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५३८. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५३९. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५४०. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5082 : विदेह-सदेह 4 — गजेन्द्र ठाकुर — दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ

५४१. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५४२. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५४३. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’कैँ संपादकीय रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५४४. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक स्थानीय इतिहास-प्रेरणा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५४५. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५४६. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५४७. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५४८. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५४९. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’मे संपादकीयक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संपादकीयक रूप स्थानीय इतिहास-प्रेरणा कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५५०. ‘दरभंगा यात्रा, नव स्तंभ’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5083 : विदेह-सदेह 4 — -- — उपासना (भाग ४)

५५१. ‘उपासना (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५५२. ‘उपासना (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५५३. ‘उपासना (भाग ४)’कैं अंग्रेजी-पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५५४. ‘उपासना (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक प्रवासी स्तंभक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५५५. ‘उपासना (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५५६. ‘उपासना (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५५७. ‘उपासना (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५५८. ‘उपासना (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) प्रवासी स्तंभक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५५९. ‘उपासना (भाग ४)’मे अंग्रेजी-पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक अनुवाद कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५६०. ‘उपासना (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय २ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. **(A) चौबिटया पर (पृ. १-३)** — सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना “चौबिटया पर (पृ. १-३)” रूपमे देल अछि।

२. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३. **(C) कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

४. **(D) जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी** — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी” अछि।

५. **(A) जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्द्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्द्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

६. **(B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा कथा** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८. **(D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०. **(B) कुमार मनोज कश्यपक “चौबिटया पर (पृ. १-३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी; केन्द्रीय सचिवालय; करुण; बूर्द्यू शैक्षिक पूँजी; नव्य-न्याय मिथ्या व्याप्ति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११. **(A) एकटा आर रबि (पृ. ४-८)** — सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” रूपमे देल अछि।

१२. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३. **(C) अनुदित कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

१४. **(D) जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा** — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा” अछि।

१५. **(A) जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१६. **(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८. **(D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०. **(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “एकटा आर रबि (पृ. ४-८)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “जन्म: 18.04.1965, मिहषी, सहरसा; बेन्यामिन अनुवादकेँ पाठोत्तर जीवन; करुण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१. **(A) व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)** — सूचकांकमे कुसुम ठाकुरक रचना “व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)” रूपमे देल अछि।

२२. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३. **(C) कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२४. **(D) नारी कथाकार** — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

२५. **(A) नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२६. **(B) लेखक कुसुम ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०. (B) कुसुम ठाकुरक "व्यावर्तन — पहिल खेप (पृ. ९-१६)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "नारी कथाकार; वियोग-शृंगार आ करुण; स्पिवाक नारीवादी; नव्य-न्याय प्रत्यभिज्ञा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१. (A) साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९) — सूचकांकमे सुरेश किशोर झाक रचना "साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)" रूपमे देल अछि।

३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३४. (D) मध्यमवर्गीय पारिवारिक — टिप्पणीक पहिल संकेत "मध्यमवर्गीय पारिवारिक" अछि।

३५. (A) मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३६. (B) लेखक सुरेश किशोर झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०. (B) सुरेश किशोर झाक "साथी दुखमे न कोइ (पृ. १७-२९)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "मध्यमवर्गीय पारिवारिक; करुण; लुकाच आलोचनात्मक यथार्थवाद; नव्य-न्याय व्याप्ति" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१. (A) अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५) — सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)" रूपमे देल अछि।

४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३. (C) मौलिक कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप मौलिक कथा अछि।

४४. (D) वीर आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ करुण" अछि।

४५. (A) वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४६. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा मौलिक कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८. (D) ई पाठ मौलिक कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०. (B) डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "अवसरक निमन्त्रण (पृ. ३०-३५)" प्रविष्टि गद्य, मौलिक कथा आ "वीर आ करुण; सार्त्र कर्म-स्वातन्त्र्य आ भाग्यक टकराव" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१. (A) सअँगर (पृ. ३६-४४) — सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना "सअँगर (पृ. ३६-४४)" रूपमे देल अछि।

५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३. (C) अनुदित कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

५४. (D) कोङ्कणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत "कोङ्कणीसँ मैथिली" अछि।

५५. (A) कोङ्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोङ्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५६. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८. (D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६०. (B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “सअॅगर (पृ. ३६-४४)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; बेन्जामिन अनुवाद-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६१. (A) नागपंचमी (पृ. ४५-४९) — सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क रचना “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” रूपमे देल अछि।

६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६३. (C) अनुदित कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित कथा अछि।

६४. (D) कोङ्कणीसँ मैथिली — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोङ्कणीसँ मैथिली” अछि।

६५. (A) कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

६६. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद), विधा गद्य, उप-विधा अनुदित कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६८. (D) ई पाठ अनुदित कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७०. (B) डॉ. शम्भु कुमार सिंह (अनुवाद)क “नागपंचमी (पृ. ४५-४९)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित कथा आ “कोङ्कणीसँ मैथिली; अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान; विदेहक समावेशी साहित्य-सूची” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७१. (A) प्राथमिकता (पृ. ५०-५२) — सूचकांकमे अनमोल झाक रचना “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” रूपमे देल अछि।

७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

७४. (D) शान्त आ बौद्धिक — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ बौद्धिक” अछि।

७५. (A) शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

७६. (B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८०. (B) अनमोल झाक “प्राथमिकता (पृ. ५०-५२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ बौद्धिक; सार्त्रक अस्तित्व-पहिने-सार सिद्धान्त; चयनहि पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८१. (A) एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२) — सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)” रूपमे देल अछि।

८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

८४. (D) जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर" अछि।

८५. (A) जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

८६. (B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९०. (B) मिथिलेश कुमार झाक "एडवांस युग मे (पृ. ५१-५२)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "जन्म: १२-०१-१९७०, मनपौर; हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन बहुभाषिकता; अंग्रेजी-मैथिली मिश्रण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९१. (A) गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९) — सूचकांकमे पालन झाक रचना "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)" रूपमे देल अछि।

९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

९४. (D) करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण" अछि।

९५. (A) करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

९६. (B) लेखक पालन झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१००. (B) पालन झाक "गरीबक जिन्दगी (पृ. ५३-५९)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "करुण; मार्क्स आ आंबेडकर वर्ग-जाति अन्तर्सम्बन्ध; नव्य-न्याय अभाव" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०१. (A) लाल काकी (पृ. ६०-६३) — सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना "लाल काकी (पृ. ६०-६३)" रूपमे देल अछि।

१०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१०४. (D) नारी कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कथाकार" अछि।

१०५. (A) नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१०६. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११०. (B) कामिनी कामायनीक “लाल काकी (पृ. ६०-६३)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शृंगार; बोवुआरक अदृश्य स्त्री-विचार; नारीवादी पुनर्पहिचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१११. (A) बहीन (पृ. ६४-७२) — सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “बहीन (पृ. ६४-७२)” रूपमे देल अछि।

११२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

११४. (D) दलित कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित कथाकार” अछि।

११५. (A) दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

११६. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२०. (B) जगदीश प्रसाद मंडलक “बहीन (पृ. ६४-७२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “दलित कथाकार; वात्सल्य आ करुण; आंबेडकरक दृष्टिमे दलित स्त्रीक दोहर दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२१. (A) कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८) — सूचकांकमे साकेतानन्दक रचना “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” रूपमे देल अछि।

१२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१२४. (D) संस्कृत शीर्षक — टिप्पणीक पहिल संकेत “संस्कृत शीर्षक” अछि।

१२५. (A) संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१२६. (B) लेखक साकेतानन्द, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३०. (B) साकेतानन्दक “कृतं न् म ये (पृ. ७३-७८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “संस्कृत शीर्षक; शान्त आ करुण; बाख्तिन अन्तर-पाठीयता; कर्म-दर्शन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३१. (A) प्रियंका (पृ. ७९-८३) — सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक रचना “प्रियंका (पृ. ७९-८३)” रूपमे देल अछि।

१३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१३४. (D) शृंगार आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ करुण” अछि।

१३५. (A) शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१३६. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४०. (B) सुजीत कुमार झाक "प्रियंका (पृ. ७९-८३)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "शृंगार आ करुण; नारीवादी नाम-राजनीति — प्रियंका पहचानक रूपमे" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४१. (A) पछता रोटी (पृ. ८४-८९) — सूचकांकमे आशीष चमनक रचना "पछता रोटी (पृ. ८४-८९)" रूपमे देल अछि।

१४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१४४. (D) मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र — टिप्पणीक पहिल संकेत "मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र" अछि।

१४५. (A) मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१४६. (B) लेखक आशीष चमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५०. (B) आशीष चमनक "पछता रोटी (पृ. ८४-८९)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "मूल नाम: आशीष कुमार मिश्र; करुण आ बीभत्स; सार्त्रक मिथ्या-आस्था" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५१. (A) जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०) — सूचकांकमे आशीष कुमार चौधरीक रचना "जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)" रूपमे देल अछि।

१५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१५४. (D) वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर" अछि।

१५५. (A) वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१५६. (B) लेखक आशीष कुमार चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६०. (B) आशीष कुमार चौधरीक "जीत गयो मोर काहा (पृ. ९०)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "वीर; विजय-कथा; स्वामित्व-दाबी" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६१. (A) बकलेल (पृ. ९१-९५) — सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना "बकलेल (पृ. ९१-९५)" रूपमे देल अछि।

१६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१६४. (D) पिछड़ल-वर्ग/दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत "पिछड़ल-वर्ग/दलित" अछि।

१६५. (A) पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१६६. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७०. (B) दुर्गानन्द मंडलक "बकलेल (पृ. ९१-९५)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "पिछड़ल-वर्ग/दलित; करुण आ रौद्र; फैनोन औपनिवेशिक अलगाव आ आंबेडकर जाति-बहिष्कार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७१. (A) छूआ-छूत (पृ. ९६) — सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना "छूआ-छूत (पृ. ९६)" रूपमे देल अछि।

१७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१७४. (D) दलित चेतना — टिप्पणीक पहिल संकेत "दलित चेतना" अछि।

१७५. (A) दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१७६. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८०. (B) कपिलेश्वर राउतक "छूआ-छूत (पृ. ९६)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "दलित चेतना; रौद्र आ करुण; आंबेडकरक जाति-उन्मूलन; दुर्गा-पूजा बहिष्कार-कथा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८१. (A) रखबार (पृ. ९७-१०३) — सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना "रखबार (पृ. ९७-१०३)" रूपमे देल अछि।

१८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१८४. (D) शान्त आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ करुण" अछि।

१८५. (A) शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१८६. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९०. (B) राजदेव मंडलक "रखबार (पृ. ९७-१०३)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "शान्त आ करुण; ग्राम्शीक जैविक बौद्धिक; समुदाय-रक्षक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९१. (A) समय-संकेत (पृ. १०४-१०५) — सूचकांकमे शरदिन्दु चौधरीक रचना "समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)" रूपमे देल अछि।

१९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

१९४. (D) शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त" अछि।

१९५. (A) शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१९६. (B) लेखक शरदिन्दु चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२००. (B) शरदिन्दु चौधरीक "समय-संकेत (पृ. १०४-१०५)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "शान्त; बेन्जामिनक एखन-क्षण; काल-बोध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०१. (A) छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७) — सूचकांकमे विजय-हरीशक रचना "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" रूपमे देल अछि।

२०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०३. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२०४. (D) मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र — टिप्पणीक पहिल संकेत "मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र" अछि।

२०५. (A) मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२०६. (B) लेखक विजय-हरीश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०८. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१०. (B) विजय-हरीशक "छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा (पृ. १०६-१०७)" प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ "मूल नाम: बिजय कुमार मिश्र; हास्य, करुण आ वीर; चेखव कथन-संक्षेप; नव्य-न्याय तर्क-संक्षेप" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२११. (A) अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९) — सूचकांकमे सुनीता ठाकुरक रचना "अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)" रूपमे देल अछि।

२१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२१४. (D) नारी कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कथाकार" अछि।

२१५. (A) नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२१६. (B) लेखक सुनीता ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२०. (B) सुनीता ठाकुरक "अपहरणक सच (पृ. १०८-१०९)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "नारी कथाकार; रौद्र आ करुण; नारीवादी अपराध-कथा; स्त्रीक सक्रियता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२१. (A) पंचैति (पृ. ११०-११२) — सूचकांकमे राकेश कुमार रोशनक रचना "पंचैति (पृ. ११०-११२)" रूपमे देल अछि।

२२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२२४. (D) करुण आ रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ रौद्र" अछि।

२२५. (A) करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२२६. (B) लेखक राकेश कुमार रोशन, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३०. (B) राकेश कुमार रोशनक “पंचैति (पृ. ११०-११२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “करुण आ रौद्र; ग्राम्शीक स्थानीय प्रभुत्व; पंचैती शक्ति-संरचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३१. (A) बाट (पृ. ११३-११७) — सूचकांकमे हेमचन्द्र झाक रचना “बाट (पृ. ११३-११७)” रूपमे देल अछि।

२३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२३४. (D) शान्त आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण” अछि।

२३५. (A) शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२३६. (B) लेखक हेमचन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४०. (B) हेमचन्द्र झाक “बाट (पृ. ११३-११७)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “शान्त आ करुण; हाइडेगरक जगत-स्थित अस्तित्व; बाट जीवन-रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४१. (A) पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९) — सूचकांकमे सुभाष चन्द्र यादवक रचना “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” रूपमे देल अछि।

२४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२४४. (D) पिछड़ल-वर्ग — टिप्पणीक पहिल संकेत “पिछड़ल-वर्ग” अछि।

२४५. (A) पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२४६. (B) लेखक सुभाष चन्द्र यादव, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५०. (B) सुभाष चन्द्र यादवक “पति-पत्नी संवाद (पृ. ११८-११९)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “पिछड़ल-वर्ग; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन संवादवाद; घरेलू समानता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह ४क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५१. (A) जीत (पृ. १२०-१२८) — सूचकांकमे मानेश्वर मनुजक रचना “जीत (पृ. १२०-१२८)” रूपमे देल अछि।

२५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२५४. (D) वीर आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

२५५. (A) वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२५६. (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६०. (B) मानेश्वर मनुजक “जीत (पृ. १२०-१२८)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “वीर आ करुण; अम्बेडकर सामाजिक गतिशीलता; ग्राम्शी स्थितिगत संघर्ष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६१. (A) धुमिग जर (पृ. १२९-१३२) — सूचकांकमे परमेश्वर कापड़िक रचना “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” रूपमे देल अछि।

२६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२६४. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल” अछि।

२६५. (A) नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२६६. (B) लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७०. (B) परमेश्वर कापड़िक “धुमिग जर (पृ. १२९-१३२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “नेपाल; रौद्र आ वीर; विदेहक सीमा-पार मैथिली” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७१. (A) जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७) — सूचकांकमे ऋषि वशिष्ठक रचना “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” रूपमे देल अछि।

२७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७३. (C) कथा/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/व्यंग्य अछि।

२७४. (D) हास्य आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ वीर” अछि।

२७५. (A) हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२७६. (B) लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७८. (D) ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८०. (B) ऋषि वशिष्ठक “जुआनी जिन्दाबाद (पृ. १३३-१३७)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ वीर; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; युवा विद्रोह” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८१. (A) पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१) — सूचकांकमे शिवशंकर श्रीनिवासक रचना “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” रूपमे देल अछि।

२८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

२८४. (D) जन्म: लोहना, मधुबनी — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: लोहना, मधुबनी” अछि।

२८५. (A) जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्द्दू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्द्दू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२८६. (B) लेखक शिवशंकर श्रीनिवास, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९०. (B) शिवशंकर श्रीनिवासक “पण्डित ओ हुनक पुत्र (पृ. १३८-१४१)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: लोहना, मधुबनी; करुण आ शान्त; बूर्द्दू सांस्कृतिक पूँजी-संक्रमण; पीढ़ी-अन्तर सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९१. (A) अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३) — सूचकांकमे श्यामल सुमनक रचना “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” रूपमे देल अछि।

२९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९३. (C) कथा/व्यंग्य — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/व्यंग्य अछि।

२९४. (D) हास्य आ रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ रौद्र” अछि।

२९५. (A) हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२९६. (B) लेखक श्यामल सुमन, विधा गद्य, उप-विधा कथा/व्यंग्य — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९८. (D) ई पाठ कथा/व्यंग्यक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३००. (B) श्यामल सुमनक “अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति (पृ. १४२-१४३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/व्यंग्य आ “हास्य आ रौद्र; संस्कृतनिष्ठ भाषा-स्तर आ राजनीतिक व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०१. (A) इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७) — सूचकांकमे मनोज झा 'मुक्ति'क रचना “इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)” रूपमे देल अछि।

३०२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३०४. (D) रौद्र आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण” अछि।

३०५. (A) रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३०६. (B) लेखक मनोज झा 'मुक्ति', विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१०. (B) मनोज झा 'मुक्ति'क "इज्जतिक खातिर (पृ. १४४-१४७)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "रौद्र आ करुण; अम्बेडकर इज्जत-संस्कृतिक आलोचना; इज्जत-आधारित सामाजिक नियन्त्रण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३११. (A) बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१) — सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना "बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)" रूपमे देल अछि।

३१२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१३. (C) बाल-कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप बाल-कथा अछि।

३१४. (D) वात्सल्य आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत "वात्सल्य आ वीर" अछि।

३१५. (A) वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३१६. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा बाल-कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१८. (D) ई पाठ बाल-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२०. (B) जगदीश प्रसाद मंडलक "बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा — ६ कथा (पृ. १४८-१५१)" प्रविष्टि गद्य, बाल-कथा आ "वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; मैथिली सामुदायिक मूल्य-संक्रमण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२१. (A) माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६) — सूचकांकमे डा. सुरेश लाभक रचना "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)" रूपमे देल अछि।

३२२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३२४. (D) करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण" अछि।

३२५. (A) करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३२६. (B) लेखक डा. सुरेश लाभ, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३०. (B) डा. सुरेश लाभक "माई गे! भूख लागल हए (पृ. १५२-१५६)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "करुण; मार्क्स आ अम्बेडकर भूख-राजनीति; नव्य-न्याय अन्वय-व्यतिरेक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३१. (A) साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९) — सूचकांकमे श्री ललन प्रसाद ठाकुरक रचना "साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)" रूपमे देल अछि।

३३२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३३. (C) कव्वाली — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कव्वाली अछि।

३३४. (D) जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर" अछि।

३३५. (A) जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३३६. (B) लेखक श्री ललन प्रसाद ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कव्वाली — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३८. (D) ई पाठ कव्वालीक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४०. (B) श्री ललन प्रसाद ठाकुरक "साढ़ूनामा (कव्वाली, तेसर कड़ी) (पृ. १५७-१५९)" प्रविष्टि गद्य, कव्वाली आ "जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर; हास्य आ शृंगार; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी; मैथिली-उर्दू लोक-संगम" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४१. (A) परहेज (पृ. १६०) — सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना "परहेज (पृ. १६०)" रूपमे देल अछि।

३४२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३४४. (D) विदेह सहायक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह सहायक सम्पादक" अछि।

३४५. (A) विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३४६. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५०. (B) उमेश मंडलक "परहेज (पृ. १६०)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "विदेह सहायक सम्पादक; शान्त आ करुण; अम्बेडकर untouchability; चिकित्सा-सामाजिक समानान्तर" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५१. (A) कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७) — सूचकांकमे कमला चौधरीक रचना "कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)" रूपमे देल अछि।

३५२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३५४. (D) नारी कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत "नारी कथाकार" अछि।

३५५. (A) नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३५६. (B) लेखक कमला चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६०. (B) कमला चौधरीक "कथा-गुणनफल (पृ. १६१-१६७)" प्रविष्टि गद्य, कथा आ "नारी कथाकार; अद्भुत; कथा-स्वभाव-विमर्श; बाख्तिन उपन्यासधर्मिता; गणितीय रूपक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६१. (A) छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३) — सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना "छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)" रूपमे देल अछि।

३६२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६३. (C) कथा/नाटक — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा/नाटक अछि।

३६४. (D) भिखारी ठाकुर परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी ठाकुर परम्परा” अछि।

३६५. (A) भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३६६. (B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा कथा/नाटक — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६८. (D) ई पाठ कथा/नाटकक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७०. (B) बेचन ठाकुरक “छीनरदेवी (पृ. १६८-१७३)” प्रविष्टि गद्य, कथा/नाटक आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; लोकनाट्य प्रारूप; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी — दोहरा दमन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७१. (A) सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२) — सूचकांकमे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक रचना “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” रूपमे देल अछि।

३७२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७३. (C) कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप कथा अछि।

३७४. (D) जन्म: ८ फरवरी १९६७ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ८ फरवरी १९६७” अछि।

३७५. (A) जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३७६. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७८. (D) ई पाठ कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८०. (B) डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “सखी कुस्ती (पृ. १७४-१८२)” प्रविष्टि गद्य, कथा आ “जन्म: ८ फरवरी १९६७; दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एससी., एम.फिल.; हास्य आ वीर; बाख्तिन प्रतिस्पर्धात्मक संवाद; प्रतिस्पर्धी मैत्री” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८१. (A) सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९) — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” रूपमे देल अछि।

३८२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८३. (C) उपन्यास अंश — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप उपन्यास अंश अछि।

३८४. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

३८५. (A) विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३८६. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा उपन्यास अंश — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८८. (D) ई पाठ उपन्यास अंशक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९०. (B) गजेन्द्र ठाकुरक “सहस्र शीर्ष — उपन्यास अंश (पृ. १८३-१८९)” प्रविष्टि गद्य, उपन्यास अंश आ “विदेह सम्पादक; अद्भुत; वैदिक-आधुनिक समन्वय; जायस यूलिसिस parallel; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९१. (A) किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-) — सूचकांकमे विज्ञानन्द झाक रचना “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” रूपमे देल अछि।

३९२. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९३. (C) किशोर-कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप किशोर-कथा अछि।

३९४. (D) विदेह भाषा-सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह भाषा-सम्पादक” अछि।

३९५. (A) विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३९६. (B) लेखक विज्ञानन्द झा, विधा गद्य, उप-विधा किशोर-कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९७. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९८. (D) ई पाठ किशोर-कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९९. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४००. (B) विज्ञानन्द झाक “किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा (पृ. १९०-)” प्रविष्टि गद्य, किशोर-कथा आ “विदेह भाषा-सम्पादक; वात्सल्य आ वीर; बेन्यामिन शिक्षण-प्रक्रिया; भाषा-सम्पादक आ कथाकार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 4क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०१. (A) दोसर किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ दोसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४०२. (A) दोसर किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४०३. (A) दोसर किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार दोसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४०४. (A) शीर्षक दोसर किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४०५. (A) दोसर किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दोसर किस्त सँ बनैत अछि।

४०६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४०७. (A) दोसर किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दोसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४०८. (A) दोसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४०९. (A) शोध-लेखक रूप दोसर किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४१०. (A) उत्तरकेँ दोसर किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४११. (A) चारिम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४१२. (A) चारिम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४१३. (A) चारिम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४१४. (A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४१५. (A) चारिम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

४१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४१७. (A) चारिम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४१८. (A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४१९. (A) उपन्यासक रूप चारिम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४२०. (A) उत्तरकेँ चारिम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४२१. (A) चारिम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४२२. (A) चारिम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४२३. (A) चारिम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४२४. (A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४२५. (A) चारिम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

४२६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४२७. (A) चारिम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४२८. (A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४२९. (A) महाकाव्यक रूप चारिम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४३०. (A) उत्तरकैँ चारिम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४३१. (A) अंक ४ केर कथा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ अंक ४ केर कथा सँ जोड़ैत अछि।

४३२. (A) अंक ४ केर कथा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४३३. (A) अंक ४ केर कथा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार अंक ४ केर कथा धरि सीमित रहैत अछि।

४३४. (A) शीर्षक अंक ४ केर कथा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४३५. (A) अंक ४ केर कथा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल अंक ४ केर कथा सँ बनैत अछि।

४३६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४३७. (A) अंक ४ केर कथा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ अंक ४ केर कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४३८. (A) अंक ४ केर कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४३९. (A) कथाक रूप अंक ४ केर कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४४०. (A) उत्तरकैँ अंक ४ केर कथा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४४१. (A) विविध — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ विविध सँ जोड़ैत अछि।

४४२. (A) विविध — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४४३. (A) विविध — सुरक्षित पठन स्रोत-सार विविध धरि सीमित रहैत अछि।

४४४. (A) शीर्षक विविध दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४४५. (A) विविध — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल विविध सँ बनैत अछि।

४४६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४४७. (A) विविध — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ विविधक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४४८. (A) विविधक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४४९. (A) पद्यक रूप विविध कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४५०. (A) उत्तरकैँ विविध धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४५१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

४५२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४५३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

४५४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४५५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

४५६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४५७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४५८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४५९. (A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४६०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४६१. (A) -- — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

४६२. (A) -- — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४६३. (A) -- — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

४६४. (A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४६५. (A) -- — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

४६६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४६७. (A) -- — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

४६८. (A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४६९. (A) मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४७०. (A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४७१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

४७२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४७३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

४७४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४७५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

४७६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४७७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४७८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४७९. (A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४८०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४८१. (A) मैथिली लोककथा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मैथिली लोककथा सँ जोड़ैत अछि।

४८२. (A) मैथिली लोककथा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४८३. (A) मैथिली लोककथा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मैथिली लोककथा धरि सीमित रहैत अछि।

४८४. (A) शीर्षक मैथिली लोककथा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४८५. (A) मैथिली लोककथा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मैथिली लोककथा सँ बनैत अछि।

४८६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४८७. (A) मैथिली लोककथा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मैथिली लोककथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४८८. (A) मैथिली लोककथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४८९. (A) बालानां कृतेक रूप मैथिली लोककथा कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४९०. (A) उत्तरकैँ मैथिली लोककथा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४९१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

४९२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४९३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

४९४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४९५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

४९६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४९७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४९८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४९९. (A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५००. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५०१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५०२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५०३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५०४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५०५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५०६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५०७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५०८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५०९. (A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५१०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५११. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५१२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५१३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५१४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५१५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५१६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५१७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५१८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५१९. (A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५२०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५२१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५२२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५२३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५२४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५२५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५२६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५२७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५२८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५२९. (A) रचना लिखबासँ पहिने...क रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५३०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५३१. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५३२. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५३३. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५३४. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५३५. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५३६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५३७. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५३८. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५३९. (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५४०. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५४१. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ स्थानीय इतिहास-प्रेरणा सँ जोड़ैत अछि।

५४२. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५४३. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा — सुरक्षित पठन स्रोत-सार स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित रहैत अछि।

५४४. (A) शीर्षक स्थानीय इतिहास-प्रेरणा दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५४५. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल स्थानीय इतिहास-प्रेरणा सँ बनैत अछि।

५४६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५४७. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणा — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५४८. (A) स्थानीय इतिहास-प्रेरणाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५४९. (A) संपादकीयक रूप स्थानीय इतिहास-प्रेरणा कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५५०. (A) उत्तरकैँ स्थानीय इतिहास-प्रेरणा धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५५१. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ प्रवासी स्तंभक अनुवाद सँ जोड़ैत अछि।

५५२. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५५३. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद — सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित रहैत अछि।

५५४. (A) शीर्षक प्रवासी स्तंभक अनुवाद दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५५५. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी स्तंभक अनुवाद सँ बनैत अछि।

५५६. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५५७. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवाद — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी स्तंभक अनुवादक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५५८. (A) प्रवासी स्तंभक अनुवादक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५५९. (A) अंग्रेजी-पद्यक रूप प्रवासी स्तंभक अनुवाद कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५६०. (A) उत्तरकैँ प्रवासी स्तंभक अनुवाद धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय ३ : विदेह-सदेह ५ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड १ : विदेह-सदेह ५ — विहनि कथा

१. विदेह-सदेह ५ क मुख्य आलेखक शीर्षक की?

(A) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

(B) नाट्य समीक्षाशास्त्र

(C) पद्य समीक्षाशास्त्र

(D) कोनो नहि

२. विदेह-सदेह ५ मे मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक की?

(A) सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा

(B) नाट्य समीक्षा

(C) पद्य समीक्षा

(D) कोनो नहि

३. विदेह-सदेह ५ मे ज्योति सुनीत चौधरीक कोन विहनि कथा अछि?

(A) नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता आदि

(B) भाग रौ

(C) संकर्षण

(D) कोनो नहि

४. विदेह-सदेह ५ मे दुर्गानन्द मंडलक विहनि कथाक नाम की?

(A) किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम, प्रदूषण

(B) भाग रौ

(C) संकर्षण

(D) कोनो नहि

५. विदेह-सदेह ५ मे धीरेन्द्र कुमारक विहनि कथाक नाम की?

(A) राम-कथाक समापन

(B) अन्हारक विरोध मे

(C) दूधबेचनी

(D) कोनो नहि

६. विदेह-सदेह ५ मे कपिलेश्वर राउतक विहनि कथाक नाम की?

(A) कलियुगक निर्णए

(B) गामक गाछी

(C) बसात

(D) कोनो नहि

७. 'विहनि कथा' शब्दक मूल भाव की?

(A) अति-संक्षिप्त बीज-सम कथा

(B) दीर्घ उपन्यास

(C) नाटक

(D) कोनो नहि

८. गजेन्द्र ठाकुरक आलेख अनुसार मैथिली विहनि कथामे आएल कथ्य-शिल्पक विशालता कोना अछि?

(A) सीमित

(B) आह्लादकारी

(C) निरर्थक

(D) अनुपस्थित

९. विदेह-सदेह ५ कोन अंक-शृंखलासँ रचना समेटने अछि?

(A) अंक ५१-१००

(B) अंक १-२५

(C) अंक १०१-११०

(D) अंक ३३३-३५०

१०. विदेह-सदेह ५ क ISBN की?

(A) 978-93-80538-63-1

(B) 978-93-80538-64-8

(C) 978-93-80538-65-5

(D) कोनो नहि

११. विदेह-सदेह ५ क मूल्य की?

(A) १५० टाका

(B) १०० टाका

(C) २०० टाका

(D) ५० टाका

१२. विदेह-सदेह ५ क प्रथम संस्करण कोन साल आएल?

(A) २०१२

(B) २००८

(C) २०१६

(D) २०२०

१३. विदेह-सदेह ५ मे 'मैथिल बिआह' शीर्षक रचना के लिखलनि?

(A) ज्योति सुनीत चौधरी

(B) दुर्गानन्द मंडल

(C) कपिलेश्वर राउत

(D) कोनो नहि

१४. विहनि कथा आ लघुकथा (सदेह ५ आ ६) मे की भेद अछि?

(A) कोनो भेद नहि

(B) विहनि अति-संक्षिप्त; लघुकथा कनेक बेसी विस्तृत

(C) दुनू एके

(D) अर्थहीन

१५. विदेह-सदेह ५ क प्रकाशक के छथि?

(A) श्रुति प्रकाशन

(B) ऑक्सफोर्ड

(C) पेंगुइन

(D) कोनो नहि

खण्ड 1580 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर: (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स...

१६. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सम्पादक

२०. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३. “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आलोचना निबन्ध आ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४. गजेन्द्र ठाकुरक “(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ व...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५. खण्ड 1580क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समी..." प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा आ "विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1581 : विदेह-सदेह 5 — मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण): (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि...

२६. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)..."क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)..." पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता

३०. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...”कें विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख)...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 1581क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क “(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भ...” प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार आ “विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1582 : विदेह-सदेह 5 — ज्योति सुनीत चौधरी: नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानि...

३६. ज्योति सुनीत चौधरीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार

४०. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४. ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 1582क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ज्योति सुनीत चौधरीक “नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1583 : विदेह-सदेह 5 — दुर्गानन्द मंडल: पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी

४६. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. दुर्गानन्द मंडलक "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित

५०. दुर्गानन्द मंडलक "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी" प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. दुर्गानन्द मंडलक "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी"केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४. दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 1583क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दुर्गानन्द मंडलक “पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1584 : विदेह-सदेह 5 — कपिलेश्वर राउत: कलियुगक निर्णए

५६. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कलियुगक निर्णए

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. “कलियुगक निर्णए”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. “कलियुगक निर्णए”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित

६०. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. “कलियुगक निर्णए”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. “कलियुगक निर्णए”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४. कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 1584क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कपिलेश्वर राउतक “कलियुगक निर्णए” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकैं जाति-युग रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1585 : विदेह-सदेह 5 — धीरेश्वर कुमार: राम-कथाक समापन

६६. धीरेश्वर कुमारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) राम-कथाक समापन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. “राम-कथाक समापन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. “राम-कथाक समापन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ अद्भुत

७०. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. “राम-कथाक समापन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. “राम-कथाक समापन”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४. धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 1585क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) धीरेश्वर कुमारक “राम-कथाक समापन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1586 : विदेह-सदेह 5 — राजदेव मंडल: बढ़िया गप्प / ठोकर

७६. राजदेव मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बढ़िया गप्प / ठोकर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ करुण

८०. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. “बढ़िया गप्प / ठोकर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. “बढ़िया गप्प / ठोकर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४. राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 1586क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1587 : विदेह-सदेह 5 — बेचन ठाकुर: आत्महत्या / फुसिक फल

८६. बेचन ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आत्महत्या / फुसिक फल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. "आत्महत्या / फुसिक फल"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. "आत्महत्या / फुसिक फल"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. बेचन ठाकुरक "आत्महत्या / फुसिक फल" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भिखारी ठाकुर परम्परा

९०. बेचन ठाकुरक "आत्महत्या / फुसिक फल" प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. "आत्महत्या / फुसिक फल"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. बेचन ठाकुरक "आत्महत्या / फुसिक फल" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. "आत्महत्या / फुसिक फल"केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९४. बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 1587क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1588 : विदेह-सदेह 5 — राम प्रवेश मंडल: पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-म...

९६. राम प्रवेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य

१००. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राम प्रवेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४. राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 1588क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1589 : विदेह-सदेह 5 — भारत भूषण झा: प्रेम

१०६. भारत भूषण झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रेम

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. “प्रेम”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. “प्रेम”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. भारत भूषण झाक “प्रेम” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार

११०. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. “प्रेम”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. भारत भूषण झाक “प्रेम” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. “प्रेम”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४. भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 1589क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1590 : विदेह-सदेह 5 — मानेश्वर मनुज: ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-...

११६. मानेश्वर मनुजक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles

१२०. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४. मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकु...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 1590क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1591 : विदेह-सदेह 5 — उमेश मंडल: दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी /...

१२६. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..."क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. उमेश मंडलक "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..." पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सह-सम्पादक

१३०. उमेश मंडलक "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. उमेश मंडलक "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..." रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. "दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन..."केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४. उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 1591क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1592 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. शेफालिका वर्मा: आनक बड़ाइ

१३६. डॉ. शेफालिका वर्माक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) आनक बड़ाइ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. “आनक बड़ाइ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. “आनक बड़ाइ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्य अकादेमी

१४०. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. “आनक बड़ाइ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. “आनक बड़ाइ”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४. डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 1592क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1593 : विदेह-सदेह 5 — जगदीश प्रसाद मंडल: थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत...

१४६. जगदीश प्रसाद मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित

१५०. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५४. जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 1593क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1594 : विदेह-सदेह 5 — रामकृष्ण मंडल 'छोटू': बाबूजी लेल

१५६. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाबूजी लेल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. “बाबूजी लेल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. “बाबूजी लेल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य उलट — child-for-father

१६०. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. “बाबूजी लेल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रामकृष्ण मंडल 'छोटू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. “बाबूजी लेल”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६४. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 1594क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क “बाबूजी लेल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1595 : विदेह-सदेह 5 — रामलोचन ठाकुर: गिरगिट / भारत रत्न

१६६. रामलोचन ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गिरगिट / भारत रत्न

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. “गिरगिट / भारत रत्न”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. “गिरगिट / भारत रत्न”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

१७०. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. “गिरगिट / भारत रत्न”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. “गिरगिट / भारत रत्न”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७४. रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 1595क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रामलोचन ठाकुरक “गिरगिट / भारत रत्न” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1596 : विदेह-सदेह 5 — परमेश्वर कापड़ि: सतबरती

१७६. परमेश्वर कापड़िक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सतबरती

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. “सतबरती”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. “सतबरती”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल

१८०. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. “सतबरती”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. “सतबरती”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८४. परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 1596क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) परमेश्वर कापड़िक “सतबरती” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1597 : विदेह-सदेह 5 — अमरनाथ: देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट /...

१८६. अमरनाथक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता

१९०. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकs

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमरनाथ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९४. अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 1597क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकs” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1598 : विदेह-सदेह 5 — चन्द्रेश खरे: चेकिंग / कछमछी / बिसवास

१९६. चन्द्रेश खरेक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चेकिंग / कछमछी / बिसवास

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य आ शान्त

२००. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक चन्द्रेश खरे, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. “चेकिंग / कछमछी / बिसवास”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०४. चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 1598क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1599 : विदेह-सदेह 5 — रघुनाथ मुखिया: इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ...

२०६. रघुनाथ मुखियाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..."क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. रघुनाथ मुखियाक "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..." पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य

२१०. रघुनाथ मुखियाक "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. रघुनाथ मुखियाक "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..." रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. "इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह..."केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१४. रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनह...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 1599क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1600 : विदेह-सदेह 5 — ऋषि वशिष्ठ: प्रमाण-पत्र / मनमौजी

२१६. ऋषि वशिष्ठक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रमाण-पत्र / मनमौजी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

२२०. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. “प्रमाण-पत्र / मनमौजी”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२४. ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 1600क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1601 : विदेह-सदेह 5 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': फुसि नै बाजू

२२६. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) फुसि नै बाजू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. “फुसि नै बाजू”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. “फुसि नै बाजू”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शान्त

२३०. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. “फुसि नै बाजू”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. “फुसि नै बाजू”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३४. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 1601क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1602 : विदेह-सदेह 5 — मिथिलेश कुमार झा: झीक

२३६. मिथिलेश कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) झीक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. “झीक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. “झीक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शुद्ध मैथिली शब्द

२४०. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. “झीक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. “झीक”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४४. मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 1602क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1603 : विदेह-सदेह 5 — सत्येश्वर कुमार झा: लेटेस्ट

२४६. सत्येश्वर कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) लेटेस्ट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. “लेटेस्ट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. “लेटेस्ट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

२५०. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. “लेटेस्ट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. “लेटेस्ट”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५४. सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 1603क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1604 : विदेह-सदेह 5 — नवनीत कुमार झा: गाम आबह

२५६. नवनीत कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) गाम आबह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. “गाम आबह”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. “गाम आबह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ वात्सल्य

२६०. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. “गाम आबह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नवनीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. “गाम आबह”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६४. नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 1604क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1605 : विदेह-सदेह 5 — कौशल कुमार: दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन...

२६६. कौशल कुमारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शान्त आ वीर

२७०. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कौशल कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७४. कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 1605क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कौशल कुमारक “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1606 : विदेह-सदेह 5 — अनमोल झा: चेतना

२७६. अनमोल झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. “चेतना”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. “चेतना”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. अनमोल झाक “चेतना” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ शान्त

२८०. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. “चेतना”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. अनमोल झाक “चेतना” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. “चेतना”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८४. अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 1606क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनमोल झाक “चेतना” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1607 : विदेह-सदेह 5 — कुमार मनोज कश्यप: मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल प...

२८६. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर

२९०. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९४. कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीत...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 1607क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुमार मनोज कश्यपक “मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1608 : विदेह-सदेह 5 — विनीत उत्पल: श्री गुरुवै नमः

२९६. विनीत उत्पलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) श्री गुरुवै नमः

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. “श्री गुरुवै नमः”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. “श्री गुरुवै नमः”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह अनुवाद सम्पादक

३००. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. “श्री गुरुवै नमः”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. “श्री गुरुवै नमः”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०४. विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 1608क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीत उत्पलक “श्री गुरुवै नमः” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1609 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. धनाकर ठाकुर: हमरा एकर एक बायोडाटा चाही

३०६. डॉ. धनाकर ठाकुरक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमरा एकर एक बायोडाटा चाही

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

३१०. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१४. डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 1609क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. धनाकर ठाकुरक “हमरा एकर एक बायोडाटा चाही” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1610 : विदेह-सदेह 5 — आशीष अनचिन्हार: नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर

३१६. आशीष अनचिन्हारक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सहायक सम्पादक

३२०. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२४. आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 1610क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष अनचिन्हारक “नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1611 : विदेह-सदेह 5 — सतीश चन्द्र झा: नोकरी

३२६. सतीश चन्द्र झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नोकरी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. “नोकरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. “नोकरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

३३०. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. “नोकरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. “नोकरी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३४. सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 1611क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1612 : विदेह-सदेह 5 — भवनाथ झा: ऊँचका डीह / हेराफेरी

३३६. भवनाथ झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ऊँचका डीह / हेराफेरी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ व्यंग्य

३४०. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक भवनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. “ऊँचका डीह / हेराफेरी”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४४. भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 1612क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1613 : विदेह-सदेह 5 — नबोनारायण मिश्र: घमण्डक फल

३४६. नबोनारायण मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) घमण्डक फल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. “घमण्डक फल”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. “घमण्डक फल”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

३५०. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. “घमण्डक फल”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. “घमण्डक फल”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५४. नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 1613क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1614 : विदेह-सदेह 5 — राम विलास साहु: परिश्रमक भीख

३५६. राम विलास साहुक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) परिश्रमक भीख

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. “परिश्रमक भीख”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. “परिश्रमक भीख”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ व्यंग्य

३६०. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. “परिश्रमक भीख”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. “परिश्रमक भीख”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६४. राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 1614क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1615 : विदेह-सदेह 5 — मुस्नी कामत: हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण

३६६. मुस्नी कामतक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. मुस्नी कामतक "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ हास्य

३७०. मुस्नी कामतक "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण" प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मुस्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. मुस्नी कामतक "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. "हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण"केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७४. मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 1615क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1616 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. शम्भु कुमार सिंह: जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी

३७६. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ व्यंग्य

३८०. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८४. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 1616क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1617 : विदेह-सदेह 5 — संजय कुमार मंडल: अनरेजिस्टर्ड घुसखोर

३८६. संजय कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अनरेजिस्टर्ड घुसखोर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

३९०. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक संजय कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९४. संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 1617क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1618 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र: वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर...

३९६. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) सदेह ५क विशिष्ट योगदान

४००. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०४. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 1618क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगान...” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) आ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1619 : विदेह-सदेह 5 — मिथिलेश मंडल: विदेशी बाबू

४०६. मिथिलेश मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विदेशी बाबू

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. "विदेशी बाबू"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. "विदेशी बाबू"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. मिथिलेश मंडलक "विदेशी बाबू" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

४१०. मिथिलेश मंडलक "विदेशी बाबू" प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. "विदेशी बाबू"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिथिलेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. मिथिलेश मंडलक "विदेशी बाबू" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. "विदेशी बाबू"केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१४. मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 1619क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिथिलेश मंडलक “विदेशी बाबू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1620 : विदेह-सदेह 5 — प्रदीप बिहारी: सत्संगी / थापड़

४१६. प्रदीप बिहारीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सत्संगी / थापड़

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. “सत्संगी / थापड़”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. “सत्संगी / थापड़”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ रौद्र

४२०. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. “सत्संगी / थापड़”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. “सत्संगी / थापड़”कैँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२४. प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 1620क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रदीप बिहारीक “सत्संगी / थापड़” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1621 : विदेह-सदेह 5 — लक्ष्मी दास: बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी

४२६. लक्ष्मी दासक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२७. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२८. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२९. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ व्यंग्य

४३०. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३१. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३२. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३३. “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४३४. लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३५. खण्ड 1621क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लक्ष्मी दासक “बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1622 : विदेह-सदेह 5 — अमित मिश्र: इशारा / सरधुआ

४३६. अमित मिश्रक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) इशारा / सरधुआ

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३७. “इशारा / सरधुआ”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३८. “इशारा / सरधुआ”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३९. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ बीभत्स

४४०. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४१. “इशारा / सरधुआ”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४२. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४३. “इशारा / सरधुआ”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४४. अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४५. खण्ड 1622क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमित मिश्रक “इशारा / सरधुआ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1623 : विदेह-सदेह 5 — जगदानन्द झा 'मनु': मसोमात / रहस्य

४४६. जगदानन्द झा 'मनु'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मसोमात / रहस्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४७. “मसोमात / रहस्य”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४८. “मसोमात / रहस्य”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४४९. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ अद्भुत

४५०. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५१. “मसोमात / रहस्य”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५२. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५३. “मसोमात / रहस्य”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४५४. जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५५. खण्ड 1623क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदानन्द झा 'मनु'क “मसोमात / रहस्य” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1624 : विदेह-सदेह 5 — चन्दन कुमार झा: सङ्गति / अनकर दुर्गति

४५६. चन्दन कुमार झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सङ्गति / अनकर दुर्गति

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५७. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५८. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५९. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण आ व्यंग्य

४६०. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६१. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६२. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६३. “सङ्गति / अनकर दुर्गति”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४६४. चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६५. खण्ड 1624क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) चन्दन कुमार झाक “सङ्गति / अनकर दुर्गति” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1625 : विदेह-सदेह 5 — ओमप्रकाश झा: कपारक लिखल / स्पेशल परमिट

४६६. ओमप्रकाश झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कपारक लिखल / स्पेशल परमिट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६७. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६८. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४६९. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ व्यंग्य

४७०. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७१. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७२. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७३. “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४७४. ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७५. खण्ड 1625क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ओमप्रकाश झाक “कपारक लिखल / स्पेशल परमिट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1626 : विदेह-सदेह 5 — सन्दीप कुमार साफी: अन्ध विश्वास

४७६. सन्दीप कुमार साफीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अन्ध विश्वास

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७७. “अन्ध विश्वास”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७८. “अन्ध विश्वास”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७९. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) व्यंग्य आ करुण

४८०. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८१. “अन्ध विश्वास”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८२. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८३. “अन्ध विश्वास”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४८४. सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८५. खण्ड 1626क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सन्दीप कुमार साफीक “अन्ध विश्वास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1627 : विदेह-सदेह 5 — जवाहर लाल कश्यप: हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास...

४८६. जवाहर लाल कश्यपक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८७. "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..."क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८८. "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८९. जवाहर लाल कश्यपक "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..." पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य

४९०. जवाहर लाल कश्यपक "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९१. "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९२. जवाहर लाल कश्यपक "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..." रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९३. "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान..."केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४९४. जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवान...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९५. खण्ड 1627क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जवाहर लाल कश्यपक “हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ...” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1628 : विदेह-सदेह 5 — मिहिर झा: १०० टाका

४९६. मिहिर झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) १०० टाका

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९७. “१०० टाका”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९८. “१०० टाका”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९९. मिहिर झाक “१०० टाका” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ व्यंग्य

५००. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०१. “१०० टाका”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०२. मिहिर झाक “१०० टाका” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०३. “१०० टाका”कैँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५०४. मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०५. खण्ड 1628क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1629 : विदेह-सदेह 5 — रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार': अम्लूक चुमौन

५०६. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अम्लूक चुमौन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०७. “अम्लूक चुमौन”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०८. “अम्लूक चुमौन”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५०९. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शान्त

५१०. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५११. “अम्लूक चुमौन”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१२. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१३. “अम्लूक चुमौन”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५१४. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१५. खण्ड 1629क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1630 : विदेह-सदेह 5 — प्रेमचन्द्र पंकज: क्रमश:....

५१६. प्रेमचन्द्र पंकजक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) क्रमश:....

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१७. “क्रमश:....”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१८. “क्रमशः....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१९. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमशः....” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) अद्भुत

५२०. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमशः....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२१. “क्रमशः....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२२. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमशः....” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२३. “क्रमशः....”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५२४. प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमशः....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२५. खण्ड 1630क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमशः....” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1631 : विदेह-सदेह 5 — अखिलेश कुमार मंडल: टीटनेस

५२६. अखिलेश कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) टीटनेस

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२७. "टीटनेस"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२८. "टीटनेस"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२९. अखिलेश कुमार मंडलक "टीटनेस" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) बीभत्स आ करुण

५३०. अखिलेश कुमार मंडलक "टीटनेस" प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३१. "टीटनेस"क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३२. अखिलेश कुमार मंडलक "टीटनेस" रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३३. "टीटनेस"केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५३४. अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३५. खण्ड 1631क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1632 : विदेह-सदेह 5 — मनोज कुमार मंडल: बेमेल बिआह

५३६. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बेमेल बिआह

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३७. “बेमेल बिआह”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३८. “बेमेल बिआह”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३९. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ व्यंग्य

५४०. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४१. “बेमेल बिआह”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४२. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४३. “बेमेल बिआह”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४४. मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४५. खण्ड 1632क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1633 : विदेह-सदेह 5 — सत्यनारायण झा: सुटिया

५४६. सत्यनारायण झाक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सुटिया

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४७. “सुटिया”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४८. “सुटिया”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५४९. सत्यनारायण झाक “सुटिया” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

५५०. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५१. “सुटिया”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५२. सत्यनारायण झाक “सुटिया” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५३. “सुटिया”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५५४. सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५५. खण्ड 1633क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1634 : विदेह-सदेह 5 — पंकज चौधरी 'नवलश्री': ई नोर छै गरीबीक

५५६. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ई नोर छै गरीबीक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५७. “ई नोर छै गरीबीक”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५८. “ई नोर छै गरीबीक”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५९. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण

५६०. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६१. “ई नोर छै गरीबीक”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६२. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६३. “ई नोर छै गरीबीक”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५६४. पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६५. खण्ड 1634क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1635 : विदेह-सदेह 5 — रवि भूषण पाठक: मुक्ति / बिदाइ / एकातबला

५६६. रवि भूषण पाठकक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मुक्ति / बिदाइ / एकातबला

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६७. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६८. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) विहनि कथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५६९. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण आ शान्त

५७०. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७१. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७२. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७३. “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५७४. रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७५. खण्ड 1635क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1636 : विदेह-सदेह 5 — डॉ. तारानन्द वियोगी: विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्न...

५७६. डॉ. तारानन्द वियोगीक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७७. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७८. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) साक्षात्कार (विषय)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७९. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार

५८०. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८१. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार (विषय)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८२. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८३. “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...”कैं विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ साक्षात्कार (विषय)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५८४. डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप...” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८५. खण्ड 1636क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. तारानन्द वियोगीक “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप” प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार (विषय) आ “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1637 : विदेह-सदेह 5 — देवशंकर नवीन: विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

५८६. देवशंकर नवीनक विदेह-सदेह 5मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८७. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८८. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आलोचना निबन्ध

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८९. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ बौद्धिक

५९०. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ बौद्धिक; बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९१. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९२. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९३. “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व”केँ विदेह-सदेह 5क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आलोचना निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५९४. देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि विदेह-सदेह 5क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९५. खण्ड 1637क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) देवशंकर नवीनक “विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व” प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ “शान्त आ बौद्धिक; बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5084 : विदेह-सदेह 5 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)

५९६. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५९७. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५९८. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’कैँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) तेसर किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५९९. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६००. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६०१. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) तेसर किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६०२. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) तेसर किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६०३. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६०४. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) शोध-लेखक रूप तेसर किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६०५. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5085 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ५)

६०६. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६०७. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६०८. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) पाँचम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६०९. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६१०. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६११. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) पाँचम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६१२. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६१३. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६१४. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) उपन्यासक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६१५. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5086 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ५)

६१६. ‘महाभारत (अंक ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६१७. ‘महाभारत (अंक ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६१८. ‘महाभारत (अंक ५)’कैं महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) पाँचम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६१९. ‘महाभारत (अंक ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६२०. ‘महाभारत (अंक ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६२१. ‘महाभारत (अंक ५)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) पाँचम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६२२. ‘महाभारत (अंक ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) पाँचम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६२३. ‘महाभारत (अंक ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६२४. ‘महाभारत (अंक ५)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) महाकाव्यक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६२५. ‘महाभारत (अंक ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5087 : विदेह-सदेह 5 — गजेन्द्र ठाकुर — आर्या/प्लाइवुड (अंश)

६२६. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) दू कथा मिश्रित

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६२७. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) दू कथा मिश्रित

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६२८. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’कैं कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) दू कथा मिश्रित

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६२९. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक दू कथा मिश्रित दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६३०. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) दू कथा मिश्रित

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६३१. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) दू कथा मिश्रित

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६३२. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) दू कथा मिश्रित

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६३३. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) दू कथा मिश्रितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६३४. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) कथाक रूप दू कथा मिश्रित कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६३५. ‘आर्या/प्लाइवुड (अंश)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ दू कथा मिश्रित धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5088 : विदेह-सदेह 5 — ज्योति झा चौधरी — (अंक ५ केर पद्य भाग)

६३६. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) प्रवासी जीवन

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६३७. ‘(अंक ५ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) प्रवासी जीवन

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६३८. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) प्रवासी जीवन

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६३९. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक प्रवासी जीवन दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६४०. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) प्रवासी जीवन

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६४१. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) प्रवासी जीवन

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६४२. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) प्रवासी जीवन

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६४३. '(अंक ५ केर पद्य भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) प्रवासी जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६४४. '(अंक ५ केर पद्य भाग)'मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पद्यक रूप प्रवासी जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६४५. '(अंक ५ केर पद्य भाग)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं प्रवासी जीवन धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5089 : विदेह-सदेह 5 — -- — (अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)

६४६. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६४७. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६४८. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'कैं संस्कृत-शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६४९. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६५०. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६५१. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६५२. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६५३. '(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६५४. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’मे संस्कृत-शिक्षाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६५५. ‘(अंक ५ केर संस्कृत शिक्षा)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5090 : विदेह-सदेह 5 — उमेश कुमार महतो — अरिपन (मधुश्रावणी)

६५६. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६५७. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६५८. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’कैं मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६५९. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६६०. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६६१. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६६२. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६६३. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६६४. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६६५. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5091 : विदेह-सदेह 5 — -- — थाट, वर्ण (भाग ३)

६६६. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६६७. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६६८. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’कैं संगीत शिक्षा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६६९. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६७०. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६७१. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६७२. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६७३. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६७४. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’मे संगीत शिक्षाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६७५. ‘थाट, वर्ण (भाग ३)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5092 : विदेह-सदेह 5 — -- — राजा सलहेस

६७६. ‘राजा सलहेस’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६७७. ‘राजा सलहेस’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६७८. ‘राजा सलहेस’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६७९. ‘राजा सलहेस’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६८०. ‘राजा सलहेस’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६८१. ‘राजा सलहेस’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६८२. ‘राजा सलहेस’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६८३. ‘राजा सलहेस’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६८४. ‘राजा सलहेस’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) बालानां कृतेक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६८५. ‘राजा सलहेस’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5093 : विदेह-सदेह 5 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ४)

६८६. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६८७. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६८८. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’कैं पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६८९. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

६९०. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

६९१. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

६९२. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

६९३. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

६९४. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

६९५. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5094 : विदेह-सदेह 5 — -- — विश्वमनीषा पत्रिका

६९६. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

६९७. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

६९८. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

६९९. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७००. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

७०१. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

७०२. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

७०३. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७०४. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७०५. ‘विश्वमनीषा पत्रिका’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5095 : विदेह-सदेह 5 — -- — VIDEHA MITHILA... (भाग ४)

७०६. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

७०७. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

७०८. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’कैं अंग्रेजी-गद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

७०९. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७१०. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

७११. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

७१२. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

७१३. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७१४. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’मे अंग्रेजी-गद्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७१५. ‘VIDEHA MITHILA... (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5096 : विदेह-सदेह 5 — -- — (मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १

७१६. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) मानक निर्धारण

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

७१७. ‘(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) मानक निर्धारण

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

७१८. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'कैं रचना लेखन रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) मानक निर्धारण

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

७१९. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक मानक निर्धारण दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

७२०. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) मानक निर्धारण

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

७२१. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) मानक निर्धारण

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

७२२. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) मानक निर्धारण

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

७२३. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) मानक निर्धारणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

७२४. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १'मे रचना लेखनक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) रचना लेखनक रूप मानक निर्धारण कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

७२५. '(मैथिली अकादमी लेखन-शैली) भाग १' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं मानक निर्धारण धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय ३ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र — गजेन्द्र ठाकुरक मुख्य आलेखक शीर्षक 'गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र' थिक।

२. (A) सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा — मुन्नाजीक आलेखक शीर्षक 'सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत विहनि कथा' थिक।

३. (A) नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता आदि — ज्योति सुनीत चौधरीक विहनि कथामे नबका पीढ़ी, घर दिसका रस्ता, पानिमे खेती, मैथिल बिआह, हिमदूत सम्मिलित अछि।

४. (A) किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम, प्रदूषण — दुर्गानन्द मंडलक विहनि कथामे किसना मुट्ठी, पोस्टमार्टम आ प्रदूषण सम्मिलित अछि।

५. (A) राम-कथाक समापन — धीरेन्द्र कुमारक विहनि कथाक नाम 'राम-कथाक समापन' थिक।

६. (A) कलियुगक निर्णए — कपिलेश्वर राउतक विहनि कथाक नाम 'कलियुगक निर्णए' थिक।

७. (A) अति-संक्षिप्त बीज-सम कथा — विहनि कथा 'बीज' (सीड) सन अति-संक्षिप्त कथा-रूप थिक, जे थोड़ बजेटमे गहिर भाव कहैत अछि।

८. (B) आह्लादकारी — गजेन्द्र ठाकुर लिखैत छथि जे मैथिली लघुकथामे आएल कथ्य आ शिल्पक विशालता आह्लादकारी अछि।

९. (A) अंक ५१-१०० — विदेह-सदेह ५ विदेहक अंक ५१-१०० सँ विहनि कथाक संकलन थिक।

१०. (A) 978-93-80538-63-1 — विदेह-सदेह ५ क ISBN 978-93-80538-63-1 थिक।

११. (A) १५० टाका — विदेह-सदेह ५ क मूल्य भारतीय रू. १५०/- छल।

१२. (A) २०१२ — विदेह-सदेह ५ क पहिल संस्करण सन् २०१२ मे आएल।

१३. (A) ज्योति सुनीत चौधरी — ज्योति सुनीत चौधरी 'मैथिल बिआह' शीर्षक विहनि कथा लिखलीह।

१४. (B) विहनि अति-संक्षिप्त; लघुकथा कनेक बेसी विस्तृत — विहनि कथा सबसँ संक्षिप्त (बीज-सम) रूप थिक, जखन कि लघुकथा कनेक बेसी विस्तार रखैत अछि।

१५. (A) श्रुति प्रकाशन — विदेह-सदेह ५ क प्रकाशक श्रुति प्रकाशन, दिल्ली थिक।

१६. (A) (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना "(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (ख) शारदानगर" रूपमे देल अछि।

१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८. (C) आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा अछि।

१९. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह सम्पादक" अछि।

२०. (A) विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३. (D) ई पाठ आलोचना निबन्ध आ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५. (B) गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समी..." प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ विहनि कथा आ "विदेह सम्पादक; जायस क्षणिक बोध-सिद्धान्त; चेखव सूक्ष्मतावाद; नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र; विधा-सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६. (A) (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप — सूचकांकमे मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क रचना "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप" रूपमे देल अछि।

२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८. (C) निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार अछि।

२९. (D) विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता — टिप्पणीक पहिल संकेत "विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता" अछि।

३०. (A) विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३१. (B) लेखक मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), विधा गद्य, उप-विधा निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३. (D) ई पाठ निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कारक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५. (B) मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)क "(क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (ख) रेवाज/दरेग/भ..." प्रविष्टि गद्य, निबन्ध आ विहनि कथा आ साक्षात्कार आ "विहनि कथा आन्दोलनक प्रणेता; ग्राम्शी जैविक बुद्धिजीवी; बाख्तिन बहु-स्वरीयता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६. (A) नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत — सूचकांकमे ज्योति सुनीत चौधरीक रचना "नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत" रूपमे देल अछि।

३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३९. (D) जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार — टिप्पणीक पहिल संकेत "जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार" अछि।

४०. (A) जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४१. (B) लेखक ज्योति सुनीत चौधरी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५. (B) ज्योति सुनीत चौधरीक "नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह..." प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "जन्म: ३०.१२.१९७८, बेरमार; लन्दन; करुण आ शान्त आ अद्भुत; स्पिवाक प्रवासी अनुभव; विदेहक वैश्विक लेखक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६. (A) पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी — सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी" रूपमे देल अछि।

४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४९. (D) दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत "दलित" अछि।

५०. (A) दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५१. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५. (B) दुर्गानन्द मंडलक "पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "दलित; बीभत्स आ रौद्र आ करुण; अम्बेडकर पर्यावरण-जाति सम्बन्ध; सामाजिक शव-परीक्षण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६. (A) कलियुगक निर्णए — सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना "कलियुगक निर्णए" रूपमे देल अछि।

५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५९. (D) दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत "दलित" अछि।

६०. (A) दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

६१. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६५. (B) कपिलेश्वर राउतक "कलियुगक निर्णए" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "दलित; रौद्र आ करुण; अम्बेडकर कलियुगकेँ जाति-युग रूपमे पढ़ब" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६. (A) राम-कथाक समापन — सूचकांकमे धीरेश्वर कुमारक रचना "राम-कथाक समापन" रूपमे देल अछि।

६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

६९. (D) शान्त आ अद्भुत — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ अद्भुत" अछि।

७०. (A) शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

७१. (B) लेखक धीरेश्वर कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५. (B) धीरेश्वर कुमारक "राम-कथाक समापन" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "शान्त आ अद्भुत; देरिदा supplement; mythological पुनर्पाठism" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६. (A) बढ़िया गप्प / ठोकर — सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना "बढ़िया गप्प / ठोकर" रूपमे देल अछि।

७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

७९. (D) हास्य आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ करुण" अछि।

८०. (A) हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

८१. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८५. (B) राजदेव मंडलक “बढ़िया गप्प / ठोकर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण; कथा-स्वभाव-विमर्श; ग्राम्शी समुदाय-कथा-वाचन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८६. (A) आत्महत्या / फुसिक फल — सूचकांकमे बेचन ठाकुरक रचना “आत्महत्या / फुसिक फल” रूपमे देल अछि।

८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

८९. (D) भिखारी ठाकुर परम्परा — टिप्पणीक पहिल संकेत “भिखारी ठाकुर परम्परा” अछि।

९०. (A) भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

९१. (B) लेखक बेचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९५. (B) बेचन ठाकुरक “आत्महत्या / फुसिक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “भिखारी ठाकुर परम्परा; करुण आ व्यंग्य; कामू निरर्थकताबोध; लोक-नीति” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९६. (A) पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र — सूचकांकमे राम प्रवेश मंडलक रचना “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” रूपमे देल अछि।

९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

९९. (D) हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य” अछि।

१००. (A) हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१०१. (B) लेखक राम प्रवेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०५. (B) राम प्रवेश मंडलक “पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ करुण आ शान्त आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसी fool; चार-कथा विस्तार” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०६. (A) प्रेम — सूचकांकमे भारत भूषण झाक रचना “प्रेम” रूपमे देल अछि।

१०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१०९. (D) शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार” अछि।

११०. (A) शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१११. (B) लेखक भारत भूषण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११५. (B) भारत भूषण झाक “प्रेम” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शृंगार; एक-शब्द शीर्षक; नव्य-न्याय सामान्य-विशेष सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११६. (A) ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर — सूचकांकमे मानेश्वर मनुजक रचना “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” रूपमे देल अछि।

११७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

११९. (D) सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles — टिप्पणीक पहिल संकेत “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles” अछि।

१२०. (A) सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१२१. (B) लेखक मानेश्वर मनुज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२५. (B) मानेश्वर मनुजक “ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “सर्वनाम आ नारीवादी linguistics titles; वात्सल्य आ करुण आ व्यंग्य; मैथिली शब्द-क्रीड़ा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२६. (A) दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी — सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” रूपमे देल अछि।

१२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१२९. (D) विदेह सह-सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सह-सम्पादक” अछि।

१३०. (A) विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१३१. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३५. (B) उमेश मंडलक “दोस्ती / आधा भगवान / पैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “विदेह सह-सम्पादक; मधुर आ व्यंग्य आ करुण आ शान्त; विदेहक सामूहिक उत्पादन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३६. (A) आनक बड़ाइ — सूचकांकमे डॉ. शेफालिका वर्माक रचना “आनक बड़ाइ” रूपमे देल अछि।

१३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१३९. (D) साहित्य अकादेमी — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी” अछि।

१४०. (A) साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१४१. (B) लेखक डॉ. शेफालिका वर्मा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४५. (B) डॉ. शेफालिका वर्माक “आनक बड़ाइ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “साहित्य अकादेमी; हास्य आ करुण; बूर्द्यू symbolic capital” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४६. (A) थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन — सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” रूपमे देल अछि।

१४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१४९. (D) दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

१५०. (A) दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१५१. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५५. (B) जगदीश प्रसाद मंडलक “थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “दलित; भूमि-अधिकार त्रयी; अम्बेडकर न्याय-साक्ष्य; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५६. (A) बाबूजी लेल — सूचकांकमे रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क रचना “बाबूजी लेल” रूपमे देल अछि।

१५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१५९. (D) वात्सल्य उलट — child-for-father — टिप्पणीक पहिल संकेत “वात्सल्य उलट — child-for-father” अछि।

१६०. (A) वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१६१. (B) लेखक रामकृष्ण मंडल 'छोटू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६५. (B) रामकृष्ण मंडल 'छोटू'क "बाबूजी लेल" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "वात्सल्य उलट — child-for-father; वृद्धावस्था/निर्भरता" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६६. (A) गिरगिट / भारत रत्न — सूचकांकमे रामलोचन ठाकुरक रचना "गिरगिट / भारत रत्न" रूपमे देल अछि।

१६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१६९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ व्यंग्य" अछि।

१७०. (A) हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१७१. (B) लेखक रामलोचन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७५. (B) रामलोचन ठाकुरक "गिरगिट / भारत रत्न" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "हास्य आ व्यंग्य; बाख्तिन उत्सवी उलटबाँसीesque shapeshifter; राजनीतिक व्यंग्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७६. (A) सतबरती — सूचकांकमे परमेश्वर कापड़िक रचना "सतबरती" रूपमे देल अछि।

१७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१७९. (D) नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत "नेपाल" अछि।

१८०. (A) नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१८१. (B) लेखक परमेश्वर कापड़ि, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८५. (B) परमेश्वर कापड़िक "सतबरती" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "नेपाल; शृंगार आ करुण; विवाह-शपथ आलोचना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८६. (A) देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ — सूचकांकमे अमरनाथक रचना "देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ" रूपमे देल अछि।

१८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१८९. (D) मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता — टिप्पणीक पहिल संकेत "मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता" अछि।

१९०. (A) मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकs — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकs” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१९१. (B) लेखक अमरनाथ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९५. (B) अमरनाथक “देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फँफ” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “मैथिली विहनि कथाक प्रारम्भकर्ता; 'क्षणिका' १९७५; चेखव सूक्ष्मतावाद; एक-शब्द शीर्षकs” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९६. (A) चेकिंग / कछमछी / बिसवास — सूचकांकमे चन्द्रेश खरेक रचना “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” रूपमे देल अछि।

१९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

१९९. (D) हास्य आ व्यंग्य आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त” अछि।

२००. (A) हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२०१. (B) लेखक चन्द्रेश खरे, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०५. (B) चन्द्रेश खरेक “चेकिंग / कछमछी / बिसवास” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य आ शान्त; अंग्रेजी-मैथिली कोड-बदलाव; surveillance व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०६. (A) इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर — सूचकांकमे रघुनाथ मुखियाक रचना “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” रूपमे देल अछि।

२०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२०९. (D) रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य” अछि।

२१०. (A) रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२११. (B) लेखक रघुनाथ मुखिया, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१५. (B) रघुनाथ मुखियाक “इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “रौद्र आ करुण आ हास्य आ व्यंग्य; फूको power; climate change व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१६. (A) प्रमाण-पत्र / मनमौजी — सूचकांकमे ऋषि वशिष्ठक रचना “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” रूपमे देल अछि।

२१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२१९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

२२०. (A) हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२२१. (B) लेखक ऋषि वशिष्ठ, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२५. (B) ऋषि वशिष्ठक “प्रमाण-पत्र / मनमौजी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; काफ्का नौकरशाही; प्रमाण-पत्र रूपी अस्तित्व” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२६. (A) फुसि नै बाजू — सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “फुसि नै बाजू” रूपमे देल अछि।

२२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२२९. (D) हास्य आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

२३०. (A) हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२३१. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३५. (B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “फुसि नै बाजू” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; आज्ञार्थक शीर्षक; सामाजिक पाखण्ड” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३६. (A) झीक — सूचकांकमे मिथिलेश कुमार झाक रचना “झीक” रूपमे देल अछि।

२३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२३९. (D) शुद्ध मैथिली शब्द — टिप्पणीक पहिल संकेत “शुद्ध मैथिली शब्द” अछि।

२४०. (A) शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२४१. (B) लेखक मिथिलेश कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४५. (B) मिथिलेश कुमार झाक “झीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शुद्ध मैथिली शब्द; करुण; भाषिक प्रतिरोध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४६. (A) लेटेस्ट — सूचकांकमे सत्येश्वर कुमार झाक रचना “लेटेस्ट” रूपमे देल अछि।

२४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२४९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

२५०. (A) हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२५१. (B) लेखक सत्येश्वर कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५५. (B) सत्येश्वर कुमार झाक “लेटेस्ट” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; मैथिलीमे अंग्रेजी शीर्षक; बाख्तिन बहु-स्वरीयता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५६. (A) गाम आबह — सूचकांकमे नवनीत कुमार झाक रचना “गाम आबह” रूपमे देल अछि।

२५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२५९. (D) शान्त आ वात्सल्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ वात्सल्य” अछि।

२६०. (A) शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२६१. (B) लेखक नवनीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६५. (B) नवनीत कुमार झाक “गाम आबह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ वात्सल्य; प्रवासी अनुभव/प्रवास; आमन्त्रणात्मक आज्ञा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६६. (A) दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत — सूचकांकमे कौशल कुमारक रचना “दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत” रूपमे देल अछि।

२६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२६९. (D) हास्य आ शान्त आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त आ वीर” अछि।

२७०. (A) हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२७१. (B) लेखक कौशल कुमार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७४. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७५. **(B) कौशल कुमारक "दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "हास्य आ शान्त आ वीर; पाखण्डसँ आध्यात्मिकता आ गरिमा धरि कथा-वक्र" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७६. **(A) चेतना** — सूचकांकमे अनमोल झाक रचना "चेतना" रूपमे देल अछि।

२७७. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७८. **(C) विहनि कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२७९. **(D) वीर आ शान्त** — टिप्पणीक पहिल संकेत "वीर आ शान्त" अछि।

२८०. **(A) वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२८१. **(B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८३. **(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८४. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८५. **(B) अनमोल झाक "चेतना" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "वीर आ शान्त; चेतना-बीज रूपक; सामाजिक जागरण" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८६. **(A) मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू** — सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना "मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू" रूपमे देल अछि।

२८७. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८८. **(C) विहनि कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२८९. **(D) करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर** — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर" अछि।

२९०. **(A) करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२९१. **(B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा** — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९२. **(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।** — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९३. **(D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।** — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९४. **(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।** — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९५. **(B) कुमार मनोज कश्यपक "मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "करुण आ रौद्र आ शान्त आ वीर; ग्राम्शीक अधीनस्थ-वर्ग दृष्टि; आकांक्षी युवा" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।** — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९६. **(A) श्री गुरुवै नमः** — सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना "श्री गुरुवै नमः" रूपमे देल अछि।

२९७. **(B) गद्य** — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९८. **(C) विहनि कथा** — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

२९९. **(D) विदेह अनुवाद सम्पादक** — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह अनुवाद सम्पादक" अछि।

३००. **(A) विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना** — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३०१. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०५. (B) विनीत उत्पलक "श्री गुरुवै नमः" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "विदेह अनुवाद सम्पादक; शान्त आ व्यंग्य; संस्कृत-मङ्गलाचरणक विडम्बना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०६. (A) हमरा एकर एक बायोडाटा चाही — सूचकांकमे डॉ. धनाकर ठाकुरक रचना "हमरा एकर एक बायोडाटा चाही" रूपमे देल अछि।

३०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३०९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ व्यंग्य" अछि।

३१०. (A) हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३११. (B) लेखक डॉ. धनाकर ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१५. (B) डॉ. धनाकर ठाकुरक "हमरा एकर एक बायोडाटा चाही" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "हास्य आ व्यंग्य; longest title; काफ्का-बेकेट शैलीक नौकरशाही निरर्थकताबोध" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१६. (A) नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर — सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना "नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर" रूपमे देल अछि।

३१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३१९. (D) विदेह सहायक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह सहायक सम्पादक" अछि।

३२०. (A) विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३२१. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२५. (B) आशीष अनचिन्हारक "नकर / निशान / लक्ष्मी / अन्तर" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "विदेह सहायक सम्पादक; ghazal movement; शान्त आ अद्भुत; देरिदाक भिन्नता-विलम्ब सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२६. (A) नोकरी — सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना "नोकरी" रूपमे देल अछि।

३२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३२९. (D) करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

३३०. (A) करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३३१. (B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३५. (B) सतीश चन्द्र झाक “नोकरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता; रोजगारीकेँ गरिमा रूपमे देखब” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३६. (A) ऊँचका डीह / हेराफेरी — सूचकांकमे भवनाथ झाक रचना “ऊँचका डीह / हेराफेरी” रूपमे देल अछि।

३३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३३९. (D) शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

३४०. (A) शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३४१. (B) लेखक भवनाथ झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४५. (B) भवनाथ झाक “ऊँचका डीह / हेराफेरी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; स्थान-रूपक आ सामाजिक आलोचना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४६. (A) घमण्डक फल — सूचकांकमे नबोनारायण मिश्रक रचना “घमण्डक फल” रूपमे देल अछि।

३४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३४९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

३५०. (A) हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३५१. (B) लेखक नबोनारायण मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५५. (B) नबोनारायण मिश्रक “घमण्डक फल” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; लोक-नीति कथा; कर्म-फल” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५६. (A) परिश्रमक भीख — सूचकांकमे राम विलास साहुक रचना “परिश्रमक भीख” रूपमे देल अछि।

३५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३५९. (D) करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

३६०. (A) करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३६१. (B) लेखक राम विलास साहु, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६५. (B) राम विलास साहुक “परिश्रमक भीख” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; अम्बेडकरक श्रम-गरिमा दृष्टि; श्रम-भीख विरोधाभास” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६६. (A) हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण — सूचकांकमे मुस्नी कामतक रचना “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” रूपमे देल अछि।

३६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३६९. (D) शान्त आ हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ हास्य” अछि।

३७०. (A) शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३७१. (B) लेखक मुस्नी कामत, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७५. (B) मुस्नी कामतक “हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ हास्य; लोक-ज्ञान; करैला-मीठ रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७६. (A) जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी — सूचकांकमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचना “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” रूपमे देल अछि।

३७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३७९. (D) शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ व्यंग्य” अछि।

३८०. (A) शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३८१. (B) लेखक डॉ. शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८५. (B) डॉ. शम्भु कुमार सिंहक “जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “शान्त आ व्यंग्य; मैथिली पंचांग-संवेदना; पर्यावरणीय चेतना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८६. (A) अनरेजिस्टर्ड घुसखोर — सूचकांकमे संजय कुमार मंडलक रचना “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” रूपमे देल अछि।

३८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

३८९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

३९०. (A) हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३९१. (B) लेखक संजय कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९५. (B) संजय कुमार मंडलक “अनरेजिस्टर्ड घुसखोर” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ व्यंग्य; अंग्रेजी-मैथिली मिश्र शीर्षक; भ्रष्टाचार-व्यंग्य” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९६. (A) वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा) — सूचकांकमे डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक रचना “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगानन्द झा)” रूपमे देल अछि।

३९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९८. (C) संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) अछि।

३९९. (D) सदेह ५क विशिष्ट योगदान — टिप्पणीक पहिल संकेत “सदेह ५क विशिष्ट योगदान” अछि।

४००. (A) सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४०१. (B) लेखक डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०३. (D) ई पाठ संस्कृत विहनि कथा (अनूदित)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०५. (B) डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रक “वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् (अनुवाद: योगान...” प्रविष्टि गद्य, संस्कृत विहनि कथा (अनूदित) आ “सदेह ५क विशिष्ट योगदान; संस्कृतसँ मैथिली; बेन्यामिनक अनुवाद-दृष्टि; नव्य-न्यायिक मध्यमार्ग सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४०६. (A) विदेशी बाबू — सूचकांकमे मिथिलेश मंडलक रचना “विदेशी बाबू” रूपमे देल अछि।

४०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४०९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ व्यंग्य” अछि।

४१०. (A) हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४११. (B) लेखक मिथिलेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१५. (B) मिथिलेश मंडलक "विदेशी बाबू" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "हास्य आ व्यंग्य; उत्तर-औपनिवेशिक चिन्ता; विदेशीकेँ आकांक्षा आ समस्या दुनू रूपमे देखब" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१६. (A) सत्संगी / थापड़ — सूचकांकमे प्रदीप बिहारीक रचना "सत्संगी / थापड़" रूपमे देल अछि।

४१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४१९. (D) शान्त आ रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ रौद्र" अछि।

४२०. (A) शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४२१. (B) लेखक प्रदीप बिहारी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२५. (B) प्रदीप बिहारीक "सत्संगी / थापड़" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "शान्त आ रौद्र; आध्यात्मिकता सँ हिंसा धरि विरोध; सामाजिक पाखण्ड" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२६. (A) बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी — सूचकांकमे लक्ष्मी दासक रचना "बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी" रूपमे देल अछि।

४२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४२८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४२९. (D) हास्य आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "हास्य आ व्यंग्य" अछि।

४३०. (A) हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४३१. (B) लेखक लक्ष्मी दास, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४३५. (B) लक्ष्मी दासक "बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "हास्य आ व्यंग्य; चरम मूर्खता; दाढ़ीकेँ संकेत-चिह्न रूपमे पढ़ब" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४३६. (A) इशारा / सरधुआ — सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना "इशारा / सरधुआ" रूपमे देल अछि।

४३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४३९. (D) शान्त आ बीभत्स — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ बीभत्स" अछि।

४४०. (A) शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४४१. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४४५. (B) अमित मिश्रक "इशारा / सरधुआ" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "शान्त आ बीभत्स; अवाक् संचार; पानि-धुँधलापन रूपक" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४४६. (A) मसोमात / रहस्य — सूचकांकमे जगदानन्द झा 'मनु'क रचना "मसोमात / रहस्य" रूपमे देल अछि।

४४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४४९. (D) करुण आ अद्भुत — टिप्पणीक पहिल संकेत "करुण आ अद्भुत" अछि।

४५०. (A) करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४५१. (B) लेखक जगदानन्द झा 'मनु', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५५. (B) जगदानन्द झा 'मनु'क "मसोमात / रहस्य" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "करुण आ अद्भुत; विधवाक सामाजिक बहिष्कार; हिन्दू विधवापन पर अम्बेडकरक दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४५६. (A) सङ्गति / अनकर दुर्गति — सूचकांकमे चन्दन कुमार झाक रचना "सङ्गति / अनकर दुर्गति" रूपमे देल अछि।

४५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४५९. (D) शान्त आ करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ करुण आ व्यंग्य" अछि।

४६०. (A) शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४६१. (B) लेखक चन्दन कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४६५. (B) चन्दन कुमार झाक "सङ्गति / अनकर दुर्गति" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "शान्त आ करुण आ व्यंग्य; सामाजिक जोड़ीकरण; परपीड़ा-सुख व्यंग्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६६. (A) कपारक लिखल / स्पेशल परमिट — सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना "कपारक लिखल / स्पेशल परमिट" रूपमे देल अछि।

४६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४६९. (D) शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ व्यंग्य" अछि।

४७०. (A) शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४७१. (B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४७५. (B) ओमप्रकाश झाक "कपारक लिखल / स्पेशल परमिट" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "शान्त आ व्यंग्य; भाग्य-कथन मुहावरा; नौकरशाही-व्यंग्य" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४७६. (A) अन्ध विश्वास — सूचकांकमे सन्दीप कुमार साफीक रचना "अन्ध विश्वास" रूपमे देल अछि।

४७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४७८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४७९. (D) व्यंग्य आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "व्यंग्य आ करुण" अछि।

४८०. (A) व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४८१. (B) लेखक सन्दीप कुमार साफी, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४८३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४८५. (B) सन्दीप कुमार साफीक "अन्ध विश्वास" प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "व्यंग्य आ करुण; सामाजिक सुधार; अन्धविश्वास-आलोचना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४८६. (A) हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट — सूचकांकमे जवाहर लाल कश्यपक रचना "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट" रूपमे देल अछि।

४८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४८९. (D) वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य" अछि।

४९०. (A) वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४९१. (B) लेखक जवाहर लाल कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४९३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४९५. (B) जवाहर लाल कश्यपक "हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ..." प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ "वात्सल्य आ व्यंग्य आ बीभत्स आ अद्भुत आ हास्य; बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक छवि; पाँच-कथा विस्तार" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४९६. (A) १०० टाका — सूचकांकमे मिहिर झाक रचना "१०० टाका" रूपमे देल अछि।

४९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४९८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

४९९. (D) करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

५००. (A) करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५०१. (B) लेखक मिहिर झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५०३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५०५. (B) मिहिर झाक “१०० टाका” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; नेपाल-भारत dual currency; सीमा-पार पहचान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५०६. (A) अम्लूक चुमौन — सूचकांकमे रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क रचना “अम्लूक चुमौन” रूपमे देल अछि।

५०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५०८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५०९. (D) हास्य आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शान्त” अछि।

५१०. (A) हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५११. (B) लेखक रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५१३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५१५. (B) रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'क “अम्लूक चुमौन” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “हास्य आ शान्त; शुद्ध मैथिली लोक-मुहावरा; मौखिक परम्परा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५१६. (A) क्रमश:.... — सूचकांकमे प्रेमचन्द्र पंकजक रचना “क्रमश:....” रूपमे देल अछि।

५१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५१८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५१९. (D) अद्भुत — टिप्पणीक पहिल संकेत “अद्भुत” अछि।

५२०. (A) अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५२१. (B) लेखक प्रेमचन्द्र पंकज, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५२३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५२५. (B) प्रेमचन्द्र पंकजक “क्रमश:....” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “अद्भुत; त्रुटिबिन्दुकेँ शीर्षक रूपमे राखब; देरिदाक खुला-पाठ दृष्टि; समापन-विरोधी उत्तर-आधुनिकता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५२६. (A) टीटनेस — सूचकांकमे अखिलेश कुमार मंडलक रचना “टीटनेस” रूपमे देल अछि।

५२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५२८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५२९. (D) बीभत्स आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “बीभत्स आ करुण” अछि।

५३०. (A) बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५३१. (B) लेखक अखिलेश कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५३५. (B) अखिलेश कुमार मंडलक “टीटनेस” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “बीभत्स आ करुण; टीटनेसकेँ सामाजिक जड़ता रूपमे पढ़ब; चिकित्सकीय रूपक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५३६. (A) बेमेल बिआह — सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “बेमेल बिआह” रूपमे देल अछि।

५३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५३८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५३९. (D) करुण आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ व्यंग्य” अछि।

५४०. (A) करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५४१. (B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५४३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५४५. (B) मनोज कुमार मंडलक “बेमेल बिआह” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण आ व्यंग्य; व्यवस्थित विवाह पर अम्बेडकरक दृष्टि; जाति-आधारित बेमेलपन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५४६. (A) सुटिया — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “सुटिया” रूपमे देल अछि।

५४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५४८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५४९. (D) करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

५५०. (A) करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५५१. (B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५५३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५५. (B) सत्यनारायण झाक “सुटिया” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; शुद्ध बोली-शब्द; दलित देह-राजनीति; गरीबीक सूखल देह-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५५६. (A) ई नोर छै गरीबीक — सूचकांकमे पंकज चौधरी 'नवलश्री'क रचना “ई नोर छै गरीबीक” रूपमे देल अछि।

५५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५५८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५५९. (D) करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण” अछि।

५६०. (A) करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५६१. (B) लेखक पंकज चौधरी 'नवलश्री', विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५६३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५६५. (B) पंकज चौधरी 'नवलश्री'क “ई नोर छै गरीबीक” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “करुण; वाक्यकेँ शीर्षक रूपमे राखब; मार्क्सीय गरीबी-यथार्थवाद; प्रत्यक्ष राजनीतिक कथन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६६. (A) मुक्ति / बिदाइ / एकातबला — सूचकांकमे रवि भूषण पाठकक रचना “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” रूपमे देल अछि।

५६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५६८. (C) विहनि कथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप विहनि कथा अछि।

५६९. (D) वीर आ करुण आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण आ शान्त” अछि।

५७०. (A) वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५७१. (B) लेखक रवि भूषण पाठक, विधा गद्य, उप-विधा विहनि कथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५७३. (D) ई पाठ विहनि कथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५७५. (B) रवि भूषण पाठकक “मुक्ति / बिदाइ / एकातबला” प्रविष्टि गद्य, विहनि कथा आ “वीर आ करुण आ शान्त; हाइडेगरक अस्तित्ववादी त्रयी; मुक्तिसँ बिदाइ आ एकान्त धरि कथा-वक्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५७६. (A) विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप — सूचकांकमे डॉ. तारानन्द वियोगीक रचना “विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप” रूपमे देल अछि।

५७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५७८. (C) साक्षात्कार (विषय) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप साक्षात्कार (विषय) अछि।

५७९. (D) साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार — टिप्पणीक पहिल संकेत “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार” अछि।

५८०. (A) साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५८१. (B) लेखक डॉ. तारानन्द वियोगी, विधा गद्य, उप-विधा साक्षात्कार (विषय) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५८३. (D) ई पाठ साक्षात्कार (विषय)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५८५. (B) डॉ. तारानन्द वियोगीक "विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर — मुन्नाजीसँ गप-सप" प्रविष्टि गद्य, साक्षात्कार (विषय) आ "साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार; बेन्यामिनक साहित्यिक पाठोत्तर जीवन; सक्रिय विधा-सिद्धान्त" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५८६. (A) विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व — सूचकांकमे देवशंकर नवीनक रचना "विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व" रूपमे देल अछि।

५८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८८. (C) आलोचना निबन्ध — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध अछि।

५८९. (D) शान्त आ बौद्धिक — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ बौद्धिक" अछि।

५९०. (A) शान्त आ बौद्धिक; बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ बौद्धिक; बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५९१. (B) लेखक देवशंकर नवीन, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५९३. (D) ई पाठ आलोचना निबन्धक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५९५. (B) देवशंकर नवीनक "विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व" प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ "शान्त आ बौद्धिक; बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र-राजनीति; नव्य-न्यायिक अवरोध-विश्लेषण; ईमानदार आत्म-आलोचना" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 5क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५९६. (A) तेसर किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ तेसर किस्त सँ जोड़ैत अछि।

५९७. (A) तेसर किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५९८. (A) तेसर किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार तेसर किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

५९९. (A) शीर्षक तेसर किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६००. (A) तेसर किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल तेसर किस्त सँ बनैत अछि।

६०१. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६०२. (A) तेसर किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ तेसर किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६०३. (A) तेसर किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६०४. (A) शोध-लेखक रूप तेसर किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६०५. (A) उत्तरकेँ तेसर किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६०६. (A) पाँचम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

६०७. (A) पाँचम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६०८. (A) पाँचम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

६०९. (A) शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६१०. (A) पाँचम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

६११. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६१२. (A) पाँचम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६१३. (A) पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६१४. (A) **उपन्यासक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६१५. (A) **उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६१६. (A) **पाँचम किस्त** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पाँचम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

६१७. (A) **पाँचम किस्त** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६१८. (A) **पाँचम किस्त** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार पाँचम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

६१९. (A) **शीर्षक पाँचम किस्त दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६२०. (A) **पाँचम किस्त** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पाँचम किस्त सँ बनैत अछि।

६२१. (A) **स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६२२. (A) **पाँचम किस्त** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पाँचम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६२३. (A) **पाँचम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६२४. (A) **महाकाव्यक रूप पाँचम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६२५. (A) **उत्तरकैं पाँचम किस्त धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६२६. (A) **दू कथा मिश्रित** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं दू कथा मिश्रित सँ जोड़ैत अछि।

६२७. (A) **दू कथा मिश्रित** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६२८. (A) **दू कथा मिश्रित** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार दू कथा मिश्रित धरि सीमित रहैत अछि।

६२९. (A) **शीर्षक दू कथा मिश्रित दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६३०. (A) **दू कथा मिश्रित** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल दू कथा मिश्रित सँ बनैत अछि।

६३१. (A) **स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६३२. (A) **दू कथा मिश्रित** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ दू कथा मिश्रितक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६३३. (A) **दू कथा मिश्रितक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६३४. (A) **कथाक रूप दू कथा मिश्रित कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६३५. (A) **उत्तरकैं दू कथा मिश्रित धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६३६. (A) **प्रवासी जीवन** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं प्रवासी जीवन सँ जोड़ैत अछि।

६३७. (A) **प्रवासी जीवन** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६३८. (A) **प्रवासी जीवन** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार प्रवासी जीवन धरि सीमित रहैत अछि।

६३९. (A) **शीर्षक प्रवासी जीवन दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६४०. (A) **प्रवासी जीवन** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल प्रवासी जीवन सँ बनैत अछि।

६४१. (A) **स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६४२. (A) **प्रवासी जीवन** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ प्रवासी जीवनक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६४३. (A) **प्रवासी जीवनक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६४४. (A) **पद्यक रूप प्रवासी जीवन कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६४५. (A) **उत्तरकैं प्रवासी जीवन धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६४६. (A) **धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६४७. (A) **धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६४८. (A) **धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६४९. (A) **शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६५०. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६५१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६५२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६५३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६५४. **(A) संस्कृत-शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६५५. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६५६. **(A) --** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

६५७. **(A) --** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६५८. **(A) --** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

६५९. **(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६६०. **(A) --** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

६६१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६६२. **(A) --** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

६६३. **(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६६४. **(A) मिथिला कलाक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६६५. **(A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६६६. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६६७. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६६८. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६६९. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६७०. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६७१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६७२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६७३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६७४. **(A) संगीत शिक्षाक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६७५. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६७६. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६७७. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६७८. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६७९. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६८०. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६८१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६८२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६८३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६८४. **(A) बालानां कृतेक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६८५. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६८६. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

६८७. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६८८. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

६८९. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

६९०. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

६९१. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

६९२. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

६९३. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

६९४. (A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

६९५. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

६९६. (A) -- — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ -- सँ जोड़ैत अछि।

६९७. (A) -- — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

६९८. (A) -- — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

६९९. (A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

७००. (A) -- — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

७०१. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७०२. (A) -- — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

७०३. (A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

७०४. (A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप -- कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७०५. (A) उत्तरकैँ -- धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

७०६. (A) धारावाहिक — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

७०७. (A) धारावाहिक — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

७०८. (A) धारावाहिक — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

७०९. (A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

७१०. (A) धारावाहिक — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

७११. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७१२. (A) धारावाहिक — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

७१३. (A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

७१४. (A) अंग्रेजी-गद्यक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७१५. (A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

७१६. (A) मानक निर्धारण — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ मानक निर्धारण सँ जोड़ैत अछि।

७१७. (A) मानक निर्धारण — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

७१८. (A) मानक निर्धारण — सुरक्षित पठन स्रोत-सार मानक निर्धारण धरि सीमित रहैत अछि।

७१९. (A) शीर्षक मानक निर्धारण दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

७२०. (A) मानक निर्धारण — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल मानक निर्धारण सँ बनैत अछि।

७२१. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

७२२. **(A) मानक निर्धारण** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ मानक निर्धारणक आधार पर ग्रहणीय अछि।

७२३. **(A) मानक निर्धारणक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

७२४. **(A) रचना लेखनक रूप मानक निर्धारण कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

७२५. **(A) उत्तरकैँ मानक निर्धारण धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

अध्याय ४ : विदेह-सदेह ६ — विस्तृत अध्ययन

खण्ड २ : विदेह-सदेह ६ — लघुकथा (विस्तार)

१. विदेह-सदेह ६ मे मीना झाक लघुकथाक नाम की?

(A) ब्रेस्ट कैंसर
(B) अग्निपुष्पक गुच्छासब
(C) संभावना
(D) कोनो नहि

२. विदेह-सदेह ६ मे रोशन जनकपुरीक लघुकथाक नाम की?

(A) अग्निपुष्पक गुच्छासब
(B) ब्रेस्ट कैंसर
(C) संभावना
(D) कोनो नहि

३. विदेह-सदेह ६ मे महाप्रकाशक लघुकथाक नाम की?

(A) संभावना
(B) ब्रेस्ट कैंसर
(C) उत्ताप
(D) कोनो नहि

४. विदेह-सदेह ६ मे 'मृत्युकेँ टारब' कोन भाषाक अनुवाद थिक?

(A) कोंकणी
(B) तेलुगु
(C) तमिल
(D) बंगाली

५. विदेह-सदेह ६ मे बीनू भाइक लघुकथाक नाम की?

(A) उत्ताप
(B) संभावना
(C) ब्रेस्ट कैंसर
(D) कोनो नहि

६. विदेह-सदेह ६ मे शम्भु कुमार सिंहक लघुकथाक नाम की?

(A) भाए-बहिनक व्यथा कथा
(B) दूधबेचनी
(C) गामक गाछी
(D) कोनो नहि

७. विदेह-सदेह ६ मे दुर्गानन्द मण्डलक लघुकथाक नाम की?

(A) लाल भौजी
(B) ब्रेस्ट कैंसर
(C) उत्ताप
(D) कोनो नहि

८. विदेह-सदेह ६ मे असगर वजाहतक हिन्दी कथाक मैथिली अनुवादक नाम की?

(A) हम हिन्दू छी
(B) ब्रेस्ट कैंसर
(C) संभावना
(D) कोनो नहि

९. विदेह-सदेह ६ मे कुमार मनोज कश्यपक लघुकथाक नाम की?

(A) नोरक दू ठोप

(B) ब्रेस्ट कैंसर

(C) उत्ताप

(D) कोनो नहि

१०. विदेह-सदेह ६ मे कपिलेश्वर राउतक कतेक लघुकथा अछि?

(A) तीन (थरथरी, तरकारी, सलाह)

(B) एक

(C) दस

(D) कोनो नहि

११. विदेह-सदेह ६ मे अनमोल झाक लघुकथाक नाम की?

(A) अबकी बेर फतंग, गामक बताह

(B) ब्रेस्ट कैंसर

(C) संभावना

(D) कोनो नहि

१२. विदेह-सदेह ६ मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लघुकथाक नाम की?

(A) प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री, चंदा

(B) ब्रेस्ट कैंसर

(C) उत्ताप

(D) कोनो नहि

१३. विदेह-सदेह ६ मे सत्यनारायण झाक लघुकथाक नाम की?

(A) रिटायरमेन्ट, पलट

(B) ब्रेस्ट कैंसर

(C) संभावना

(D) कोनो नहि

१४. विदेह-सदेह ६ क सम्पूर्ण लघुकथा-संख्या (मात्र प्रलेखित लेखक-गणनासँ) कोन बहुलता देखबैत अछि?

(A) सीमित (पाँचसँ कम)

(B) बीससँ बेशी रचनाकारक व्यापक भागीदारी

(C) केवल एक रचनाकार

(D) कोनो नहि

१५. विदेह-सदेह ६ क ISBN की?

(A) 978-93-80538-64-8

(B) 978-93-80538-63-1

(C) 978-93-80538-65-5

(D) कोनो नहि

खण्ड ३७ : विदेह-सदेह ६ — रोशन जनकपुरीक लघुकथा (विस्तार)

१६. रोशन जनकपुरीक लघुकथा 'अग्निपुष्पक गुच्छासब' कोन ऐतिहासिक-राजनीतिक सन्दर्भपर आधारित अछि?

(A) नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्ष (जनसेना-शाही सेना युद्ध)

(B) कृषि-समस्या

(C) पारिवारिक कथा

(D) कोनो नहि

१७. लघुकथामे ‘कमरेड कामिनी’ कोन प्रकारक पात्र छथि?

(A) जनसेनाक एक शहीद महिला योद्धा

(B) केवल दर्शक

(C) विदेशी पात्र

(D) कोनो नहि

१८. लघुकथामे ‘रेशबहादुर मगर’ केकर स्मृतिसँ जुड़ल पात्र छथि?

(A) कथा-वाचकक संगी योद्धा (जे युद्धमे शहीद भेलाह)

(B) केवल नाम-मात्र

(C) विदेशी पात्र

(D) कोनो नहि

१९. कथामे युद्धक स्थान (नदीक नाम) की उल्लिखित अछि?

(A) सुखलाहा नदी

(B) कोसी नदी

(C) गंगा नदी

(D) कोनो नहि

२०. कथामे जनसेना दिससँ युद्धमे कतेक क्षति भेल उल्लिखित अछि?

(A) चालीससँ बेसी घाइल, पचीस शहीद

(B) दस घाइल, पाँच शहीद

(C) सय घाइल, पचास शहीद

(D) कोनो नहि

२१. कथाक मूल भाव की देखबैत अछि?

(A) युद्धक मानवीय क्षति आ भावनात्मक त्रासदी

(B) केवल वीरताक गुणगान

(C) हास्य

(D) कोनो नहि

२२. विदेह-सदेह ६ मे एकटा अन्य लघुकथामे ‘मनोरमा’ केकर पत्नी छथि?

(A) सुरेश

(B) रेशबहादुर

(C) कोनो नहि

(D) गजेन्द्र

२३. एहि लघुकथामे सुरेशकेँ की घटना घटैत अछि?

(A) ओ नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि

(B) ओ यात्रापर जाइत छथि

(C) ओ बिमार पड़ैत छथि

(D) कोनो नहि

२४. एहि लघुकथाक सूचना मनोरमाकेँ के दैत छथि?

(A) हुनकर दुनू बेटी (रश्मि आ किरण)

(B) हुनकर पति स्वयं

(C) पड़ोसी

(D) कोनो नहि

२५. विदेह-सदेह ६ क लघुकथा-संकलनमे विषयक विविधता की देखबैत अछि?

(A) युद्ध-त्रासदी सँ घरेलू-पारिवारिक संकट धरि व्यापक रेंज

(B) केवल एक विषय

(C) निरर्थकता

(D) रोक

खण्ड 1638 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर: (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्था...

२६. गजेन्द्र ठाकुरक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७. "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..."क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८. "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..."क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९. गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..." पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सम्पादक

३०. गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१. "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..."क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२. गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..." रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३. "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..."कैँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ आलोचना निबन्ध आ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४. गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुक..." प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५. खण्ड 1638क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशा..." प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ लघुकथा आ "विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1639 : विदेह-सदेह 6 — मीना झा: ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)

३६. मीना झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७. "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)"क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८. "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)"क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९. मीना झाक "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)" पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दरभंगा

४०. मीना झाक "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)" प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४३. “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४४. मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४५. खण्ड 1639क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मीना झाक “ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1640 : विदेह-सदेह 6 — रोशन जनकपुरी: अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)

४६. रोशन जनकपुरीक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४७. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४८. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४९. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जनकपुर, नेपाल

५०. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५१. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक रोशन जनकपुरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५२. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५३. “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

५४. रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५५. खण्ड 1640क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1641 : विदेह-सदेह 6 — महाकाश: संभावना (पृ. २१)

५६. महाकाशक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) संभावना (पृ. २१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५७. “संभावना (पृ. २१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५८. “संभावना (पृ. २१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

५९. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा

६०. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६१. “संभावना (पृ. २१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक महाकाश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६२. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६३. “संभावना (पृ. २१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

६४. महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६५. खण्ड 1641क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1642 : विदेह-सदेह 6 — वसंत भगवंत सावंत: (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)

६६. वसंत भगवंत सावंतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६७. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६८. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

६९. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) कोंकणी original

७०. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७१. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक वसंत भगवंत सावंत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७२. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७३. “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

७४. वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७५. खण्ड 1642क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) आ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1643 : विदेह-सदेह 6 — बीनू भाइ: उद्वाप (पृ. ३४)

७६. बीनू भाइक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) उद्वाप (पृ. ३४)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७७. “उद्वाप (पृ. ३४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७८. “उद्वाप (पृ. ३४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

७९. बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) मैथिली प्रवासी अनुभव

८०. बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८१. “उद्वाप (पृ. ३४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बीनू भाइ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८२. बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८३. “उद्वाप (पृ. ३४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

८४. बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८५. खण्ड 1643क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1644 : विदेह-सदेह 6 — शम्भु कुमार सिंह: भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)

८६. शम्भु कुमार सिंहक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८७. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८८. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

८९. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा

९०. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९१. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९२. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९३. “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

९४. शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९५. खण्ड 1644क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1645 : विदेह-सदेह 6 — दुर्गानन्द मंडल: लाल भौजी (पृ. ४५)

९६. दुर्गानन्द मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) लाल भौजी (पृ. ४५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९७. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९८. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

९९. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित

१००. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित; श्रृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०१. “लाल भौजी (पृ. ४५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०२. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०३. “लाल भौजी (पृ. ४५)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१०४. दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०५. खण्ड 1645क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; श्रृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1646 : विदेह-सदेह 6 — वीरेन्द्र कुमार यादव: हमर समाज (पृ. ४९)

१०६. वीरेन्द्र कुमार यादवक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमर समाज (पृ. ४९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०७. “हमर समाज (पृ. ४९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०८. “हमर समाज (पृ. ४९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१०९. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ओ.बी.सी.

११०. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१११. “हमर समाज (पृ. ४९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११२. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११३. “हमर समाज (पृ. ४९)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

११४. वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११५. खण्ड 1646क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1647 : विदेह-सदेह 6 — उमेश मंडल: अमैआ भार (पृ. ५२)

११६. उमेश मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अमैआ भार (पृ. ५२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११७. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११८. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

११९. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा

१२०. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२१. “अमैआ भार (पृ. ५२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२२. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२३. “अमैआ भार (पृ. ५२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१२४. उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२५. खण्ड 1647क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1648 : विदेह-सदेह 6 — नन्द विलास राय: बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)

१२६. नन्द विलास रायक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२७. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२८. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१२९. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: 02.01.1957, भपटियाही

१३०. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३१. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३२. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३३. “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१३४. नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३५. खण्ड 1648क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1649 : विदेह-सदेह 6 — सुजीत कुमार झा: एकटा अधिकार (पृ. ६२)

१३६. सुजीत कुमार झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) एकटा अधिकार (पृ. ६२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३७. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३८. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१३९. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) वीर आ करुण

१४०. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४१. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४२. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४३. “एकटा अधिकार (पृ. ६२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१४४. सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४५. खण्ड 1649क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1650 : विदेह-सदेह 6 — सन्तोष कुमार मिश्र: मुसीबत (पृ. ६८)

१४६. सन्तोष कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मुसीबत (पृ. ६८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४७. “मुसीबत (पृ. ६८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४८. “मुसीबत (पृ. ६८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१४९. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ हास्य

१५०. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५१. “मुसीबत (पृ. ६८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५२. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५३. “मुसीबत (पृ. ६८)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१५४. सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५५. खण्ड 1650क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1651 : विदेह-सदेह 6 — कामिनी कामायनी: टुटल तारा (पृ. ७१)

१५६. कामिनी कामायनीक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) टुटल तारा (पृ. ७१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५७. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५८. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१५९. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नारी कथाकार

१६०. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६१. “टुटल तारा (पृ. ७१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६२. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६३. “टुटल तारा (पृ. ७१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१६४. कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६५. खण्ड 1651क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1652 : विदेह-सदेह 6 — राज नाथ मिश्र: मस्ती (पृ. ७७)

१६६. राज नाथ मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मस्ती (पृ. ७७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६७. “मस्ती (पृ. ७७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६८. “मस्ती (पृ. ७७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१६९. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य आ शृंगार

१७०. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७१. “मस्ती (पृ. ७७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राज नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७२. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७३. “मस्ती (पृ. ७७)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१७४. राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७५. खण्ड 1652क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1653 : विदेह-सदेह 6 — असगर वजाहत: (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)

१७६. असगर वजाहतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७७. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७८. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१७९. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार

१८०. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८१. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक असगर वजाहत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८२. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८३. “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१८४. असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८५. खण्ड 1653क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) असगर वजाहतक “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) आ “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1654 : विदेह-सदेह 6 — अतुलेश्वर: बसात (पृ. ९०)

१८६. अतुलेश्वरक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बसात (पृ. ९०)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८७. “बसात (पृ. ९०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८८. “बसात (पृ. ९०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१८९. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण

१९०. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९१. “बसात (पृ. ९०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९२. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९३. “बसात (पृ. ९०)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

१९४. अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९५. खण्ड 1654क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अतुलेश्वरक “बसात (पृ. ९०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1655 : विदेह-सदेह 6 — योगेन्द्र पाठक 'वियोगी': देववाणी (पृ. ९४)

१९६. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) देववाणी (पृ. ९४)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९७. “देववाणी (पृ. ९४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९८. “देववाणी (पृ. ९४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

१९९. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य

२००. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्द्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०१. “देववाणी (पृ. ९४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०२. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०३. “देववाणी (पृ. ९४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२०४. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०५. खण्ड 1655क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क “देववाणी (पृ. ९४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्द्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1656 : विदेह-सदेह 6 — कुमार मनोज कश्यप: नोरक दू ठोप (पृ. १०२)

२०६. कुमार मनोज कश्यपक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) नोरक दू ठोप (पृ. १०२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०७. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०८. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२०९. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १९६९, सलेमपुर

२१०. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२११. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१२. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१३. “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२१४. कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१५. खण्ड 1656क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1657 : विदेह-सदेह 6 — सतीश चन्द्र झा: हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)

२१६. सतीश चन्द्र झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१७. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१८. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२१९. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ हास्य

२२०. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२१. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२२. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२३. “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२२४. सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२५. खण्ड 1657क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1658 : विदेह-सदेह 6 — डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्...

२२६. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२७. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२८. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२२९. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ८.०२.१९६७

२३०. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्धू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३१. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३२. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३३. “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२३४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ....” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३५. खण्ड 1658क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्यू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1659 : विदेह-सदेह 6 — सत्यनारायण झा: रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)

२३६. सत्यनारायण झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३७. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३८. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२३९. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शान्त आ करुण आ अद्भुत

२४०. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४१. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४२. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४३. “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२४४. सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४५. खण्ड 1659क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1660 : विदेह-सदेह 6 — बचेश्वर झा: संगित (पृ. १४५)

२४६. बचेश्वर झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) संगित (पृ. १४५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४७. “संगित (पृ. १४५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४८. “संगित (पृ. १४५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२४९. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) शृंगार आ शान्त

२५०. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५१. “संगित (पृ. १४५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५२. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५३. “संगित (पृ. १४५)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२५४. बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५५. खण्ड 1660क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1661 : विदेह-सदेह 6 — कपिलेश्वर राउत: थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४...

२५६. कपिलेश्वर राउतक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५७. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५८. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२५९. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) दलित

२६०. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६१. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६२. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६३. “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२६४. कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६५. खण्ड 1661क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1662 : विदेह-सदेह 6 — मनोज कुमार मंडल: घासवाली (पृ. १५७)

२६६. मनोज कुमार मंडलक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) घासवाली (पृ. १५७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६७. “घासवाली (पृ. १५७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६८. “घासवाली (पृ. १५७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२६९. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण आ वीर

२७०. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७१. “घासवाली (पृ. १५७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७२. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७३. “घासवाली (पृ. १५७)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२७४. मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७५. खण्ड 1662क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1663 : विदेह-सदेह 6 — अनमोल झा: अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१...

२७६. अनमोल झाक विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७७. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७८. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२७९. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १९७०, नरेगाँव

२८०. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८१. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८२. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८३. “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)”कैँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२८४. अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८५. खण्ड 1663क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1664 : विदेह-सदेह 6 — शिव कुमार झा 'टिल्लू': लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ....

२८६. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क विदेह-सदेह 6मे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८७. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८८. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२८९. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” पाठमे कोन आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ११.१२.१९७३

२९०. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९१. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९२. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९३. “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

२९४. शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९५. खण्ड 1664क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1665 : विदेह-सदेह 6 — भात राय भट्ट: रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)

२९६. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९७. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९८. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

२९९. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) नेपाल, महोत्तरी

३००. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वीर

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०१. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक भात राय भट्ट, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०२. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०३. “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३०४. भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०५. खण्ड 1665क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नेपाल, महोत्तरी; करुण+वीर; मार्क्स नेपाल-मधेश विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1666 : विदेह-सदेह 6 — शम्भुनाथ झा 'वत्स': अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे...

३०६. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०७. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०८. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३०९. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) करुण+रौद्र+शृंगार

३१०. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र आ शृंगार

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३११. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१२. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१३. “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)”कैँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३१४. शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१५. खण्ड 1666क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण+रौद्र+शृंगार; कोसी विषय-सूत्र 2008 विषय-सूत्र; बेन्जामिन विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1667 : विदेह-सदेह 6 — किशन कारीगर: दाम-दिगर (पृ. १८९)

३१६. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दाम-दिगर (पृ. १८९)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१७. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१८. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३१९. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य+व्यंग्य

३२०. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) हास्य आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२१. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२२. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२३. “दाम-दिगर (पृ. १८९)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३२४. किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२५. खण्ड 1667क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+व्यंग्य; 'दाम+दिगर' = विषय-सूत्र+विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1668 : विदेह-सदेह 6 — पंकज कुमार प्रियदर्शी: जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)

३२६. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२७. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२८. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३२९. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ०३.०२.१९८५

३३०. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३१. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक पंकज कुमार प्रियदर्शी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३२. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३३. “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३३४. पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३५. खण्ड 1668क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ०३.०२.१९८५; शान्त+शृंगार; वर्ड्सवर्थ 'विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1669 : विदेह-सदेह 6 — नवीन ठाकुर: मिथिला उवाच (पृ. १९६)

३३६. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) मिथिला उवाच (पृ. १९६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३७. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३८. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३३९. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना

३४०. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) वीर आ शान्त

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४१. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक नवीन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४२. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४३. “मिथिला उवाच (पृ. १९६)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३४४. नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४५. खण्ड 1669क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना; वीर+शान्त; 'उवाच' विषय-सूत्र — विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह समानान्तर इतिहास विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1670 : विदेह-सदेह 6 — ओमप्रकाश झा: सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक म...

३४६. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४७. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४८. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३४९. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य

३५०. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ हास्य आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५१. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५२. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५३. “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३५४. ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५५. खण्ड 1670क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1671 : विदेह-सदेह 6 — अमित मिश्र: प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)

३५६. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५७. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५८. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३५९. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) रौद्र+करुण

३६०. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ रौद्र

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६१. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६२. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६३. “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३६४. अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६५. खण्ड 1671क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रौद्र+करुण; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नारीवादी विषाक्त सम्बन्ध-विचार; घरूआ हिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1672 : विदेह-सदेह 6 — राजदेव मंडल: इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)

३६६. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६७. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६८. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३६९. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) हास्य+रौद्र

३७०. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ हास्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७१. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७२. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७३. “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३७४. राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७५. खण्ड 1672क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+रौद्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; ग्राम्शी वर्चस्वी अनुष्ठान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1673 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर: दिल्ली (पृ. २२१)

३७६. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) दिल्ली (पृ. २२१)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७७. “दिल्ली (पृ. २२१)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७८. “दिल्ली (पृ. २२१)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३७९. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सम्पादक

३८०. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ व्यंग्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८१. “दिल्ली (पृ. २२१)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८२. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८३. “दिल्ली (पृ. २२१)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३८४. गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८५. खण्ड 1673क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; करुण+व्यंग्य; बुरदियू प्रतीकात्मक पूँजी; मैथिली प्रवासी मानस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1674 : विदेह-सदेह 6 — जगदीश प्रसाद मंडल: सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)

३८६. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८७. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८८. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३८९. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

३९०. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९१. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९२. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९३. “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

३९४. जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९५. खण्ड 1674क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा; २२ पृष्ठ; मार्क्स+विषय-सूत्र सूद-शोषण; दलित ग्रामीण सामाजिक मानचित्र: विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1675 : विदेह-सदेह 6 — आशीष अनचिन्हार: काटल कथा (पृ. २५०)

३९६. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) काटल कथा (पृ. २५०)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९७. “काटल कथा (पृ. २५०)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९८. “काटल कथा (पृ. २५०)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

३९९. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह सहायक सम्पादक

४००. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) रौद्र आ अद्भुत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०१. “काटल कथा (पृ. २५०)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०२. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०३. “काटल कथा (पृ. २५०)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४०४. आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०५. खण्ड 1675क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; अद्भुत+रौद्र; फूको नियन्त्रण; आत्मसंदर्भी कथा; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1676 : विदेह-सदेह 6 — विनीत उत्पल: बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)

४०६. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०७. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०८. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४०९. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) विदेह अनुवाद सम्पादक

४१०. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) शृंगार आ अद्भुत

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४११. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१२. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१३. “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)”कैं विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४१४. विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकैं एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१५. खण्ड 1676क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शृंगार+अद्भुत; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; फ्रायड विषय-सूत्र; हॉलीवुड → मैथिली सांस्कृतिक संकरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकैं व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 1677 : विदेह-सदेह 6 — कुमार भास्कर: लछिमनीया (पृ. २६४)

४१६. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टिमे उल्लिखित मुख्य रचना कोन अछि?

(A) लछिमनीया (पृ. २६४)

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१७. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क मुख्य विधा कोन अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) गद्य

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१८. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क उप-विधा कोन रूपमे देल गेल अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) लघुकथा

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४१९. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” पाठमे आरम्भिक समालोचनात्मक संकेत की भेटैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) संकलनक अन्तिम रचना

४२०. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6मे कोन भाव-दिशा खोलैत अछि?

(A) करुण आ वात्सल्य

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२१. “लछिमनीया (पृ. २६४)”क अध्ययनमे लेखक-सूचकांक पाठककेँ की मुख्य सूचना दैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) लेखक कुमार भास्कर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२२. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” रचना ककरा कारण साहित्यिक सूचीकरणसँ आगाँ बढ़ि आलोचनात्मक प्रविष्टि बनैत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२३. “लछिमनीया (पृ. २६४)”केँ विदेह-सदेह 6क गद्य-भागमे राखल गेलासँ की स्पष्ट होइत अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(C) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

(D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि।

४२४. कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि विदेह-सदेह 6क अध्ययनमे किएक उपयोगी अछि?

(A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि।

(B) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

४२५. खण्ड 1677क सार की अछि?

(A) ई विकल्प मुख्य पाठ-विचारसँ मेल नहि खाइत अछि।

(B) कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “संकलनक अन्तिम रचना; वात्सल्य+करुण; लक्ष्मी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र. विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

(C) ई निष्कर्ष स्रोत-प्रसंगसँ दूर अछि।

(D) एहि बातक अर्थ उलट लएल गेल अछि।

खण्ड 5097 : विदेह-सदेह 6 — -- — मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)

४२६. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४२७. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४२८. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’कैँ शोध-लेख रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) चारिम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४२९. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४३०. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४३१. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) चारिम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४३२. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) चारिम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४३३. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४३४. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’मे शोध-लेखक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) शोध-लेखक रूप चारिम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४३५. ‘मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध (भाग ४)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ चारिम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5098 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — सहस्रबाढ़नि (अंक ६)

४३६. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) छठम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४३७. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४३८. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’कैं उपन्यास रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) छठम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४३९. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४४०. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४४१. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) छठम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४४२. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४४३. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४४४. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’मे उपन्यासक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) उपन्यासक रूप छठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४४५. ‘सहस्रबाढ़नि (अंक ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं छठम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5099 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — महाभारत (अंक ६)

४४६. ‘महाभारत (अंक ६)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) छठम किस्त

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४४७. ‘महाभारत (अंक ६)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४४८. ‘महाभारत (अंक ६)’कैं महाकाव्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) छठम किस्त

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४४९. ‘महाभारत (अंक ६)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४५०. ‘महाभारत (अंक ६)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४५१. ‘महाभारत (अंक ६)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) छठम किस्त

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४५२. ‘महाभारत (अंक ६)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) छठम किस्त

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४५३. ‘महाभारत (अंक ६)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४५४. ‘महाभारत (अंक ६)’मे महाकाव्यक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) महाकाव्यक रूप छठम किस्त कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४५५. ‘महाभारत (अंक ६)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ छठम किस्त धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5100 : विदेह-सदेह 6 — गजेन्द्र ठाकुर — प्लाइवुड (पूर्ण)

४५६. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) पूर्ण कथा

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४५७. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) पूर्ण कथा

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४५८. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’कैँ कथा रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) पूर्ण कथा

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४५९. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४६०. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) पूर्ण कथा

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४६१. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) पूर्ण कथा

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४६२. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) पूर्ण कथा

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४६३. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४६४. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’मे कथाक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) कथाक रूप पूर्ण कथा कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४६५. ‘प्लाइवुड (पूर्ण)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ पूर्ण कथा धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5101 : विदेह-सदेह 6 — ज्योति झा चौधरी, गजेन्द्र ठाकुर — (अंक ६ केर पद्य भाग)

४६६. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४६७. ‘(अंक ६ केर पद्य भाग)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४६८. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'कैं पद्य रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४६९. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४७०. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४७१. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४७२. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४७३. '(अंक ६ केर पद्य भाग)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४७४. '(अंक ६ केर पद्य भाग)'मे पद्यक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) पद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४७५. '(अंक ६ केर पद्य भाग)' सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5102 : विदेह-सदेह 6 — उमेश कुमार महतो — अरिपन (मधुश्रावणी)

४७६. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) --

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४७७. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) --

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४७८. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’कैं मिथिला कला रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) --

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४७९. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४८०. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) --

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४८१. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) --

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४८२. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) --

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४८३. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४८४. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’मे मिथिला कलाक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४८५. ‘अरिपन (मधुश्रावणी)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5103 : विदेह-सदेह 6 — -- — अपाला आत्रेयी

४८६. ‘अपाला आत्रेयी’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) एकांकी

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४८७. ‘अपाला आत्रेयी’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) एकांकी

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४८८. ‘अपाला आत्रेयी’कैं बालानां कृते रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) एकांकी

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४८९. ‘अपाला आत्रेयी’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

४९०. ‘अपाला आत्रेयी’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) एकांकी

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

४९१. ‘अपाला आत्रेयी’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) एकांकी

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

४९२. ‘अपाला आत्रेयी’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) एकांकी

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

४९३. ‘अपाला आत्रेयी’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

४९४. ‘अपाला आत्रेयी’मे बालानां कृतेक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

४९५. ‘अपाला आत्रेयी’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5104 : विदेह-सदेह 6 — विद्यानन्द झा — पंजी-प्रबंध (भाग ५)

४९६. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

४९७. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

४९८. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’कैं पंजी-प्रबंध रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

४९९. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५००. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५०१. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५०२. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५०३. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५०४. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’मे पंजी-प्रबंधक रूप कथ्य कैँ कोना सहारा दैत अछि?

(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैँ मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५०५. ‘पंजी-प्रबंध (भाग ५)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5105 : विदेह-सदेह 6 — -- — बच्चा झाक जीवनी (भाग १)

५०६. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५०७. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५०८. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’कैं मिथिला आ' संस्कृत रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५०९. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५१०. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५११. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५१२. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५१३. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’ पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५१४. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’मे मिथिला आ' संस्कृतक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५१५. ‘बच्चा झाक जीवनी (भाग १)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

खण्ड 5106 : विदेह-सदेह 6 — -- — (भाग २)

५१६. '(भाग २)'क मुख्य अध्ययन-केन्द्र की अछि?

(A) धारावाहिक

(B) केवल क्रमांक-सूची

(C) बाहरी सजावट

(D) असम्बद्ध सूचना

५१७. '(भाग २)'मे कथ्यक अर्थ-गठन कोन आधार पर स्पष्ट होइत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) कागजक आकार

(C) सिरिफ तिथि

(D) प्रचारात्मक वाक्य

५१८. '(भाग २)'कैं भाषा-प्रौद्योगिकी रूपमे पढ़बाक समय कोन बात ध्यानमे राखब उचित?

(A) धारावाहिक

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन

(C) स्रोत-बाह्य घटना

(D) यादृच्छिक अनुमान

५१९. '(भाग २)'क शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध कोना बुझल जाए?

(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि

(B) शीर्षक कथ्यसँ पूर्ण असम्बद्ध अछि

(C) शीर्षकमे कोनो अर्थ-सूत्र नहि

(D) शीर्षक मात्र सजावट अछि

५२०. '(भाग २)'मे पाठकक संवेदना कोन दिशामे नेने जाएत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) सूचीगणना मात्र

(C) असम्बद्ध हास्य

(D) बाहरी विज्ञापन

५२१. '(भाग २)'क गलत पठन कोन होएत?

(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब

(B) धारावाहिक

(C) स्रोत-सूत्र धरि सीमित रहब

(D) अर्थाधारित पठन करब

५२२. '(भाग २)'मे सामाजिक वा सांस्कृतिक संकेत कोन रूपमे भेटैत अछि?

(A) धारावाहिक

(B) निजी लाभक हिसाब

(C) सैनिक आदेश

(D) खेलक परिणाम

५२३. '(भाग २)' पर अर्थाधारित प्रश्न बनबैत काल कोन तरीका उचित?

(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब

(B) क्रमांकक गिनती पूछब

(C) कागजक आकार पूछब

(D) बाहरी रंग-सज्जा पूछब

५२४. ‘(भाग २)’मे भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप कथ्य कैं कोना सहारा दैत अछि?

(A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि

(B) रूप कथ्यकैं मिटा दैत अछि

(C) रूपक कोनो सम्बन्ध नहि

(D) ई केवल नाम-सूची बनैत अछि

५२५. ‘(भाग २)’ सँ बनल उत्तरमे कल्पना-दोषसँ बचबाक सही उपाय की?

(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब

(B) लेखकक अज्ञात निजी जीवन जोड़ब

(C) स्रोतसँ बाहर घटना गढ़ब

(D) अप्रमाणित निष्कर्ष देब

उत्तरमाला — अध्याय ४ (उत्तर ओ व्याख्या / Answers & Explanations)

१. (A) ब्रेस्ट कैंसर — मीना झाक लघुकथाक नाम ‘ब्रेस्ट कैंसर’ थिक, जे एक संवेदनशील स्वास्थ्य-विषयपर अछि।

२. (A) अग्निपुष्पक गुच्छासब — रोशन जनकपुरीक लघुकथाक नाम ‘अग्निपुष्पक गुच्छासब’ थिक।

३. (A) संभावना — महाप्रकाशक लघुकथाक नाम ‘संभावना’ थिक।

४. (A) कोंकणी — वसंत भगवंत सावंतक कोंकणी कथा ‘मृत्युकैं टारब’ मैथिली अनुवादमे विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

५. (A) उत्ताप — बीनू भाइक लघुकथाक नाम ‘उत्ताप’ थिक।

६. (A) भाए-बहिनक व्यथा कथा — शम्भु कुमार सिंहक लघुकथाक नाम ‘भाए-बहिनक व्यथा कथा’ थिक।

७. (A) लाल भौजी — दुर्गानन्द मण्डलक लघुकथाक नाम ‘लाल भौजी’ थिक।

८. (A) हम हिन्दू छी — असगर वजाहतक हिन्दी कथा ‘हम हिन्दू छी’ क मैथिली अनुवाद विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

९. (A) नोरक दू ठोप — कुमार मनोज कश्यपक लघुकथाक नाम ‘नोरक दू ठोप’ थिक।

१०. (A) तीन (थरथरी, तरकारी, सलाह) — कपिलेश्वर राउतक तीन लघुकथा — थरथरी, तरकारी, सलाह — विदेह-सदेह ६ मे सम्मिलित अछि।

११. (A) अबकी बेर फतंग, गामक बताह — अनमोल झाक लघुकथामे ‘अबकी बेर फतंग’ आ ‘गामक बताह’ सम्मिलित अछि।

१२. (A) प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री, चंदा — डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लघुकथामे ‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’ आ ‘चंदा’ सम्मिलित अछि।

१३. (A) रिटायरमेन्ट, पलट — सत्यनारायण झाक लघुकथामे ‘रिटायरमेन्ट’ आ ‘पलट’ सम्मिलित अछि।

१४. (B) बीससँ बेशी रचनाकारक व्यापक भागीदारी — विदेह-सदेह ६ मे बीससँ बेशी रचनाकारक लघुकथा सम्मिलित अछि, जे आन्दोलनक व्यापक भागीदारी देखबैत अछि।

१५. (A) 978-93-80538-64-8 — विदेह-सदेह ६ क ISBN 978-93-80538-64-8 थिक।

१६. (A) नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्ष (जनसेना-शाही सेना युद्ध) — ‘अग्निपुष्पक गुच्छासब’ नेपालक माओवादी सशस्त्र संघर्षक कालक एक युद्ध-दृश्य चित्रित करैत अछि, जाहिमे जनसेना आ शाही सेनाक बीच युद्धक वर्णन अछि।

१७. (A) जनसेनाक एक शहीद महिला योद्धा — कमरेड कामिनी जनसेनाक एक महिला योद्धा छथि, जे युद्धमे शहीद भऽ जाइत छथि।

१८. (A) कथा-वाचकक संगी योद्धा (जे युद्धमे शहीद भेलाह) — रेशबहादुर मगर कथा-वाचकक संगी योद्धा छथि, जे युद्धमे शहीद भऽ जाइत छथि, आ जिनकर पहाड़ी गाम आ बूढ़ माएक स्मृति कथामे अछि।

१९. (A) सुखलाहा नदी — कथामे युद्धक तैयारी आ प्रशिक्षणक स्थान सुखलाहा नदीक पछयारी जंगल कहल गेल अछि।

२०. (A) चालीससँ बेसी घाइल, पचीस शहीद — कथा अनुसार जनसेना दिस चालीससँ बेसी घाइल भेल आ पचीस गोट शहादत प्राप्त केलक।

२१. (A) युद्धक मानवीय क्षति आ भावनात्मक त्रासदी — कथाक मूल भाव युद्धक मानवीय क्षति, सैनिकक भावनात्मक त्रासदी आ शहीद होइनिहार साथीक स्मृतिपर केन्द्रित अछि, ने कि केवल वीरताक गुणगान।

२२. (A) सुरेश — एकटा अन्य लघुकथामे मनोरमा सुरेशक पत्नी छथि।

२३. (A) ओ नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि — एहि लघुकथामे सुरेश अपन दोकानमे नीन्दक दवाइ खा आत्महत्याक प्रयास करैत छथि, जकर सूचना हुनकर बेटी सभ मनोरमाकेँ दैत छथि।

२४. (A) हुनकर दुनू बेटी (रश्मि आ किरण) — मनोरमाक दुनू बेटी रश्मि आ किरण कानैत-कानैत हुनका सूचना दैत छथि जे पिता आत्महत्याक प्रयास केलनि।

२५. (B) केवल एक विषय — विदेह-सदेह ६ क लघुकथा-संकलन युद्ध-त्रासदी (अग्निपुष्पक गुच्छासब) सँ घरेलू-पारिवारिक संकट (मनोरमाक कथा) धरिक व्यापक विषयगत रेंज देखबैत अछि।

२६. (A) (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१) — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली (पृ. २२१)" रूपमे देल अछि।

२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८. (C) आलोचना निबन्ध आ लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप आलोचना निबन्ध आ लघुकथा अछि।

२९. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत "विदेह सम्पादक" अछि।

३०. (A) विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

३१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा आलोचना निबन्ध आ लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३. (D) ई पाठ आलोचना निबन्ध आ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५. (B) गजेन्द्र ठाकुरक "(क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशा..." प्रविष्टि गद्य, आलोचना निबन्ध आ लघुकथा आ "विदेह सम्पादक; नारीवाद आ अस्तित्ववाद आ मार्क्सवाद आ फ्रायडक सिद्धान्त; दिल्लीकेँ बूर्द्धूक साहित्यिक क्षेत्र रूपमे पढ़ब; नव्य-न्यायिक देश-काल-सीमा दृष्टि" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६. (A) ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११) — सूचकांकमे मीना झाक रचना "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)" रूपमे देल अछि।

३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

३९. (D) दरभंगा — टिप्पणीक पहिल संकेत "दरभंगा" अछि।

४०. (A) दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४१. (B) लेखक मीना झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४५. (B) मीना झाक "ब्रेस्ट कैंसर (पृ. ११)" प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ "दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी १९८०; नेपाल-भारत; करुण आ वीर; सोनटैगक रोग-रूपक दृष्टि; नारीवादी देह-राजनीति; वर्जित विषय" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४६. (A) अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६) — सूचकांकमे रोशन जनकपुरीक रचना "अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)" रूपमे देल अछि।

४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

४९. (D) जनकपुर, नेपाल — टिप्पणीक पहिल संकेत “जनकपुर, नेपाल” अछि।

५०. (A) जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

५१. (B) लेखक रोशन जनकपुरी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

५३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

५५. (B) रोशन जनकपुरीक “अग्निपुष्पक गुच्छासब (पृ. १६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जनकपुर, नेपाल; रौद्र आ वीर; फाननक क्रान्तिकारी आगि; सामूहिक प्रतिरोध; फूल-आगि द्वय-प्रतीक” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

५६. (A) संभावना (पृ. २१) — सूचकांकमे महाकाशक रचना “संभावना (पृ. २१)” रूपमे देल अछि।

५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

५८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

५९. (D) जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा” अछि।

६०. (A) जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

६१. (B) लेखक महाकाश, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

६३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

६५. (B) महाकाशक “संभावना (पृ. २१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा; शान्त आ वीर; ग्राम्शीक इच्छाशक्ति-आशावाद; वंचितमे सम्भावना” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

६६. (A) (कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६) — सूचकांकमे वसंत भगवंत सावंतक रचना “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” रूपमे देल अछि।

६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

६८. (C) अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) अछि।

६९. (D) कोंकणी original — टिप्पणीक पहिल संकेत “कोंकणी original” अछि।

७०. (A) कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

७१. (B) लेखक वसंत भगवंत सावंत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

७३. (D) ई पाठ अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

७५. (B) वसंत भगवंत सावंतक “(कोंकणी) मृत्युक टारब (पृ. २६)” प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (कोंकणी सँ मैथिली) आ “कोंकणी original; करुण आ वीर; बेन्यामिनक अनुवाद-पाठोत्तर जीवन; दुइ उपेक्षित भाषाक सम्बन्ध” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

७६. (A) उद्वाप (पृ. ३४) — सूचकांकमे बीनू भाइक रचना “उद्वाप (पृ. ३४)” रूपमे देल अछि।

७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

७८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

७९. (D) मैथिली प्रवासी अनुभव — टिप्पणीक पहिल संकेत “मैथिली प्रवासी अनुभव” अछि।

८०. (A) मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

८१. (B) लेखक बीनू भाइ, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

८३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

८५. (B) बीनू भाइक “उद्वाप (पृ. ३४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “मैथिली प्रवासी अनुभव; शान्त आ अद्भुत; नव्य-न्याय परिणामवाद; रूपान्तरण-सिद्धान्त” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

८६. (A) भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०) — सूचकांकमे शम्भु कुमार सिंहक रचना “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” रूपमे देल अछि।

८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

८८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

८९. (D) जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा” अछि।

९०. (A) जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

९१. (B) लेखक शम्भु कुमार सिंह, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

९३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

९५. (B) शम्भु कुमार सिंहक “भाए-बहिनक यथा कथा (पृ. ४०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा; वात्सल्य आ करुण; अम्बेडकरक पितृसत्तात्मक परिवार-दृष्टि; सत्य-दावा रूपी विधा-संकेत” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

९६. (A) लाल भौजी (पृ. ४५) — सूचकांकमे दुर्गानन्द मंडलक रचना “लाल भौजी (पृ. ४५)” रूपमे देल अछि।

९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

९८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

९९. (D) दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

१००. (A) दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१०१. (B) लेखक दुर्गानन्द मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१०३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१०५. (B) दुर्गानन्द मंडलक “लाल भौजी (पृ. ४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; शृंगार आ करुण; अम्बेडकर आ नारीवादी दलित women doubly constrained” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१०६. (A) हमर समाज (पृ. ४९) — सूचकांकमे वीरेन्द्र कुमार यादवक रचना “हमर समाज (पृ. ४९)” रूपमे देल अछि।

१०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१०८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१०९. (D) ओ.बी.सी. — टिप्पणीक पहिल संकेत “ओ.बी.सी.” अछि।

११०. (A) ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१११. (B) लेखक वीरेन्द्र कुमार यादव, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

११२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

११३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

११४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

११५. (B) वीरेन्द्र कुमार यादवक “हमर समाज (पृ. ४९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “ओ.बी.सी.; रौद्र आ वीर; ग्राम्शी आ अम्बेडकर ओ.बी.सी. exclusion from 'society' definition” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

११६. (A) अमैआ भार (पृ. ५२) — सूचकांकमे उमेश मंडलक रचना “अमैआ भार (पृ. ५२)” रूपमे देल अछि।

११७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

११८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

११९. (D) जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा” अछि।

१२०. (A) जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१२१. (B) लेखक उमेश मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१२३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१२५. (B) उमेश मंडलक “अमैआ भार (पृ. ५२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा; विदेह सह-सम्पादक; शान्त आ करुण; mango tree as exploitation metaphor; पर्यावरणीय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१२६. (A) बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६) — सूचकांकमे नन्द विलास रायक रचना “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” रूपमे देल अछि।

१२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१२८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१२९. (D) जन्म: 02.01.1957, भपटियाही — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही” अछि।

१३०. (A) जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१३१. (B) लेखक नन्द विलास राय, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१३३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१३५. (B) नन्द विलास रायक “बाबाधाम / ऐना (पृ. ५६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: 02.01.1957, भपटियाही; भक्ति आ शान्त आ अद्भुत; लाकाँ mirror-stage; self-confrontation” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१३६. (A) एकटा अधिकार (पृ. ६२) — सूचकांकमे सुजीत कुमार झाक रचना “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” रूपमे देल अछि।

१३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१३८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१३९. (D) वीर आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “वीर आ करुण” अछि।

१४०. (A) वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१४१. (B) लेखक सुजीत कुमार झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१४३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१४५. (B) सुजीत कुमार झाक “एकटा अधिकार (पृ. ६२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “वीर आ करुण; 'एकटा' सूक्ष्मतावादी demand = devastating commentary; अम्बेडकर rights” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१४६. (A) मुसीबत (पृ. ६८) — सूचकांकमे सन्तोष कुमार मिश्रक रचना “मुसीबत (पृ. ६८)” रूपमे देल अछि।

१४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१४८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१४९. (D) करुण आ हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ हास्य” अछि।

१५०. (A) करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१५१. (B) लेखक सन्तोष कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१५३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१५५. (B) सन्तोष कुमार मिश्रक “मुसीबत (पृ. ६८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ हास्य; Urdu code-switching; बाख्तिनक दृष्टिसँ रोजमर्राक जीवन साहित्यिक विषय” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१५६. (A) टुटल तारा (पृ. ७१) — सूचकांकमे कामिनी कामायनीक रचना “टुटल तारा (पृ. ७१)” रूपमे देल अछि।

१५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१५८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१५९. (D) नारी कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “नारी कथाकार” अछि।

१६०. (A) नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१६१. (B) लेखक कामिनी कामायनी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१६३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१६५. (B) कामिनी कामायनीक “टुटल तारा (पृ. ७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नारी कथाकार; करुण आ शान्त; स्पिवाकक दृष्टिसँ नारीक आकांक्षाक संरचनात्मक टूटन” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१६६. (A) मस्ती (पृ. ७७) — सूचकांकमे राज नाथ मिश्रक रचना “मस्ती (पृ. ७७)” रूपमे देल अछि।

१६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१६८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१६९. (D) हास्य आ शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य आ शृंगार” अछि।

१७०. (A) हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१७१. (B) लेखक राज नाथ मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१७३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१७५. (B) राज नाथ मिश्रक “मस्ती (पृ. ७७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य आ शृंगार; बाख्तिनक उत्सवी उलटबाँसी; सामाजिक श्रेणी-व्यवस्था suspended” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१७६. (A) (हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२) — सूचकांकमे असगर वजाहतक रचना “(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)” रूपमे देल अछि।

१७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१७८. (C) अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) अछि।

१७९. (D) प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार — टिप्पणीक पहिल संकेत “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार” अछि।

१८०. (A) प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१८१. (B) लेखक असगर वजाहत, विधा गद्य, उप-विधा अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१८३. (D) ई पाठ अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली)क रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१८५. (B) असगर वजाहतक "(हिन्दी) हम हिन्दू छी (पृ. ८२)" प्रविष्टि गद्य, अनुदित लघुकथा (हिन्दी सँ मैथिली) आ "प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार; रौद्र आ करुण आ हास्य; फाननक निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन दृष्टि; विदेह secular pluralism" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१८६. (A) बसात (पृ. ९०) — सूचकांकमे अतुलेश्वरक रचना "बसात (पृ. ९०)" रूपमे देल अछि।

१८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१८८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१८९. (D) शान्त आ करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत "शान्त आ करुण" अछि।

१९०. (A) शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

१९१. (B) लेखक अतुलेश्वर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

१९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

१९३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

१९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

१९५. (B) अतुलेश्वरक "बसात (पृ. ९०)" प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ "शान्त आ करुण; 'बसात' = residence आ worth dual meaning; place as determinant of human value" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

१९६. (A) देववाणी (पृ. ९४) — सूचकांकमे योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क रचना "देववाणी (पृ. ९४)" रूपमे देल अछि।

१९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

१९८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

१९९. (D) भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत "भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य" अछि।

२००. (A) भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्द्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ "भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्द्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned" रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२०१. (B) लेखक योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२०३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२०५. (B) योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'क "देववाणी (पृ. ९४)" प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ "भक्ति आ शान्त आ व्यंग्य; बूर्द्यू linguistic capital; संस्कृत 'divine' status questioned" संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२०६. (A) नोरक दू ठोप (पृ. १०२) — सूचकांकमे कुमार मनोज कश्यपक रचना "नोरक दू ठोप (पृ. १०२)" रूपमे देल अछि।

२०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२०८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२०९. (D) जन्म: १९६९, सलेमपुर — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९६९, सलेमपुर” अछि।

२१०. (A) जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२११. (B) लेखक कुमार मनोज कश्यप, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२१३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२१५. (B) कुमार मनोज कश्यपक “नोरक दू ठोप (पृ. १०२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९६९, सलेमपुर; करुण; चेखव understatement; two drops > flood” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२१६. (A) हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६) — सूचकांकमे सतीश चन्द्र झाक रचना “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” रूपमे देल अछि।

२१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२१८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२१९. (D) शान्त आ हास्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ हास्य” अछि।

२२०. (A) शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२२१. (B) लेखक सतीश चन्द्र झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२२३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२२५. (B) सतीश चन्द्र झाक “हमहूँ कह बुझिलैए (पृ. १०६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ हास्य; 'हमहूँ' inclusive belated comprehension” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२२६. (A) कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९) — सूचकांकमे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक रचना “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” रूपमे देल अछि।

२२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२२८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२२९. (D) जन्म: ८.०२.१९६७ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ८.०२.१९६७” अछि।

२३०. (A) जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्यू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्यू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२३१. (B) लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२३३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२३५. (B) डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक “कृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा (पृ. १०९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ८.०२.१९६७; बूर्द्यू Distinction; class-aesthetic contrast; moon-named woman” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। —

ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२३६. (A) रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६) — सूचकांकमे सत्यनारायण झाक रचना “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” रूपमे देल अछि।

२३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२३८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२३९. (D) शान्त आ करुण आ अद्भुत — टिप्पणीक पहिल संकेत “शान्त आ करुण आ अद्भुत” अछि।

२४०. (A) शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२४१. (B) लेखक सत्यनारायण झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२४३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२४५. (B) सत्यनारायण झाक “रिटायरमेंट / पलट (पृ. १३६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शान्त आ करुण आ अद्भुत; हाइडेगर Being-toward-death; 'पलट' = Kehre दार्शनिक turning” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२४६. (A) संगित (पृ. १४५) — सूचकांकमे बचेश्वर झाक रचना “संगित (पृ. १४५)” रूपमे देल अछि।

२४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२४८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२४९. (D) शृंगार आ शान्त — टिप्पणीक पहिल संकेत “शृंगार आ शान्त” अछि।

२५०. (A) शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२५१. (B) लेखक बचेश्वर झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२५३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२५५. (B) बचेश्वर झाक “संगित (पृ. १४५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “शृंगार आ शान्त; नव्य-न्याय सम्बन्ध; music as perfect relation model” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२५६. (A) थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८) — सूचकांकमे कपिलेश्वर राउतक रचना “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” रूपमे देल अछि।

२५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२५८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२५९. (D) दलित — टिप्पणीक पहिल संकेत “दलित” अछि।

२६०. (A) दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२६१. (B) लेखक कपिलेश्वर राउत, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२६३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२६५. (B) कपिलेश्वर राउतक “थरथरी / तरकारी खेती / सलाह (पृ. १४८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “दलित; रौद्र आ करुण आ वीर आ हास्य; अम्बेडकर fear-in-body; economic self-sufficiency” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२६६. (A) घासवाली (पृ. १५७) — सूचकांकमे मनोज कुमार मंडलक रचना “घासवाली (पृ. १५७)” रूपमे देल अछि।

२६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२६८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२६९. (D) करुण आ वीर — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण आ वीर” अछि।

२७०. (A) करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२७१. (B) लेखक मनोज कुमार मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२७३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२७५. (B) मनोज कुमार मंडलक “घासवाली (पृ. १५७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण आ वीर; मार्क्स नारीवादी invisible labour; grass-cutter as foundational worker” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२७६. (A) अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१) — सूचकांकमे अनमोल झाक रचना “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” रूपमे देल अछि।

२७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२७८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२७९. (D) जन्म: १९७०, नरेगाँव — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १९७०, नरेगाँव” अछि।

२८०. (A) जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२८१. (B) लेखक अनमोल झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२८३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२८५. (B) अनमोल झाक “अबकी बेर फतंग / गामक बताह (पृ. १६१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १९७०, नरेगाँव; वीर आ हास्य आ करुण; फूको madness as resistance” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२८६. (A) लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१) — सूचकांकमे शिव कुमार झा 'टिल्लू'क रचना “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” रूपमे देल अछि।

२८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ गद्य रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२८८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप लघुकथा अछि।

२८९. (D) जन्म: ११.१२.१९७३ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ११.१२.१९७३” अछि।

२९०. (A) जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour — समालोचनात्मक टिप्पणी एहि पाठकेँ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

२९१. (B) लेखक शिव कुमार झा 'टिल्लू', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

२९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

२९३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

२९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

२९५. (B) शिव कुमार झा 'टिल्लू'क “लेबर पेन / किज जियत दूर भगाउ (पृ. १७१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ११.१२.१९७३; करुण आ वीर आ रौद्र; labour dual meaning; नारीवादी invisible labour” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

२९६. (A) रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८) — सूचकांकमे भात राय भट्टक रचना “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” रूपमे देल अछि।

२९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

२९८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

२९९. (D) नेपाल, महोत्तरी — टिप्पणीक पहिल संकेत “नेपाल, महोत्तरी” अछि।

३००. (A) करुण आ वीर — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वीर” रूपमे देखाइत अछि।

३०१. (B) लेखक भात राय भट्ट, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३०३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३०५. (B) भात राय भट्टक “रोटी रोजीक खोजी (पृ. १७८)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “नेपाल, महोत्तरी; करुण+वीर; मार्क्स नेपाल-मधेश विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३०६. (A) अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४) — सूचकांकमे शम्भुनाथ झा 'वत्स'क रचना “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” रूपमे देल अछि।

३०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३०८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३०९. (D) करुण+रौद्र+शृंगार — टिप्पणीक पहिल संकेत “करुण+रौद्र+शृंगार” अछि।

३१०. (A) करुण आ रौद्र आ शृंगार — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र आ शृंगार” रूपमे देखाइत अछि।

३११. (B) लेखक शम्भुनाथ झा 'वत्स', विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३१३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३१५. (B) शम्भुनाथ झा 'वत्स'क “अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा (पृ. १८४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “करुण+रौद्र+शृंगार; कोसी विषय-सूत्र 2008 विषय-सूत्र; बेन्जामिन विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३१६. (A) दाम-दिगर (पृ. १८९) — सूचकांकमे किशन कारीगरक रचना “दाम-दिगर (पृ. १८९)” रूपमे देल अछि।

३१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३१८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३१९. (D) हास्य+व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+व्यंग्य” अछि।

३२०. (A) हास्य आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “हास्य आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

३२१. (B) लेखक किशन कारीगर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३२३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३२५. (B) किशन कारीगरक “दाम-दिगर (पृ. १८९)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+व्यंग्य; 'दाम+दिगर' = विषय-सूत्र+विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३२६. (A) जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३) — सूचकांकमे पंकज कुमार प्रियदर्शीक रचना “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” रूपमे देल अछि।

३२७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३२८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३२९. (D) जन्म: ०३.०२.१९८५ — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ०३.०२.१९८५” अछि।

३३०. (A) शृंगार आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३३१. (B) लेखक पंकज कुमार प्रियदर्शी, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३३२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३३३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३३४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३३५. (B) पंकज कुमार प्रियदर्शीक “जीवनक अनमोल क्षण (पृ. १९३)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ०३.०२.१९८५; शान्त+शृंगार; वर्ड्सवर्थ 'विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३३६. (A) मिथिला उवाच (पृ. १९६) — सूचकांकमे नवीन ठाकुरक रचना “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” रूपमे देल अछि।

३३७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३३८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३३९. (D) जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना” अछि।

३४०. (A) वीर आ शान्त — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “वीर आ शान्त” रूपमे देखाइत अछि।

३४१. (B) लेखक नवीन ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३४२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३४३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३४४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३४५. (B) नवीन ठाकुरक “मिथिला उवाच (पृ. १९६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना; वीर+शान्त; 'उवाच' विषय-सूत्र — विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विदेह समानान्तर इतिहास विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३४६. (A) सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००) — सूचकांकमे ओमप्रकाश झाक रचना “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” रूपमे देल अछि।

३४७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३४८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३४९. (D) हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य” अछि।

३५०. (A) करुण आ हास्य आ वात्सल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ हास्य आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

३५१. (B) लेखक ओमप्रकाश झा, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३५२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३५३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३५४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३५५. (B) ओमप्रकाश झाक “सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैय / लोकतंत्रक माने (पृ. २००)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+करुण+वात्सल्य+व्यंग्य; ग्राम्शी विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३५६. (A) प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२) — सूचकांकमे अमित मिश्रक रचना “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” रूपमे देल अछि।

३५७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३५८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३५९. (D) रौद्र+करुण — टिप्पणीक पहिल संकेत “रौद्र+करुण” अछि।

३६०. (A) करुण आ रौद्र — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ रौद्र” रूपमे देखाइत अछि।

३६१. (B) लेखक अमित मिश्र, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३६२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३६३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३६४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३६५. (B) अमित मिश्रक “प्रेम नै जहर छै (पृ. २१२)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “रौद्र+करुण; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; नारीवादी विषाक्त सम्बन्ध-विचार; घरूआ हिंसा” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३६६. (A) इलेक्शनक भूत (पृ. २१६) — सूचकांकमे राजदेव मंडलक रचना “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” रूपमे देल अछि।

३६७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३६८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३६९. (D) हास्य+रौद्र — टिप्पणीक पहिल संकेत “हास्य+रौद्र” अछि।

३७०. (A) रौद्र आ हास्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ हास्य” रूपमे देखाइत अछि।

३७१. (B) लेखक राजदेव मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३७२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३७३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३७४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३७५. (B) राजदेव मंडलक “इलेक्शनक भूत (पृ. २१६)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “हास्य+रौद्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; ग्राम्शी वर्चस्वी अनुष्ठान” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३७६. (A) दिल्ली (पृ. २२१) — सूचकांकमे गजेन्द्र ठाकुरक रचना “दिल्ली (पृ. २२१)” रूपमे देल अछि।

३७७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३७८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३७९. (D) विदेह सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सम्पादक” अछि।

३८०. (A) करुण आ व्यंग्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ व्यंग्य” रूपमे देखाइत अछि।

३८१. (B) लेखक गजेन्द्र ठाकुर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३८२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३८३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३८४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३८५. (B) गजेन्द्र ठाकुरक “दिल्ली (पृ. २२१)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सम्पादक; करुण+व्यंग्य; बुरदियू प्रतीकात्मक पूँजी; मैथिली प्रवासी मानस” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३८६. (A) सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७) — सूचकांकमे जगदीश प्रसाद मंडलक रचना “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” रूपमे देल अछि।

३८७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३८८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३८९. (D) जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा — टिप्पणीक पहिल संकेत “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा” अछि।

३९०. (A) जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा” रूपमे देखाइत अछि।

३९१. (B) लेखक जगदीश प्रसाद मंडल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

३९२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

३९३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

३९४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

३९५. (B) जगदीश प्रसाद मंडलक “सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कज (पृ. २२७)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “जन्म: ५ जुलाई १९४७, बेरमा; २२ पृष्ठ; मार्क्स+विषय-सूत्र सूद-शोषण; दलित ग्रामीण सामाजिक मानचित्र: विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र+विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

३९६. (A) काटल कथा (पृ. २५०) — सूचकांकमे आशीष अनचिन्हारक रचना “काटल कथा (पृ. २५०)” रूपमे देल अछि।

३९७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

३९८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

३९९. (D) विदेह सहायक सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह सहायक सम्पादक” अछि।

४००. (A) रौद्र आ अद्भुत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “रौद्र आ अद्भुत” रूपमे देखाइत अछि।

४०१. (B) लेखक आशीष अनचिन्हार, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४०२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४०३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४०४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४०५. (B) आशीष अनचिन्हारक “काटल कथा (पृ. २५०)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह सहायक सम्पादक; अद्भुत+रौद्र; फूको नियन्त्रण; आत्मसंदर्भी कथा; विदेह विषय-सूत्र” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी

रूपमे खोलैत अछि।

४०६. (A) बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५) — सूचकांकमे विनीत उत्पलक रचना “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” रूपमे देल अछि।

४०७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४०८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

४०९. (D) विदेह अनुवाद सम्पादक — टिप्पणीक पहिल संकेत “विदेह अनुवाद सम्पादक” अछि।

४१०. (A) शृंगार आ अद्भुत — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “शृंगार आ अद्भुत” रूपमे देखाइत अछि।

४११. (B) लेखक विनीत उत्पल, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४१२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४१३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४१४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४१५. (B) विनीत उत्पलक “बेसिक इन्स्टिंक्ट (पृ. २५५)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “विदेह अनुवाद सम्पादक; शृंगार+अद्भुत; विषय-सूत्र विषय-सूत्र; फ्रायड विषय-सूत्र; हॉलीवुड→मैथिली सांस्कृतिक संकरता” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४१६. (A) लछिमनीया (पृ. २६४) — सूचकांकमे कुमार भास्करक रचना “लछिमनीया (पृ. २६४)” रूपमे देल अछि।

४१७. (B) गद्य — विधा-स्तम्भमे एहि प्रविष्टिकेँ “गद्य” रूपमे अंकित कएल गेल अछि।

४१८. (C) लघुकथा — उप-विधा-स्तम्भमे एहि पाठक स्वरूप “लघुकथा” अछि।

४१९. (D) संकलनक अन्तिम रचना — टिप्पणीक पहिल संकेत “संकलनक अन्तिम रचना” अछि।

४२०. (A) करुण आ वात्सल्य — समालोचनात्मक टिप्पणीमे प्रमुख भाव-दिशा “करुण आ वात्सल्य” रूपमे देखाइत अछि।

४२१. (B) लेखक कुमार भास्कर, विधा गद्य, उप-विधा लघुकथा — सूचकांक लेखक, रचना, विधा आ उप-विधाकेँ एक साथ रखैत अछि।

४२२. (C) समालोचनात्मक टिप्पणीक कारण। — टिप्पणी पाठककेँ केवल नाम नहि, अर्थ-दिशा सेहो दैत अछि।

४२३. (D) ई पाठ लघुकथाक रूपमे गद्य-संसारसँ जुड़ल अछि। — विधा आ उप-विधा दुनू एहि पाठक साहित्यिक स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि।

४२४. (A) ओ लेखक, रचना आ आलोचनात्मक संकेतकेँ एक साथ उपलब्ध करबैत अछि। — प्रविष्टि अध्ययनक लेल आधार-सूचना आ अर्थ-सूत्र दुनू दैत अछि।

४२५. (B) कुमार भास्करक “लछिमनीया (पृ. २६४)” प्रविष्टि गद्य, लघुकथा आ “संकलनक अन्तिम रचना; वात्सल्य+करुण; लक्ष्मी विषय-सूत्र; विषय-सूत्र विषय-सूत्र. विषय-सूत्र विषय-सूत्र विषय-सूत्र; विषय-सूत्र नारीवादी” संकेत द्वारा विदेह-सदेह 6क साहित्यिक परिदृश्यकेँ व्यवस्थित करैत अछि। — ई खण्ड एक स्रोत-प्रविष्टिकेँ प्रश्नोत्तरी रूपमे खोलैत अछि।

४२६. (A) चारिम किस्त — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड केँ चारिम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४२७. (A) चारिम किस्त — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४२८. (A) चारिम किस्त — सुरक्षित पठन स्रोत-सार चारिम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४२९. (A) शीर्षक चारिम किस्त दिस संकेत करैत अछि — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४३०. (A) चारिम किस्त — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल चारिम किस्त सँ बनैत अछि।

४३१. (A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४३२. (A) चारिम किस्त — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ चारिम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४३३. (A) चारिम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४३४. (A) शोध-लेखक रूप चारिम किस्त केँ स्पष्ट करैत अछि — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४३५. (A) उत्तरकेँ चारिम किस्त धरि सीमित राखब — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४३६. **(A) छठम किस्त** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं छठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४३७. **(A) छठम किस्त** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४३८. **(A) छठम किस्त** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार छठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४३९. **(A) शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४४०. **(A) छठम किस्त** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल छठम किस्त सँ बनैत अछि।

४४१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४४२. **(A) छठम किस्त** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ छठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४४३. **(A) छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४४४. **(A) उपन्यासक रूप छठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४४५. **(A) उत्तरकैं छठम किस्त धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४४६. **(A) छठम किस्त** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं छठम किस्त सँ जोड़ैत अछि।

४४७. **(A) छठम किस्त** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४४८. **(A) छठम किस्त** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार छठम किस्त धरि सीमित रहैत अछि।

४४९. **(A) शीर्षक छठम किस्त दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४५०. **(A) छठम किस्त** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल छठम किस्त सँ बनैत अछि।

४५१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४५२. **(A) छठम किस्त** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ छठम किस्तक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४५३. **(A) छठम किस्तक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४५४. **(A) महाकाव्यक रूप छठम किस्त कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४५५. **(A) उत्तरकैं छठम किस्त धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४५६. **(A) पूर्ण कथा** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं पूर्ण कथा सँ जोड़ैत अछि।

४५७. **(A) पूर्ण कथा** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४५८. **(A) पूर्ण कथा** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार पूर्ण कथा धरि सीमित रहैत अछि।

४५९. **(A) शीर्षक पूर्ण कथा दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४६०. **(A) पूर्ण कथा** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल पूर्ण कथा सँ बनैत अछि।

४६१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४६२. **(A) पूर्ण कथा** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ पूर्ण कथाक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४६३. **(A) पूर्ण कथाक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४६४. **(A) कथाक रूप पूर्ण कथा कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४६५. **(A) उत्तरकैं पूर्ण कथा धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४६६. **(A) --** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

४६७. **(A) --** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४६८. **(A) --** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

४६९. **(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४७०. **(A) --** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

४७१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४७२. **(A) --** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

४७३. **(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४७४. **(A) पद्यक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४७५. **(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४७६. **(A) --** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं -- सँ जोड़ैत अछि।

४७७. **(A) --** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४७८. **(A) --** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार -- धरि सीमित रहैत अछि।

४७९. **(A) शीर्षक -- दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४८०. **(A) --** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल -- सँ बनैत अछि।

४८१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४८२. **(A) --** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ --क आधार पर ग्रहणीय अछि।

४८३. **(A) --क भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४८४. **(A) मिथिला कलाक रूप -- कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४८५. **(A) उत्तरकैं -- धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४८६. **(A) एकांकी** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं एकांकी सँ जोड़ैत अछि।

४८७. **(A) एकांकी** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४८८. **(A) एकांकी** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार एकांकी धरि सीमित रहैत अछि।

४८९. **(A) शीर्षक एकांकी दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

४९०. **(A) एकांकी** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल एकांकी सँ बनैत अछि।

४९१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

४९२. **(A) एकांकी** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ एकांकीक आधार पर ग्रहणीय अछि।

४९३. **(A) एकांकीक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

४९४. **(A) बालानां कृतेक रूप एकांकी कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

४९५. **(A) उत्तरकैं एकांकी धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

४९६. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

४९७. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

४९८. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

४९९. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५००. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५०१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५०२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५०३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५०४. **(A) पंजी-प्रबंधक रूप धारावाहिक कैं स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५०५. **(A) उत्तरकैं धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५०६. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैं धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५०७. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५०८. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५०९. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५१०. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५११. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५१२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५१३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५१४. **(A) मिथिला आ' संस्कृतक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५१५. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।

५१६. **(A) धारावाहिक** — स्रोत-सूत्र एहि खण्ड कैँ धारावाहिक सँ जोड़ैत अछि।

५१७. **(A) धारावाहिक** — एहि प्रश्नमे उत्तर स्रोतमे देल विषय-सूत्र पर आधारित अछि।

५१८. **(A) धारावाहिक** — सुरक्षित पठन स्रोत-सार धारावाहिक धरि सीमित रहैत अछि।

५१९. **(A) शीर्षक धारावाहिक दिस संकेत करैत अछि** — शीर्षक आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्र सँ पुष्ट होइत अछि।

५२०. **(A) धारावाहिक** — एहि खण्डक भाव-दिशा स्रोतमे देल धारावाहिक सँ बनैत अछि।

५२१. **(A) स्रोत-सारसँ बाहर अप्रमाणित घटना जोड़ब** — एहि quiz मे स्रोत-बाह्य दावा स्वीकार नहि कयल गेल।

५२२. **(A) धारावाहिक** — सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थ धारावाहिकक आधार पर ग्रहणीय अछि।

५२३. **(A) धारावाहिकक भीतरक अर्थ-संरचना पर ध्यान देब** — दोसरा चरणक खननमे अर्थ-संरचना महत्त्वपूर्ण अछि।

५२४. **(A) भाषा-प्रौद्योगिकीक रूप धारावाहिक कैँ स्पष्ट करैत अछि** — रूप आ कथ्यक सम्बन्ध स्रोत-सूत्रक आधार पर देखल गेल अछि।

५२५. **(A) उत्तरकैँ धारावाहिक धरि सीमित राखब** — विश्वसनीय उत्तर स्रोत-सारक सीमा मे रहैत अछि।